संस्मरण

अतीत के पन्नों से

पिता स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव एवं
माता स्व. मनोरमा श्रीवास्तव
के संघर्षमय जीवन का रेखांकन

द्वारा
डा. मृदुल श्रीवास्तव

स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

संस्मरण

अतीत के पन्नों से

पिता स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव
एवं
माता स्व. मनोरमा श्रीवास्तव
के संघर्षमय जीवन का रेखांकन
द्वारा

डा. मृदुल श्रीवास्तव

स्व. श्री नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव फाउण्डेशन के
तत्वावधान में प्रकाशित

श्रीवास्तव परिवार के सदस्यगण

फोटोग्राफ : वर्ष 1935

मेरे पूज्य पिता स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव
एवं माँ स्व. श्रीमती मनोरमा श्रीवास्तव
को सादर समर्पित

प्रकाशक
स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव फाउडेशन
568/9, कैलाशपुरी, आलमबाग
निकट नीलकंठ मन्दिर
लखनऊ–226 005

प्रथम संस्करण
2011
द्वितीय पुनरीक्षित संस्करण
2012

सर्वाधिकार सुरक्षित
लेखक
डा. मृदुल श्रीवास्तव

मुद्रक
आर्मी प्रिंटिंग प्रेस, सदर कैण्ट, लखनऊ

अनुक्रमणिका

	प्राक्कथन	(i)
1.	वेद एवं पुराणों में पिता का महत्व	1
2.	मात्र देह नहीं है हम	9
3.	जीवन परिचय (स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव)	13
4.	परम मित्र स्व. अश्विनी भार्गव के संस्मरण	39
5.	जीवन में माँ की महत्ता	41
6.	जीवन परिचय (स्व. मनोरमा श्रीवास्तव)	49
7.	परिवारिक वृक्ष	69
8.	कैरियर यात्रा	73
9.	स्व. एन.के. श्रीवास्तव फाउण्डेशन के उद्देश्य एवं नियमावली	81
10.	भविष्य की योजनाएं	109
11.	माता एवं पिता की जीवन यात्रा चित्रों के माध्यम से	111

Administrative Training Institute, U.P. Nainital
First Refresher Course of Section Officers of the U.P. Secretariat

August 20, 1977

Sitting (Left to Right) : Sarvsri D.P. Varshney, dy. Director (Law),J.C. Saxena, Jt. Director (Accounts), S.C. Pant, Jt. Director (Revenue), Gyanendra Bahadur, Dy. Director (Revenue), N.S. Mathur, Director, J.K.Dikshit, Section Officer, D.S. Rawat, Jt. Director (Adm.), U.K.Varma, Jt. Director (Law), A.H. Chisti, Jt. Director (Sales Tax), H.C. Joshi, Assistant Director (Law),

Standing : Sarvsri R.K. Rastogi, S.O., N.K. Srivastava, S.O., A.K. Srivastava, S.O., R.S. Srivastava,S.O., Nirmal Chandra, S.O., P.N. Sukul, S.O., Ram Niwas, S.O., G.N. Wanchoo, S.O., K.K. Pant, Assistant Director (Adm.), L.S. Gautam, S.O., S.K. Vama, S.O.

Photo : Ratan Lall Sah, Naini Tal

प्राक्कथन

तुम्हारें पाँवों के नीचे कोई जमीन नहीं,
कमाल है कि फिर भी तुम्हें यकीन नहीं

– दुष्यन्त कुमार

यद्यपि यह पुस्तक लिखना मेरे जीवन का सबसे कठिन कार्य था क्योंकि जब आप अपने पिता को आदर्श मानते हैं और उनके संघर्षों एवं जीवनमूल्यों को रेखांकित करना चाहते हैं तो आपको उनके उन लम्हों को याद करके उनके कष्टों एवं संघर्ष कों महसूस करते हैं और लगता है कि यदि मैं उस जगह पर होता तो शायद जीवन से हार मान गया होता। जब भी पापा जी मुझे अपने अतीत और अपने माता–पिता के बारे में बताते थे तो उनकी आँखें हमेशा अश्रुपूरित हो जाती थीं और आज मुझे एक–एक बात याद करते हुए मेरी आंखें नम हो गई। मुझे अपनी इस गलती को मानने में आज तनिक भी हिचक नहीं है कि हमने हमेशा उनसे उम्मीदें ही की और कभी उनकी मजबूरियों को नहीं समझा। वह मुझसे हमेशा ही कहते थे कि मैं तुम सबके लिए जीवन भर के लिए रोटी, कपड़ा और मकान का इंतजाम करके जाऊँगा क्योंकि मैं नहीं चाहता कि मेरा परिवार उन मुसीबतों से जूझे जिन परेशानियों को मैंने जीवन भर झेला है।

साल 2009 मेरे जीवन का सबसे कठिन साल रहा इसी साल मैंने अपने पूज्य शिक्षक प्रोफेसर एस.पी. श्रीवास्तव और अपने पिता श्री नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव को खोया। दोनों ही लोग मेरे लिए पिता और गुरू दोनों ही थे। आज भी बहुत से लोग यही समझते हैं कि मैं एस.पी. श्रीवास्तव का पुत्र हूँ और मैंने भी हमेशा इस विश्वास को बनाये रखने का प्रयास किया। मेरे पिता और गुरू दोनों ने ही अपने प्राण मेरी मौजूदगी में ही त्यागे और उस पल मुझे एहसास हो रहा था कि मेरे जीवन में यदि प्रोफेसर बलराज चौहान न होते, उनका आर्शीवाद, उनका विश्वास और मुझे लखनऊ वापस लाने का उनका प्रयास न होता तो मैं कभी भी अपने गुरू स्व. एस.पी. श्रीवास्तव और अपने पिता स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव की उनके जीवन के अन्तिम क्षणों में सेवा नहीं कर पाता। मैं और मेरा परिवार आजीवन बलराज सर के आभारी रहेंगे।

मृत्यु एक शाश्वत सत्य है और मनुष्य जीवन नश्वर है यह सभी जानते हैं, पर कुछ ही लोग उसको सार्थक रूप देने में सफल हो पाते है। पैसा और ओहदा इंसान को बड़ा नहीं बनाता, बल्कि उसके कर्म उसको बड़ा बनाते है। सभी के जीवन में बहुत सी परेशानियाँ होती हैं और बहुत से निर्णय ऐसे हो सकते है जिन्हें समाज स्वीकार न करता हो या कैसे जीवन जीना चाहिए ? इस क्लिष्ठ प्रश्न का उत्तर मुझे पिता जी स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव ने अपने लिखे हुए अंतिम लिखित प्रतिलिपि में दिया जिसमें उन्होंने कहा है कि मनुष्य को स्वतन्त्र, आत्मनिर्भर, कर्त्तव्यनिष्ठ सम्मान से जीने वाला होना चाहिए। जहाँ सम्मान नहीं, आदर नहीं उधर मुड़कर भी नहीं देखना चाहिए चाहे वह निकट का अर्थात् पत्नी, पुत्र, बेटी अथवा और कोई निकटस्थ ही क्यों न हो।

इस प्रश्न का उत्तर मेरे गुरू स्व. श्री एस.पी. श्रीवास्तव ने अपने जीवन के आखिरी दिन में यह दिया था कि "बेटा तुम सिर्फ अपनी आत्मा की आवाज़ की सुनना। बहुत से निर्णय, बातें सामाजिक मूल्यों के अनुसार नहीं होती परन्तु हमेशा अपनी आत्मा की आवाज़ सुनकर ही निर्णय लेना और यदि तुमने ऐसा किया तो ईश्वर आपको रास्ते और हिम्मत अपने आप प्रदान करेगा।

अँधेरे में कुछ ज़िन्दगी होम कर दी,
उजाले में अब ये हवन कर रहा हूँ।।

‘मौत ने तो धर दबोचा, एक चीते की तरह,
ज़िन्दगी में जब छुआ, तब फासला रखकर छुआ’

—दुष्यन्त कुमार

स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव एवं स्व. श्रीमती मनोरमा श्रीवास्तव का परिवार

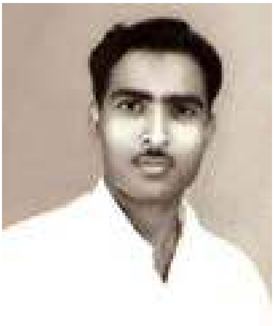
स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

स्व. श्रीमती मनोरमा श्रीवास्तव

ज्येष्ठ पुत्र मनीष श्रीवास्तव

ज्येष्ठ पुत्री ममता श्रीवास्तव

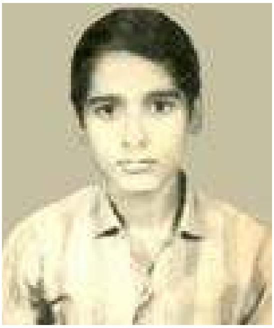
कनिष्ठ पुत्र मृदुल श्रीवास्तव

कनिष्ठ पुत्री नमिता श्रीवास्तव

जीवन में माता–पिता की महत्ता

मातृ पितृ देवो भवः

हम माता–पिता के चरणों में ही अपनी सर्वाधिक श्रद्धा अर्पित करते हैं। माता–पिता में ही देवत्व के प्रथम दर्शन होते है। यह सर्वविदित है कि संसार के समस्त प्राणियों के लिए पितृ एवं मातृ भाव की विशेष महिमा है।

अपाहिज व्यथा को वहन कर रहा हूँ
तुम्हारी कहन थी, कहन कर रहा हूँ।।

जब मैंने ये बातें अपने जीवन में आत्मसात् करने का प्रयास किया है, मुझे लगता है कि हर पल दोनों की आत्मा और दैवी शक्ति मुझे हिम्मत देती है और आगे का मार्ग दिखाती हैं। जिस तरह से बलराज सर ने मुझे एक गुरू, अभिभावक और प्रेरणास्रोत के रूप में हिम्मत दी है तब से मैंने हर पल ईश्वर से यही प्रार्थना की है कि भगवान मुझे इतना आर्शीवाद एवं रास्ता दिखायें कि मैं इस जीवन में कुछ ऐसा करने में सक्षम हो सकूँ कि इन सभी के अच्छे कार्यों और जीवन मूल्यों को जीवन पर्यन्त आगे बढ़ा सकूँ और जिससे आने वाली पीढ़ियाँ भी इन सभी के विचारों एवं संघर्षों से लाभान्वित हो सकें।

मेरी माँ का भी योगदान हमारे जीवन में कम नहीं है, उन्होंने भी अपना जीवन और अपना सर्वस्व हम सब के पालन पोषण में त्याग कर दिया। उनके लिए उनका परिवार ही सब कुछ था। उन्होंने अपने पति अपने बच्चों और अपने पोते–पोतियों–नातियों के भले के लिए अपने अन्तिम क्षणों तक प्रार्थना करती रही। श्री जे.पी. श्रीवास्तव अंकल सही कहते हैं कि माता–पिता की छत्रछाया न रहने पर न तो सर पर छत्र (छत) और न ही तपती धूप में छाया मिल पाती है। दूसरे शब्दों में पिता के न रहने पर सर से आसमान और माता के न रहने पर पाँव के नीचे से जमीन छिन जाती है। इस अपार कष्ट का अनुभव मैं एक अनाथ की भांति प्रतिपल महसूस करता हूँ और बलराज सर हमेशा ही कहते हैं कि –

"बाहर जो देखते हैं समझेंगे किस तरह।
कितने गमों की भीड़ है एक आदमी के साथ।।"

मैं अपने सभी रिश्तेदारों, गुरूजनों एवं मित्रों का आभारी हूँ जिन्होंने मुझे यह किताब लिखने की प्रेरणा दी। मेरा यह छोटा सा प्रण मेरे कुछ रिश्तेदारों एवं गुरूजनों श्रीमती कविता रश्मि, श्री अजय, श्री मिथिलेश मिश्रा, श्री मधुकर विश्वकर्मा, श्रीमती कल्पना दीक्षित, सुश्री कोमल दीक्षित, सुश्री अनिता सिंह, श्रीमती राधा सिंह, सुश्री वर्षा, सुश्री हर्ष, श्री मनु एवं मान, सुश्री आद्या श्रीवास्तव, श्री जे.पी. श्रीवास्तव, श्री लकी सिन्हा, श्री संजय मेहरा, श्री निखिल मौर्य, श्री अविनाश चन्द्रा, श्री शरद शर्मा, श्री राजेश साहनी, श्री विजय कुमार यादव, श्रीमती मिथिलेश श्रीवास्तव, श्री सुरेश श्रीवास्तव, सुश्री शशि, श्रीमती विजय लक्ष्मी पाण्डेय, श्री सुरेश श्रीवास्तव, श्री मुकेश श्रीवास्तव, श्री प्रभात श्रीवास्तव, श्रीमती ममता श्रीवास्तव, श्रीमती नमिता श्रीवास्तव, श्री अजीत कुमार साहू, श्री जवाहर लाल, श्री शरद कुलश्रेष्ठ, श्री ऋषि कुमार, श्री देश दीपक सिंह, श्री अश्विनी भार्गव, सुश्री अंजुला राजवंशी, श्री संदीप गुप्ता, श्री अमित गुप्ता, प्रो. बलराज चौहान, प्रो. ए.एन. सिंह, प्रो. कुमकुम किशोर की वजह से पूर्ण हो पाया है, मैं उन सभी का आभारी हूँ। मैं खासतौर पर अपने सहयोगियों दिनेश यादव, महावीर नान बाबू, कुलदीप, जयप्रकाश एवं मोहित का आभारी हूँ जिन्होंने मेरी माँ के अन्तिम दिनों में बहुत सहायता की। मै अपने परम मित्र डा0 के.ए. पाण्डेय का आभारी हूँ जिन्होंने अपना अमूल्य समय देकर इस किताब को Edit करने में सहायता दी। मैं श्री गौतम बजाज, श्री आर.के. सिंह एवं श्री जावेद अहमद का तहेदिल से शुक्रगुज़ार हूँ जिनके अथक प्रयासों एवं सहयोग से मेरा यह सपना पूर्ण हो सका है।

आशा करता हूँ कि मेरा यह छोटा सा प्रयास सभी को पसन्द आयेगा और मेरी त्रुटियों को एक नादान लेखक समझकर माफ करेंगे। यदि भूलवश उनसे जुड़े किसी का भी नाम मुझसे छूट गया हो तो मैं क्षमाप्रार्थी हूँ।

(डा. मृदुल श्रीवास्तव)

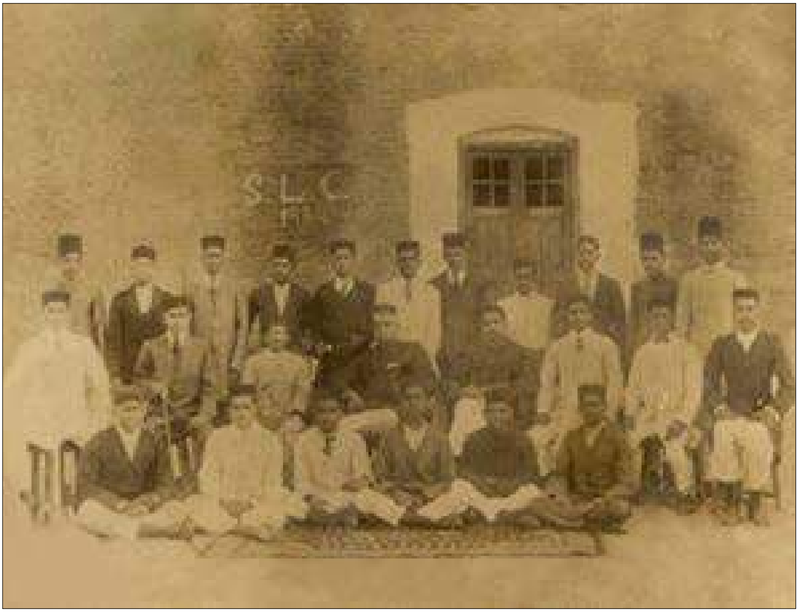

परिवार का एक चित्र (1924)

परबाबा देवीदयाल अपने अन्तिम क्षणों में परदादी के साथ

अध्याय–1

पितृ सेवा

(पं० श्री वेणीराम जी शर्मा गौड़, वेदाचार्य, काव्यतीर्थ)

रक्षणार्थक 'पा' धातु के आगे 'नप्तृनेष्ट्रत्वष्टृहोतृ0' इत्यादि औणादिक सूत्र से 'तृच्' प्रत्यय लगाने तथा आकार को 'इत्व' का निपातन करने 'पितृ' शब्द की निष्पत्ति होती है। अनन्तर 'पितृ' शब्द से प्रातिपदिक संज्ञा करने पर 'सु' विभक्ति आती है, पश्चात् 'अनङ्.' और 'दीर्घ' करने पर 'पिता' रूप बनता है।

अब 'पिता' शब्द के निर्वचन–सम्बन्धी कुछ वचनों[1] का भावार्थ दिया जा रहा है–

'जो धर्म की शिक्षा देता हुआ अधर्म से निवृत्त करे, जो विद्या पढ़ाये तथा लोकव्यवहार में कुशल बनाये, जो सुख–साधनों को उपस्थित करे तथा पुत्र की गलती से किये हुए अपराधों को क्षमा करे, जो अपनी पैदा की हुई समस्त सम्पत्ति पुत्र को दे, जो अपने पुत्र द्वारा दी हुई जलांजलि को ग्रहण करे, जो उत्तम सन्तान उत्पन्न करने के लिये अपनी धर्मपत्नी से समागम करे, जो अपनी सन्तान की रक्षा के लिये भगवान् से प्रार्थना करे, जो अच्छे कार्यों में प्रेरित करे, जो पुत्र द्वारा की गयी सेवा को स्वीकार करे, जो पतन के गर्त में गिराने वाले समस्त लोकविरूद्ध अवगुणों का पान कर अपने पुत्र से अनुराग (प्रेम) करे, जो दोषों से तथा शत्रुओं से बचाये, जो नौकर–चाकर आदि के द्वारा पुत्र की रक्षा का प्रबन्ध करे, उसे 'पिता' कहते हैं।'

पुराणों के आचार्य श्रीव्यासजी ने ब्रह्मवैवर्तपुराण में क्रमशः सात और पाँच प्रकार के 'पिता' का उल्लेख किया है–

कन्यादातान्नदाता च ज्ञानदाताभयप्रदः।
जन्मदो मन्त्रदो ज्येष्ठभ्राता च पितरः स्मृतः।।[2]

(कृष्णजन्मखण्ड 35 ।57)

---

1. (1) पाति धर्मान् बोधयति–शिक्षयति चाधर्मान्निवर्तयति पुत्रमिति पिता। (2) पाति पाठयति विद्यां व्यञ्जयति लौकिकव्यवहारानिति पिता। (3) पाति क्षमतेऽपत्यकृतानपराधानकलय्यसुखसाधना नीतिपिता। (4) पाति ददाति स्वोपार्जितधनधान्यादीति यः स पिता। (5) पाति गृहणति सदपत्यप्रत्तजलाञ्जल्यादिकमिति पिता। (6) पाति गच्छति सदपत्योत्पादनाय स्वदारानिति पिता। (7) पाति प्रार्थयते भगवन्त। स्वापत्यरक्षणाय यः स पिता। (8) पाति प्रयोजयति सत्कार्येषु यः स पिता। (9) पाति लभतेऽपत्यकृतां शुश्रूषामिति पिता। (10) पाति पिबति सकलावगुणरसान् पतनकारिणी लोकविद्विष्टान् स्वपत्यकृतान् यः स पिता। (11) पाति रक्षति दोषेभ्यः शत्रुभ्यो वेति पिता। (12) पाति रक्षयतीति पिता।
2. कन्या देने वाला (श्वशुर), भरण–पोषण करने वाला, ज्ञान देने वाला, आपत्ति से उबारने वाला, जन्म देने वाला, मन्त्र देने वाला और बड़ा भाई–ये सात प्रकार के पिता शास्त्रों में कहे गये हैं।

बचपन में नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव (मध्य) अपने पिता (बायें) और दादी के साथ

अन्नदाता भयत्राता पत्नीतातस्तथैव च।

विद्यादाता जन्मदाता पञ्चैते पितरो नृणाम्।।

(ब्रह्मखण्ड 10। 153)

उशनः संहिता में सात प्रकार के पिता बतलाये गये हैं।

चाणक्य नीति में पाँच प्रकार के 'पिता' का उल्लेख मिलता है। यथा –

जनिता चोपनेता च यस्तं विद्यां प्रयच्छति।

अन्नदाता भयत्राता पञ्चैते पितरः स्मृताः।।[3]

(5।22)

उपर्युक्त पिताओं में शास्त्रज्ञों ने जन्म देने वाले पिता को ही सबसे श्रेष्ठ और पूज्य बतलाया है। धर्मशास्त्रादि सद्ग्रन्थों का सिद्धान्त तो यह है कि–

'सर्वेषामापि पितृणां जन्मदाता परो मतः।'

'दुर्लभो मानुषो देहः' के अनुसार मानव–देह अत्यन्त दुर्लभ है, उस अप्राप्य शरीर को प्रदान करने का समस्त श्रेय केवल 'पिता' को ही है। पिता के ही कृपा–कटाक्ष से प्राणी मानव–शरीर द्वारा संसार में अवतीर्ण होकर कल्याण–साधन के योग्य बनता है। अतः संसार में पिता से बढ़कर पुत्र के लिये और कोई मान्य नहीं है। जैसा कि ब्रह्मवैवर्त पुराण के गणपति खण्ड में स्पष्ट कहा है–

मान्यः पूज्यश्च सर्वेभ्यः सर्वेषां जनको भवेत्।

अहो यस्य प्रसादेन सर्वान् पश्यति मानवः।।

जनको जन्मदानाच्च रक्षणाच्च पिता नृणाम्।

ततो विस्तारकरणात् कलया स प्रजापतिः।।

(44।59–60)

जिस पिता के प्रसाद से मनुष्य इहलोक तथा परलोक के समस्त सुखों का भाजन बन जाता है, वह सर्वथा सबका पूजनीय होता है। जन्म देने से पिता की 'जनक' संज्ञा, रक्षा करने से 'पिता' संज्ञा तथा सृष्टि का विस्तार करने के कारण एक आंश से 'प्रजापजति' संज्ञा होती है।

3. जन्मदाता, गायत्री का उपदेश देने वाला, विद्या पढ़ाने वाला, भरण–पोषण करने वाला और विपत्ति से रक्षा करने वाला–ये पाँच प्रकार के पिता शास्त्रों में कहे गये हैं।

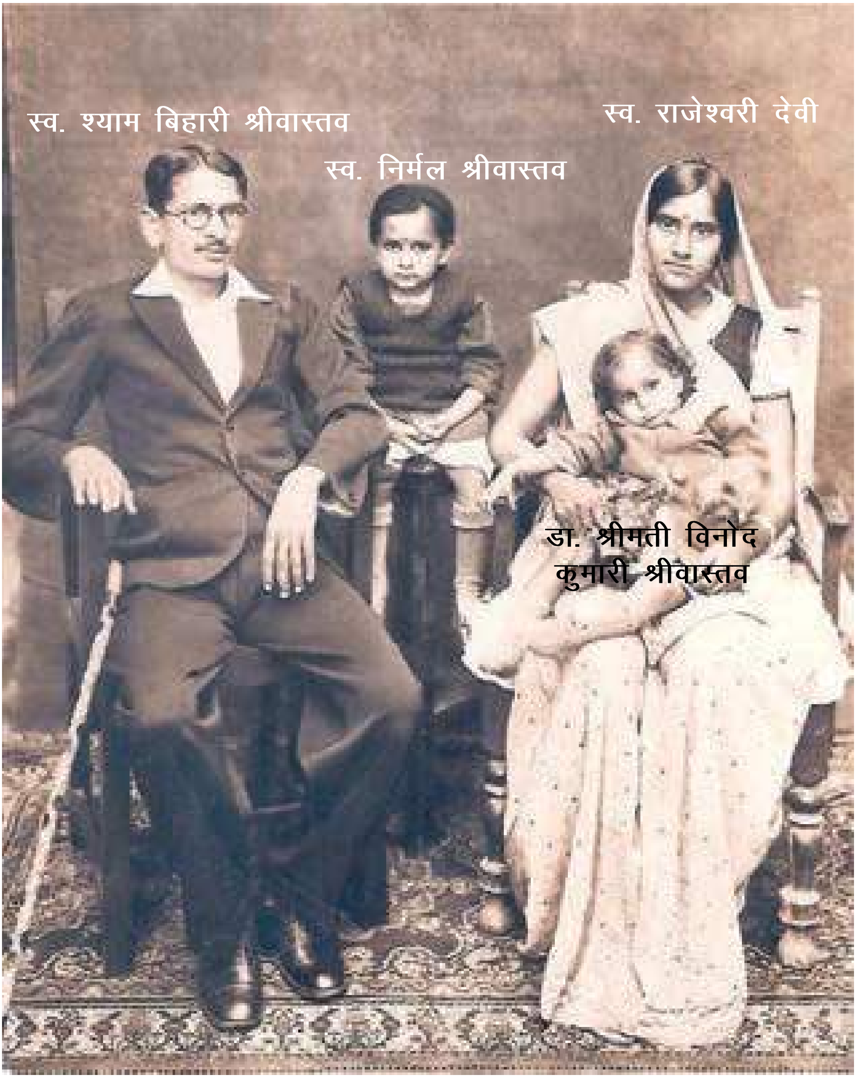

स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव की बुआ, फूफा जी, चचेरी बहनें निर्मल एवं विनोद

इस संसार में बन्धु–बान्धव, मित्र आदि जितने भी लोग हैं, वे अपने से अधिक अन्य किसी मनुष्य को उन्नतिशाली देखना–सुनना नहीं चाहते; किंतु इस स्वाभाविक इच्छा का अभाव सिर्फ एक 'पिता' कहलाने वाले व्यक्ति विशेष में ही पाया जाता है, जो सर्वदा अपने पुत्र को अपने से सर्वतोभावेन उन्नत देखना चाहता है। इसीलिये 'पुत्रादिच्छेत् पराजयम्' कहा गया है। प्रत्येक पिता अपनी–अपनी सन्तान के लिये अनेक प्रकार के कष्ट सहन करता है, पद–पद पर लोगों की जी–हुजुरी करता है, अर्थात् अपने पुत्र को सुयोग्य बनाने के लिये यथाशक्ति मानवसाध्य कोई बात उठा नहीं रखता है। अधिक क्या, वह अपने पुत्र के सुख–दुःख में ही अपना सुख–दुःख समझता है। अतः निष्कर्ष यह निकला कि पुत्र के लिये अहैतुक कल्याण चाहने वाला पिता से बढ़कर और कोई नहीं है। अतः पुत्र अपने पिता से जन्म–जन्मान्तर में भी कदापि उऋण नहीं हो सकता अर्थात् पुत्र द्वारा पिता के उपकारों का बदला कभी नहीं चुकाया जा सकता। यदि कुछ हो सकता है तो इतना ही कि वह अपने पिता की श्रद्धा–भक्तिपूर्वक जीवनपर्यन्त सेवा–शुश्रूष करता रहे। पितृसेवा का महत्व पद्मपुराण के भूमिखण्ड (63।13)– में इस प्रकार लिखा है –

मखानामेव सर्वेषां यत् फलं प्राप्यते बुधैः।

तत् फलं प्राप्यते पुत्रैः पितृः शुश्रूषणादपि।।[4]

और भी–

देवास्तस्यापि तुष्यन्ति ऋषयः पुण्यवत्सलाः।

त्रयो लोकाश्च तुष्यन्ति पितृः शुश्रूष्णादिह।।[5]

(पद्मपु0 भूमिख0 62।73)

पुत्र के लिये पिता सर्वस्व है। अर्थात् वही धर्म, कर्म, स्वर्ग, तीर्थ, जप, तप, पूजा–पाठ आदि है; उससे बढ़कर और कोई देवता नहीं है। लिखा भी है –

पिता धर्मः पिता स्वर्गः पित हि परमं तपः।

पितरि प्रीतिमापन्ने प्रीयन्ते सर्वदेवतः।।

और भी –

नास्ति तातसमो देवो नास्ति तातसमो गुरुः।

नास्ति तातसमो बन्धुर्नास्ति तातसमः क्वचित्।।

---

4. विज्ञ लोगों को सब प्रकार के यज्ञों का जो भी फल प्राप्त होता है, वही फल पुत्रों को पिता की सेवा से मिल जाता है।

5. पिता की सेवा से देवता, ऋषि तथा तीनों लोगों की प्रसन्नता प्राप्त होती है।

स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

स्व. श्रीमती मनोरमा श्रीवास्तव

ससुर स्व. मदन गोपाल श्रीवास्तव

तथा अन्यान्य धर्मग्रन्थों में –

नास्ति पितृसमो गुरुः। (उशनः संहिता 1।35)

न च मित्रं पितुः परम्। (ब्र0वै0 ब्रह्मखण्ड 11।19)

मातापित्रोः परं तीर्थम्। (व्याससंहिता 4।12)

पिता देवो जनार्दनः। (चाणक्यनीति 10।14)

पितृदेवो भव। (तैत्ति0 उव0 1।11।2)

जिस पिता ने जन्म प्रदान कर हमें मनुष्य बनाया, जिसने सत्–शिक्षा देकर लोकव्यवहार में कुशल बनाया, जिसने तन–मन–धन से लालन–पालन किया, जिसने सुयोग्य बनाने के लिये यथाशक्ति कोई कर्तव्य नहीं छोड़ा, आज हम उसकी अहैतुकी कृपा के बल से सुयोग्य बन जाने पर उसके उपकारों को भूल बैठे, उससे विद्वेष करने लग गये, उससे बोलने–चालने तक का नाता तोड़ चुके– इससे बढ़कर हमारे लिये दुःख और शोक की बात क्या होगी।

जिस समय इस पवित्र भारत भूमि में पितृभक्त बालक विराजमान थे, उस समय यह देश सब प्रकार के सुख–वैभव से समृद्ध था और समस्त प्राणी सुख–शान्ति से जीवन–यापन करते थे। अब भी पितृभक्ति एवं पितृसेवा के प्रभाव से भावी सन्तान सदाचारी और पितृभक्त हो सकती है। पितृभक्त बालकों से देश का सदा कल्याण होता रहा है और होता रहेगा।

प्राचीन इतिहासों को देखिये–भगवान् रामचन्द्र, पितामह भीष्म और वीरवर परशुराम–जैसे अनेक पितृभक्त पुत्र उत्पन्न हो चुके हैं, जिनकी अटल कीर्ति आज भी अजर–अमर है। इसी प्रकार अनेक ऋषि–मुनि, राजा–महराजाओं की पितृभक्ति प्रसिद्ध है, जिससे हमें भी शिक्षा ग्रहण करनी चाहिये।

आज भी ऐसे अनेक पितृभक्त विद्यमान हैं, जो पितृसेवा द्वारा आध्यात्मिक, आधिदैविक एवं आधिभौतिक उन्नति प्राप्त कर रहे हैं। अतएव हमें भी अपने परमाराध्य पितृदेव की सेवा द्वारा अपने सर्वविध कल्याण का साधन सुगम करना चाहिये।

'कल्याण' पुस्तक से आभार सहित

स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव, मृदुल श्रीवास्तव,
ममता श्रीवास्तवनमिता श्रीवास्तव एवं मनोरमा श्रीवास्तव

स्व. श्रीमती मनोरमा श्रीवास्तव एवं पुत्री ममता श्रीवास्तव

पुत्र मनीष श्रीवास्तव एवं पुत्री ममता श्रीवास्तव

अध्याय–2

मात्र देह नहीं हम

जब तक हम यह नहीं समझ लेंगे कि हम देह से अलग है, तब तक जालिम लोग हम पर जुल्म करते रहेंगे। हमें गुलाम बनाते रहेंगे। हमें गुलाम बनाते रहेंगे। हमें बेहाल कर डालेंगे। भय के कारण ही जुल्म होता है। एक कथा है कि एक राक्षस ने एक आदमी को पकड़ लिया। वह उससे अपना सारा काम लेता रहता था। जब कभी वह काम न करता, तो राक्षस कहता– तुझे खा जाऊंगा, चट कर जाऊंगा। शुरू में तो मनुष्य डरता रहा, परंतु जब वह धमकी, असह्य हो गई, तो उसने कहा– ले, खाना है, तो खा ही डाल। पर राक्षस को उसे खाना तो था नहीं, उसे तो एक गुलाम चाहिए था, जो उसके सारे काम निबटा दे। खा जाने पर उसका काम कौन करता ? वह तो उसे सिर्फ खाने की धमकी दिया करता था। परंतु ज्यों ही उसे यह जवाब मिला कि खा जा, उस समय से उसका जुल्म बंद हो गया।

जालिम लोग यह जानते है कि लोग देह से चिपके रहने वाले हैं। इनकी देह को कष्ट पहंचा, तो ये गुलाम बन जाएंगे। परंतु जहां देह की आसक्ति छोड़ दी कि तुरंत सम्राट बन जाएंगे। सारी सामर्थ्य आपके हाथों में आ जाएगी। फिर आप पर किसी का हुक्म नहीं चलेगा। जुल्म करने का आधार ही टूट जाएगा। उसकी बुनियाद ही इस भावना पर है कि 'मैं देह हूं'। वे समझते है कि इनकी देह को सताया कि ये वश में आ जाएंगे। इसीलिए वे धमकी की भाषा बोलते है।

'मैं देह हूं' इसी भावना के कारण ही दूसरों को हम पर जुल्म करने की इच्छा होती है। परंतु इंग्लैड के शहीद क्रेन्मर ने कहा था – मुझे जलाते हो ? जला डालो, लेकिन हमें कौन जला रहे हैं कि उसे कोई बुझा नहीं सकता। शरीर रूपी इसी मोमबत्ती को, इस चरबी को जलाकर सत–तत्वों की ज्योति जलाए रखना ही तो हमारा काम है। देह मिट जाएगी, वह तो मिटने वाली ही है।

सुकरात को विष देकर मारने की सजा दी गई। उन्होंने कहा – मैं अब बूढ़ा हो गया हू। चार दिन के बाद देह छूटने वाली ही थी। जो मरने वाला था, उसे मारकर आप लोग कौन–सी बहादुरी कर रहे हैं? जिस दिन सुकरात को जहर दिया जाना था, उससे पहली रात वे शिष्यों को आत्मा के अमरत्व की शिक्षा दे रहे थे।

सारांश यह है कि जब तक देह की आसक्ति है, तब तक भय है। तब तक रक्षा नहीं हो सकती। तब तक सतत डर लगा रहेगा। यह डर बना रहेगा कि कहीं नींद में सांप आकर न काट खाए। चोर आकर चोरी न कर ले। लोग सिरहाने डंडा रखकर सोते है। क्यों ? कहते हैं – कहीं चोर आ जाए तो ? जरा सोचो, कहीं चोर वहीं डंडा उठाकर उसी के सिर पर मार दे तो ? चोर डंडा लाना भूल भी जाए, तो वे उसके लिए तैयार रखते है। नींद में आखिर रक्षा कौन करेगा ?

मुझे देह के लिए भय नहीं होता, क्योंकि मैं किसी न किसी शक्ति पर विश्वास करके सोता हूं। जिस शक्ति पर भरोसा रखकर भेड़िया, बाघ, सिंह आदि जीव सोते है, उसी के भरोसे मैं भी सोता हूं। बाघ को भी तो नींद आती है, जो सारी दुनिया से बैर होने के कारण हर घड़ी पीछे देखता रहता है। यदि उस शक्ति पर विश्वास होता, तो कुछ

नरायन आटोमोबाइल के महाप्रबन्धक रस्तोगी जी
के साथ स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

स्व. मनोरमा श्रीवास्तव एवं स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

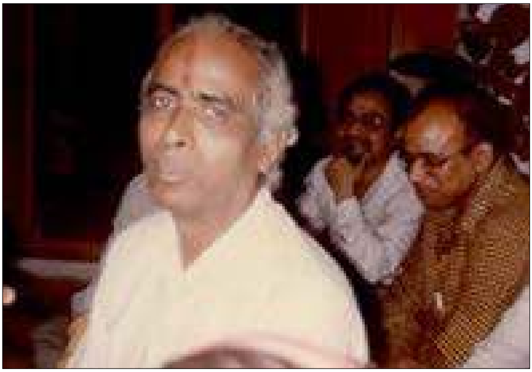

स्व0 नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव अपने सहयोगी
स्व. अनूप श्रीवास्तव (उप सचिव उ0प्र0 शासन) के साथ

बाघ सोते ओर कुछ जागकर पहरा देते। जिस शक्ति पर विश्वास रखकर क्रूर भेड़िया, बाघ, सिंह आदि जीव सोते है, उसी विश्वव्यापक शक्ति की गोद में बच्चा निश्चिंत सोता है। वह मानो उस समय दुनिया का बादशाह होता है। हमें चाहिए कि हम भी उसी विश्ववभर माता की गोद में इसी तरह प्रेम, विश्वास और ज्ञानपूर्वक सोने का अभ्यास करें।

जिस शक्ति के आधार पर हमारा यह सारा जीवन चल रहा है, उसका हमें अधिकाधिक परिचय कर लेना चाहिए। उस शक्ति की उत्तरोत्तर प्रतीति होनी चाहिए। इस शक्ति में हमें जितना विश्वास पैदा होगा, उतनी ही अधिक हमारी रक्षा हो सकेगी। जैसे–जैसे हमें इस शक्ति में विश्वास होता जाएगा, वैसे–वैसे हमारा विकास होता जाएगा।

हमें देह की नहीं, आत्मा (आत्म–तत्व) की रक्षा करनी है। जब तक देह स्थित आत्मा काविचार नहीं आता, तब तक मनुष्य साधारण क्रियाओं में ही तल्लीन रहता है। भूख लगी तो खा लिया, प्यास लगी तो पानी पी लिय, नींद आई तो सो गए। इससे अधिक वह कुछ नहीं जानता। इन्हीं बातों के लिए वह लड़ेगा। इन्हीं की प्राप्ति का लोभ मन में रखेगा। इन दैहिक क्रियाओं में ही मगन रहेगा। विकास का आरंभ तो इसके बाद होता है। इस समय आत्मा सिर्फ देखती रहती है। जिस तरह मां कुएं की ओर घुटनों चलते हुए बच्चे के पीछे सतर्क खड़ी देखती रहती है, उसी प्रकार आत्म हम पर निगाह रखती है। इस स्थिति को उपद्रष्ठा (साक्षी रूप में सब देखने वाला) कहा जाता है।

व्यक्ति अपने को देह रूप समझकर क्रिया–व्यवहार करता है, लेकिन आगे चलकर वह जागता है। उसे भान होता है कि अरे, मै तो पशु की तरह जीवन बिता रहा हूं। व्यक्ति जब इस तरह सोचता है, तब उसकी नैतिक भूमिका की शुरूआत होती है। तब पग–पग पर वह उचित–अनुचित कर विचार करने लगता है। विवेक से काम लेने लगता है। उसकी विश्लेषण बुद्धि जाग्रत होती हे। स्वच्छंदता की जगह संयम आता है। जब व्यक्ति इस नैतिक भूमिका में आता है, तब आत्मा केवल चुप बैठकर नहीं देखती, वह भीतर से अनुमोदन करती है। 'शाबाश'– जैसी धन्यता की आवाज अंदर से आती है। तब आत्म केवल 'उपद्रष्टा' न रहकर 'अनुमंता' बन जाती है। कोई भूखा द्वार पर आ जाए, आप अपनी परोसी थाली उसे दे दें और फिर रात को अपनी इस सत्कृति को याद करें, तो देखिए मन को कितना आनंद मिलता है। भीतर से आत्म की हल्की से आवाजी आती है – 'बहुत अच्छा किया'। हृदयस्थ परमात्मा हमें प्रोत्साहन और प्रेरणा देते है। तब व्यक्ति भोगमय जीवन छोडकर नैतिक जीवन की भूमिका में आ खड़ा होता है।

इसके बाद की भूमिका है नैतिक जीवन में कर्तव्य करते हुए अपने मन के सभी मैलों को धोने का यत्न करना। परंतु जब मनुष्य ऐसा प्रयत्न करते–करते थकने लगता है, तब वह प्रार्थना करता है – 'हे भगवान, मेरे प्रयत्नों की, मेरी शक्ति की पराकाष्ठा हो गई है। अतः मुझे अधिक शक्ति दे...।' जब तक मनुष्य को यह अनुभव नहीं होता कि अपने सभी प्रयत्नों के बावजूद वह अकेला ही पर्याप्त नहीं है, तब तक प्रार्थना का मर्म उसकी समझ में नहीं आता। जब अपनी सारी शक्ति लगाने पर भी वह पर्याप्त जान नहीं पड़ती, तभी आर्तभाव से द्रौपदी की तरह परमात्मा को पुकारना चाहिए। तब परमात्मा शब्दिक 'शाबाशी' न देते हुए सहायता के लिए दौड़ आता है।

मेरे पूज्य माता–पिता ने शायद सही शिक्षा और संस्कार मुझे देने का प्रयास किया था। मैं सौभाग्यशाली हूँ कि मुझे ऐसे माता–पिता मिले जिन्होंने अपनी मृत्यु के साथ ही मुझे आत्मबल प्रदान करते हुए जीवन जीने की दिशा प्रदान कर दी।

स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव
पत्नी मनोरमा श्रीवास्तव के साथ

नाना स्व. मदन गोपाल श्रीवास्तव, मनीष, वीना श्रीवास्तव (मौसी)
ममता, पिता स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव, मृदुल श्रीवास्तव
श्रीमती मनोरमा श्रीवास्तव

अध्याय–3

स्व0 नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव : जीवन परिचय

31.0.1937–03.10.2009

मैं अपने पिता स्व. श्री नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव के जीवन परिचय की शुरूआत उन्हीं के लिखे अन्तिम वाक्यों से करना चाहूँगाः–

"अब जीवन के 73वें वर्ष में मुझे यह सोचने के लिए विवश होना पड़ रहा है कि मेरे जीवन का लक्ष्य क्या था ? तो पाता हूँ कि मैं बचपन से ही स्वतन्त्र, आत्मनिर्भर, कर्त्तव्यनिष्ठ और सम्मान के साथ ही जीने का आदी रहा हूँ। बाद में यही मेरा स्वभाव बन गया। जहाँ सम्मान नहीं, आदर नहीं ऊधर मैं मुड़कर भी नहीं देखता। चाहे वह मेरा कोई निकट का अर्थात् पत्नी, पुत्र, बेटी और कोई निकटस्थ ही क्यों न हो।"

नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव
12.08.2008

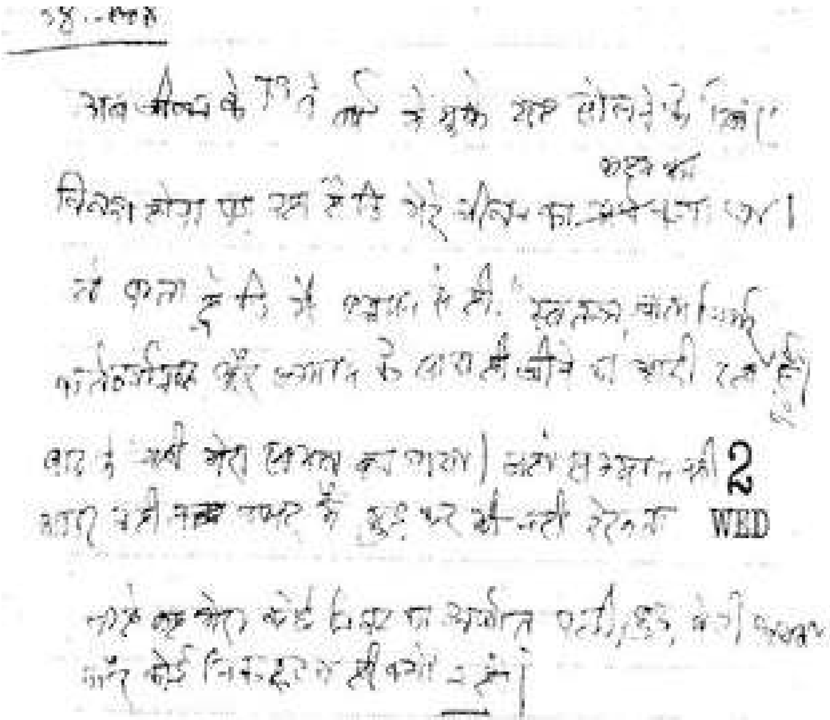

स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

पिता

माँ घर का गौरव तो पिता घर का अस्तित्व होते हैं।
माँ के पास अश्रुधारा तो पिता के पास संयम होता है।
दोनों समय का भोजन माँ बनाती है तो जीवन भर भोजन की
व्यवस्था करने वाले पिता को हम सहज ही भूल जाते हैं।
कभी लगी जो ठोकर जो या चोट तो ओ माँ ही मुँह से निकलता है।
लेकिन रास्ता पार करते कोई ट्रक पास आकर ब्रेक लगाये तो
बाप रे यही मुँह से निकलता है।
क्योंकि छोटे छोटे संकटों के लिए माँ है पर बड़े
संकट आने पर पिता ही याद आते हैं।
पिता एक वट वृक्ष हैं जिसकी शीतल छाँव में सम्पूर्ण परिवार सुख से रहता है।

स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव का जन्म 5 जुलाई 1937 को उत्तर प्रदेश राज्य के जिला फतेहपुर, तहसील बिन्दकी, ग्राम चूड़ामनखेड़ा में हुआ था। पिता का नाम स्व. त्रिभुवन नाथ श्रीवास्तव था तथा माता का नाम देवकी था। उनके बचपन में पुकारने का नाम रामू था।

जन्म के 6 माह पश्चात् ही उनकी माता का देहान्त हो गया था। यह परिवार ब्रिटिश सरकार के समय से ही काफी प्रभुत्व वाला तथा पढ़ा–लिखा था। नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव जी के परबाबा श्री चूड़ामन के नाम पर ही गाँव का नाम चूड़ामन खेड़ा पड़ा। उस समय परबाबा की पीढ़ी में सभी भाईयों के पास 100 बीघा जमीन थी। परिवार की परम्परा के अनुसार जब भी परिवार में कोई भाई बड़ा होता था तो सभी भाई मिलकर उसको 100 बीघा जमीन खरीदकर दे देते थे। यह परम्परा लम्बे समय तक चली।

श्रीवास्तव परिवार ब्रिटिश साम्राज्य के समय काफी संभ्रान्त परिवारों में गिना जाता था। बाबू त्रिभुवन नाथ अपने परिवार के साथ इलाहाबाद में आ गये और कलेक्ट्रेट में नौकरी करने लगे। उन्होंने कोठा पार्चा, इलाहाबाद में एक मकान किराये पर लिया और वहीं से मेरे पिता नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव के जीवन का संघर्ष शुरू हुआ। बाबा त्रिभुवन नाथ दिनभर कलेक्ट्रेट में नौकरी करते थे तथा शाम को एक प्राइवेट नौकरी भी करते थे। शुरू से ही पिता एवं पुत्र का संवाद बहुत कम था।

बचपन से ही नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव स्वावलम्बी एवं आत्मनिर्भर थे। माता के बचपन में ही देहान्त ने उन्हें संघर्ष करने की क्षमता दे दी।

उनके पिता त्रिभुवन नाथ जी ने अपनी पत्नी के स्वर्गवास के बाद दूसरा विवाह किया तथा उनसे उन्हें दो पुत्र एवं तीन पुत्रियों की प्राप्ति हुई। उनके पुत्र श्री वीरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव (भइया जी), श्री सुरेश कुमार श्रीवास्तव (भइया जी), पुत्रियाँ प्रेमा श्रीवास्तव, कुसुम श्रीवास्तव एवं मिथिलेश श्रीवास्तव थे। सम्पूर्ण परिवार होते हुए भी उन्हें हमेशा से ही पारिवारिक सुख का अभाव रहा। बचपन के दिनों से ही उन्होंने बहुत संघर्ष किया। वो 5–5 किमी से सर पर चूल्हे में जलाने वाली लकड़ी लाते थे। इण्टर में आकर उन्होंने अपने लिए पहला पैंट बनवाया था। वह कक्षा–8 से ही बच्चों को घर–घर जाकर ट्यूशन पढ़ाते थे तथा उसी से अपना खर्च चलाते थे। उनके परम मित्रों में श्री अश्विनी कुमार भार्गव थे। बचपन से ही मुसुदद्रीन के होटल में खाना खाते थे और प्रत्येक मंगलवार की रामबाग इलाहाबाद के हनुमान मंदिर में जाना उनका नियम था। बाबा त्रिभुवन नाथ जी समयाभाव के कारण कभी बातचीत के लिए साथ नहीं बैठ पाते थे और कभी–कभी पिता–पुत्र को मिलने में ही एक–एक सप्ताह तक का समय लग जाता था। घर में पढ़ने का माहौल न होने के कारण उन्होंने छत पर दो तरफ से घेर कर एक बक्सा रखकर उन्होंने अपना बसेरा बनाया। कमरे की एक दीवार में हमेशा से ही हवा के लिए जो छेद बनाये जाते थे तथा दो तरफ से कच्ची दीवार के कमरे में बचपन से ही उन्होंने गर्मी, जाड़ा, बरसात सभी मौसम में उसी को अपनी तपोभूमि मानकर तपस्या की। कभी–कभी जब अपने जीवन के संघर्ष

स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव के बचपन के मित्र

स्व. दिनेश श्रीवास्तव

स्व. मुरारी मोहन राय

श्री प्रबल कुमार मजूमदार

श्री अश्विनी कुमार भार्गव

की कहानी मुझे बताते थे तो उनकी आँखे नम हो जाती थी। उन्होंने कोई भी पल शायद ऐसा नहीं बिताया होगा जिसमें उन्होंने अपनी पहली माँ तथा पिता को याद किया हो। उनको बचपन में सहारा देने में उनके मामा का तथा उनकी बिन्देश्वरी बुआ का बहुत बड़ा हाथ था।

उन्होंने 1952 में हाईस्कूल तथा 1954 में इण्टरमीडिएट की परीक्षा इलाहाबाद के CAV (City AV College) से उत्तीर्ण की। बचपन से ही उनकी इच्छा एक इन्जीनियर बनने की थी तथा इलाहाबाद में स्थित मोतीलाल नेहरू रीजनल इन्जीनियरिंग कालेज से करने की थी परन्तु दुर्भाग्यवश पिता की अर्थिक स्थिति ठीक न होने के कारण कलेक्ट्रेट में ही क्लर्क की नौकरी करनी पड़ी। वो बताते थे कि लगभग 4–5 वर्षों तक नौकरी तो वो करते थे परन्तु उन्होंने वेतन कभी नहीं लिया क्योंकि पूरा वेतन उनके पिता त्रिभुवन नाथ ले आते थे जिससे घर का खर्च चलता था। अपने स्वयं के खर्च के लिए भी उन्हें अपनी ट्यूशन का ही सहारा था। इसी घर की जिम्मेदारियों के कारण वो सायं की स्नातक परीक्षा का द्वितीय वर्ष नहीं पूर्ण कर पाये और जो उन्होंने लगभग 6 वर्ष के अन्तराल के बाद स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण की। वो कभी–कभी बताते थे तो उनकी Class में एक English Teacher का लड़का था और वो कितना भी अच्छा क्यों न लिखे Highest Marks उसी के आते थे।

नौकरी के दौरान उन्हें गलत ढ़ंग से पैसा कमाने के अनगिनत मौके मिले परन्तु उन्होंने अपनी ईमानदारी नहीं छोड़ी बल्कि उनका यह हमेशा से कहना था कि नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव बिकाऊ नहीं है और कोई भी उसकी कीमत नहीं लगा सकता।

वह PCS की परीक्षा की तैयारी करते थे और सफलता की शत प्रतिशत सम्भावना थी परन्तु घर की जिम्मेदारियों के कारण ठीक से पढ़ नहीं पाये और उनका यह सपना भी अधूरा रह गया। वह अपनी लगन एवं परिश्रम के बल पर आगे बढ़ते रहे। उन्होंने लोक फंड आडिट का कम्पटीशन पास किया था। बतौर आडिटर वो हरदोई, सण्डीला एवं लखनऊ में लगभग 3–3 महीने के अन्तराल के लिए रहे। चाक से छत की फर्श पर लिखकर पढ़ते हुए उन्होंने जिन्दगी के मुकाम को प्राप्त किया। उन्होंने सचिवालय सेवा की परीक्षा Senior Secretriat Services का Exam Pass किया। इसी के बाद वो लखनऊ में settle हो गये और 1964 में लखनऊ आने के बाद वो Model House, Aminabad में किराये पर रहे। अच्छा खाना, अच्छा पहनना तथा घूमना उनको अच्छा लगता था। शायद उनकी शुरू की अभागों वाली ज़िन्दगी ने उन्हें मौका दिया था अपनी छोटी–छोटी इच्छाओं को पूरा करने का।

बचपन से ही क्रिकेट खेलने में उनकी अत्यधिक रूचि थी। पास के ईदगाह के मैदान में खेलने के लिए भाग जाते थें वो एक स्थानीय Local Club में Cricket Club के All Rounder Player भी थे। कोठा पार्चा के पास में एक मित्रा Family रहती थी जो Maths के शिक्षक थे तथा उनकी पुत्री रेनू मित्रा से उन्हें विशेष लगाव था। उनकी माँ भी उनका बड़ा ख्याल रखती थी। शायद यही कारण रहा होगा कि उनकी

स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव एवं
श्रीमती मनोरमा श्रीवास्तव

स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव पोते अनिकेत
एवं नातिन भाव्या के साथ

श्रीमती मनोरमा श्रीवास्तव
नातिन भाव्या के साथ

पुत्र मनीष श्रीवास्तव एवं
पुत्री ममता श्रीवास्तव

बंगाली में बहुत अच्छी पकड़ थी। इसी तरह लखनऊ में घोष जी जो पेशे से डाक्टर थे उन्हें वो पिता समान आदर देते थे।

पढ़ने के लिए वो अक्सर अल्फ्रेड पार्क जहाँ क्रान्तिकारी चन्द्रशेखर आजाद ने अपने को गोली मारी थी और संगम, इलाहाबाद में पढ़ने जाते थे। माँ की बचपन में ही मृत्यु के बाद मथुरा बाबा ने चूड़ामन खेड़ा, बिन्दकी में 2–3 साल तक पालन पोषण किया। जब वो 4 साल के हो गये तो उनके पिता त्रिभुवन नाथ उनको अपने साथ इलाहाबाद ले आये।

बचपन में एक बार उनको बहुत तेज बुखार चढ़ा हुआ था तो उन्होंने अपने पिता त्रिभुवन नाथ जी से पूछा कि मैं आपका कौन हूँ और आपको कोई फर्क पड़ता है कि मै जीवित रहूँ कि मर जाऊँ। जब वो टयूशन पढ़ाते थे तो उन्हें लगभग 20–30 रूपये महीने की आमदनी हो जाती थी जिससे वो अपने खाने एवं पढ़ाई का खर्च चलाते थे।

जब उनके पिता त्रिभुवन नाथ ने कटघर में अपना मकान बनवाया तब घर की आर्थिक स्थिति खराब हो गई। जब तक उन्होंने कलेक्ट्रैट में नौकरी की तब तक अपनी तनख्वाह घर में ही दी। पंड़ितों ने तो उनके बारे में यह भविष्यवाणी की थी कि बड़ा ही अभागा लड़का है और जिन्दगी भर दूसरों पर आश्रित रहेगा जिसको उन्होंने अपनी मेहनत एवं लगन से झूठा साबित किया और Self Made Person की तरह सारी जिन्दगी खुद आश्रित न होकर दूसरों को ही सहारा दिया। अपनी हाथों की लकीरों को स्वयं बदलने की कहावत को चरितार्थ किया। नरायन आटोमोबाइल्स के महाप्रबन्धक रस्तोगी जी एवं UPSRTC के Chief Engineer राजकुमार मित्तल उनके अभिन्न मित्र थे।

लखनऊ में नौकरी लगने के पश्चात् उन्होंने अपने पिता त्रिभुवन नाथ से कहा आप लखनऊ आ जाइये और यहीं कोई Business कर लीजिएगा पर वो नहीं आये और सेवानिवृत्ति के कुछ समय पहले कर्ज लेकर चाका, इलाहाबाद में साढ़े छः बिसवाँ जमीन लेकर चूना भट्टी की फैक्ट्री डाल दी। परन्तु वह चल ना सकी और घर का सारा पैसा कर्ज चुकाने में चला गया। उनके पिता ने 3 लड़कियों की शादी के लिए कुछ भी इकट्ठा नहीं किया था। तीनों बहनों प्रेमा, कुसुम एवं मिथिलेश में से कुसुम उनका थोड़ा ख्याल रखती थी। कहते हैं इतिहास पुनरावृत्ति करता है। उनके पिता ने उनके आमंत्रण पर लखनऊ में Settle होने से मना कर दिया था और जब सन् 2008 में मैने पापा से पूछा कि आप इतने बीमार रहते हैं अब आप सब मेरे साथ भोपाल चलिये जहाँ मेरी नौकरी है परन्तु उनका जवाब था कि "बाप कहीं नहीं जाता तुम्हें आना हो तो तुम आ जाओ", उनकी इस बात ने मेरी अन्र्तआत्मा को झकझोर दिया और मैनें दृढनिश्चय किया कि मुझे इस वक्त जब मेरे माता–पिता को मेरी जरूरत है मैं वापस आऊँगा एवं मुझे इस बात का एहसास होने लगा कि माता–पिता की सेवा से बढ़कर कोई धर्म नहीं है और दुनिया का हर रिश्ता आपका साथ छोड़ सकता है परन्तु माता–पिता अपनी आखिरी सांस तक अपने बच्चों की भलाई के बारे में ही सोचते है।

दामाद मुकेश श्रीवास्तव एवं
स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

अनिकेत श्रीवास्तव एवं मनोरमा श्रीवास्तव

दादी एवं परपोता अनिकेत

अतः मैं अपनी स्थाई नौकरी छोड़कर लखनऊ आ गया। इस कार्य में मेरी सहायता मेरे स्वर्गीय शिक्षक प्रो. एस.पी. श्रीवास्तव तथा मेरे आदर्श, मेरे गुरू और कुलपति बलराज चौहान ने की और जिनकी वजह से मैं पिता के अन्तिम दिनों में कुछ सेवा कर पाया। उनका यह ऋण मैं शायद अपने जीवन को न्योछावर कर भी नहीं उतार सकता। फतेहपुर जिले की तहसील बिन्दकी में चूड़मन खेड़ा गाँव पूर्वजों के नाम पर ही था। पापा जी के बाबा का नाम देवी दयाल था। नरेन्द्र कुमार जी के पिता श्री त्रिभुवन नाथ का देहान्त 13 जुलाई, 1971 को हुआ था।

पापा जी की शादी 2 जुलाई 1965 को हुई थी तथा मेरी माता जी मनोरमा श्रीवास्तव पापा जी से बड़े खानदान की थी। माता जी का रंग साफ है जबकि पिता जी साँवले रंग के थे। कभी–2 उनके ससुराल वालों ने उन पर इस बात को लेकर कटाक्ष भी किये पर उन्होंने कभी भी उसका बुरा नहीं माना और अपने मेहनत से आगे बढ़ते रहे। 1971 में उनके पिता त्रिभुवन नाथ की तबियत खराब हो गई उस समय वो गृह विभाग, उ0प्र0 शासन में कार्यरत थे। उन्होंने विभाग के एक मुख्य अग्निशमन अधिकारी को सेवा कार्य सौंप रखा था परन्तु काफी देर हो चुकी थी और उसी वर्ष उनके पिता ने भी प्राण त्याग दिये। उनकी बीमारी में कटघर का मकान भी बिक गया। पापा ने अपने दोनो भाईयों सुरेश (लाल जी) एवं वीरेन्द्र (भईया जी) को आगे बढ़ाने एवं प्रेरित करने का बहुत प्रयास किया परन्तु भाग्य विधाता ने जो लिखा होता है उससे ज्यादा कुछ नहीं होता।

लखनऊ में एक आसरा बनाने की इच्छा से उन्होंने लगभग डेढ़ बिसवा जमीन 25 पैसे प्रति वर्ग फुट की दर से 5.12.1963 को खरीदी। फिर उन्होंने एक कमरा बनवाया और किराये का मकान छोड़कर उसमें आ गये। उस समय वो इलाका जंगल के समान था और दूर–दूर तक कोई घर नहीं था। जेल के पीछे का इलाका होने के कारण भी वहाँ विकास बहुत धीमी गति से हुआ पर वो जगह आज शहर के बीचों बीच है। पापा का कहना था कि घर हमेशा स्टेशन एवं बस स्टाप से पैदल की दूरी पर होना चाहिए। घर को भी उन्होंने बहुत ही योजनाबद्व तरीके से बनवाया। वो स्वयं सामान लाते एवं उस समय सीमेंट का भी कोटा होता था। उन्होंने जब दूसरा कमरा बनवाया तब भी एक ही कमरे में रहे और दूसरा किराये पर उठा दिया और उसके किराये को बचाते रहे। फिर कुछ पैसा इकट्ठा होने पर तीसरा कमरा बनवाया। दो कमरों में स्वयं रहे एवं तीसरा कमरा किराये पर उठा दिया। इस तरह धीरे–2 उन्होंने लगभग 1965 से 1990 के बीच तीन मंजिला घर बनवाया जिसमें आज लगभग 12 कमरे एवं अन्य सुविधायें है। उनका मानना था कि घर हमेशा मुख्य सड़क से थोड़ा अन्दर रहे और घर का निर्माण किले की तरह करना चाहिए जो सुरक्षा की दृष्टि से अच्छा रहता है।

उनके 4 बच्चे थे जिनमें दो लड़के एवं दो लड़कियाँ हैं। मेरे पिता हमेशा से कहते थे कि उन्होंने भगवान से मांगा था कि 4 बच्चे हों जिससे कम से कम एक बच्चा तो पास में रहेगा। उनके सबसे बड़े लड़के का नाम मनीष उससे छोटी लड़की

परम मित्र आर.के. मित्तल (मुख्य अभियन्ता)
परिवहन निगम अपनी पत्नी के साथ

स्व. प्रो. एस.पी. श्रीवास्तव एवं श्रीमती एस.पी. श्रीवास्तव
के साथ मृदुल श्रीवास्तव

साले विजय विक्रम (तेज) एवं पत्नी मनोरमा श्रीवास्तव
के साथ स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

का नाम ममता, मैं (मृदुल) और सबसे छोटी लड़की का नाम नमिता है। चूंकि उनके पास सीमित संसाधन थे इसलिए बच्चों के जन्म के बाद ही उन्होंने 100 रूपये प्रतिमाह लड़कियों के नाम से और 50 रूपये प्रतिमाह लड़कों के नाम से बचाना शुरू कर दिया था और जो बच्चों की पढ़ाई एवं उनकी शादी ब्याह के खर्चों को करने में बहुत काम आई। उन्हें पढ़ाने का बहुत शौक था। उन्हें जब भी समय मिलता तो अपने बच्चों के साथ–साथ मोहल्ले के अन्य बच्चों को भी पढ़ाते थे। उनका सपना था कि उनके बच्चे बहुत पढ़े परन्तु दुर्भाग्यवश ज्येष्ठ पुत्र मनीष एवं ज्येष्ठ पुत्री ममता ने उतना पढ़ने में रूचि नहीं दिखाई और सिर्फ स्नातक की परीक्षा उत्तीर्ण करके अपनी जीविका चलाने लगे। मुझे पिता के आर्शीवाद से पढ़ने का खूब मौका मिला और मैंने अपनी विधा में अन्तिम डिग्री D-Lit प्राप्त की।

उन्हें शुरू से ही मुझसे खास लगाव था और मुझे उनसे सबसे अधिक मार भी पड़ी। कहते हैं कि पिता की मार में बढ़ा आर्शीवाद छिपा होता है यही कारण है कि आज मैं जो कुछ भी हूँ उसके पीछे उनके दिये गये संस्कार और आर्शीवाद एवं उनका सपना था। वो मुझे एक प्रशासनिक अधिकारी बनाना चाहते थे और उन्होंने हमेशा से ही मुझे प्रशासनिक अधिकारी बनने के लिए प्रेरित किया। परन्तु मेरी रूचि शैक्षिक विद्या की तरफ थी और मैं Academics की तरफ आ गया परन्तु शायद उनका सपना पूरा करने के लिए ही मैं सौभाग्य से प्रशासनिक पद पर ही आ गया और अब मुझे अपना भविष्य भी इसी में दिखाई दे रहा है। बचपन में जब भी पापा टूर पर जाते तो मैं भी उनके साथ जाता था जिस समय पापा जी तराई अनुसूचित जनजाति विकास निगम में थे उस समय उनको एक एम्बेसेडर कार और एक महिन्द्रा जीप मिली हुई थी। उस समय गोण्डा, बहराइच, देवरिया, गोरखपुर जिलों के दौरों पर जाते थे और जंगल के बीच से भी कई बार गुजरना पड़ता था। एक बार उनका सामना डाकुओं से भी हुआ था परन्तु बातचीत करने पर उन्होंने छोड़ दिया। उनकी हिम्मत हमेशा उनके साथ थी इसीलिए वो कभी भी नहीं ड़रते थे। प्रति रविवार शाम को 4 बजे वो तख्त पर बैठ जाते थे और हम सभी की फरमाइशे पूरी करते थे।

उनकी अपनी बहनों ने तो कभी उनको वो प्यार नहीं किया जो एक भाई–बहन के बीच में होता है। उनकी चचेरी बहन विनोद कुमारी और मुँहबोली बहन गीता ने उनकी कलाई में राखी बाँधी और बहनों की कमी महसूस नहीं होने दी।

उनको कभी–कभी गुनगुनाना बहुत अच्छा लगता था। उनके पसन्द के गायक मुकेश और हीरो राजकपूर थे। वो कभी–2 मुकेश का गीत चाँद सी महबूबा हो मेरी कब ऐसा मैंने सोचा था गाते थे और राजकपूर की फिल्में देखना पसन्द करते थे। हीरोइनों में उन्हें नर्गिस और वैजयन्ती माला अच्छी लगती थी।

हम लोगों में संस्कार देने में उनका बड़ा हाथ था। वो कहते थे कि आपसे जो भी बड़ा हो उसको आदर एवं सम्मान दीजिए और छोटो को प्यार देना चाहिए। यही कारण था कि हम जब छोटे थे तो जो घर में ड्राइवर भी आते थे तो हम उनके पैर छूते थे।

स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव एवं स्व. ओ.एन. श्रीवास्तव

पीयूष, विनय, स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव,
मुन्ना एवं अनमोल

दादी व अन्य

उ0प्र0 के मुख्यमंत्री सी.बी. गुप्ता को एक बार अपने छोटे से घर में बुलाने का सौभाग्य उनको प्राप्त हुआ। जब वो तकनीकी शिक्षा विभाग का कार्य देखते थे तो उ0प्र0 के सभी तकनीकी विद्यालयों के निदेशक घर आते थे और बुन्देलखण्ड इंजीनियरिंग संस्थान बनवाने का उनको मौका मिला और उन्होंने लगभग 200 एकड़ की भूमि एवं 90 लाख से ज्यादा की धनराशि दी। इसके पहले निदेशक आर.एस. निर्जर को Appoint करने का भी सौभाग्य मिला। झांसी के इस कालेज के उद्घाटन के समय सिर्फ मेरी छोटी बहन नमिता ही इकलौती लड़की present थी तो मंत्री जी ने उद्घाटन नमिता से ही करवाया।

विधाता का भी अजीब न्याय है एक समय था कि वो खुद इंजीनियरिंग करना चाहते थे तो उन्हें मौका नहीं मिला और एक समय आज के सभी इंजीनियरिंग कालेजों के प्रधानाचार्यों एवं सभी लोगों को आदेश देने तथा उनको खड़ा करने में बहुत बड़ा योगदान दिया जिसे आज भी वहाँ के लोग याद करते है।

कभी–कभी पिता जी बताते थे कि जब वो गृह विभाग में थे तो उन्होंने मेरठ दंगों को नियंत्रित करने में निर्णायक भूमिका निभाई थी और आई0जी0 जो पुलिस के मुखिया होते थे उनको बहुत मानते थे। उसी समय उनकी प्रतिभा को देखते हुए बाम्बे की एक बड़ी कम्पनी के मालिक ने उन्हें 10 गुना ज्यादा वेतन पर नौकरी देने का आग्रह किया पर उन्होंने मना कर दिया और उनका कहना था कि पैसा कभी मुझे नहीं खरीद सकता और आज जो इतना बड़ा मालिक मुझे सर कहकर सम्बोधित कर रहा है उसकी नौकरी करने पर वो मेरा मालिक हो जायेगा। सरकार में रहकर सेवा करने का नशा उनको बहुत था।

जब वह परिवहन विभाग में थे तो उनकी दोस्ती राजकुमार मित्तल, मुख्य अभियंता और श्री रस्तोगी जी, महाप्रबन्धक, नरायन आटोमोबाइल्स से हुई और कालान्तर में वो लोग अभिन्न मित्र बन गये। यहाँ तक कि मित्तल अंकल के कोई लड़का नहीं था और वो मुझे गोद लेना चाहते थे परन्तु पापा ने उनको मना कर दिया। महिन्द्रा जीप को Taxi एवं Official Vehicle के रूप में introduce कराने में उनका बहुत बड़ा हाथ था।

जिस समय पापा का सेवानिवृत्ति का समय आया उससे लगभग 6 साल पहले उन्होंने आवास एवं नगर विकास का भी कार्यभार देखा। उसी समय उनकी मुलाकात दिल्ली के एक बहुत बड़े घराने सूरी परिवार से हुई और जिनका गाँधी परिवार में अच्छी पकड़ थी। गंगा सागर सूरी जी के दिल्ली के तिलक मार्ग में सूरी अपार्टमेन्ट्स का निर्माण कराया। सूरी जी का संजय गाँधी और मेनका गाँधी की शादी कराने में बड़ा हाथ था और वो वहाँ के सबसे अच्छे अपार्टमेन्ट में रहते थे जिसमें पूरी दिल्ली और इंडिया गेट को देखा जा सकता था। मुझे कई बार उनके घर जाने का मौका मिला और उनके घर में चांदी के बर्तनों में वैजयन्ती माला एवं उसके पुत्र के साथ रात्रि भोज करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। सूरी अंकल की कम्पनी दिल्ली आटोमोबाइल्स बहुत ही प्रसिद्ध कम्पनी थी।

घर में पूजा का एक दृश्य

स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव बड़ी पुत्री ममता का
विवाह सम्पन्न कराते हुए

स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव, पुत्र मनीष एवं
पुत्री नमिता व अन्य के साथ

पापा जी जब भी अपने घर का काम करवाते थे तो एक मंदिर जो घर के पास है उसमें भी निर्माण अवश्य कराते थे। उन दिनों पापा ने एक रईस अंकल का एक काम करवाया था तो उन्होंने पापा से कहा कि मैं आपके लिए कुछ करना चाहता हूँ। उन दिनों वो लाटूश रोड स्थित S.U. Motors के मालिक थे और पापा ने कहा कि आपकी श्रद्धा हो तो जिस मन्दिर का मैं निर्माण करा रहा हूँ उसके चैनल को लगवा दीजिए। उनका बनवाया गया दुःख हरन मन्दिर आज नीलकण्ठ मन्दिर के नाम से जाना जाता है तथा उस मन्दिर में स्थापित हनुमान जी की मूर्ति पापा जी ने अयोध्या से मंगवाई थी और उस मूर्ति की स्थिति इतनी अच्छी है कि हनुमान जी की दृष्टि सदैव हमारे घर में पड़ती रहती है और हमें संकटों से बचाती रहती है। पापा जी कहा करते थे कि यह घर उनका बड़ा बेटा है। हमारे घर में इतने किरायेदार रहे और जिनमें से कुछ बुजुर्ग थे परन्तु उस घर में कभी कोई मृत्यु नहीं हुई और प्रथम मृत्यु हुई थी तो वो मेरे पिता जी स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव की जिन्होंने उस घर को अपने खून पसीने से बनवाया था। मुझे उस घर से स्वयं भी दो कारणों से अत्यधिक लगाव है। प्रथम कारण यह है कि मेरे पूज्यनीय पिता ने उसे बनवाया और वहीं अपने प्राण त्यागे तथा दूसरा कारण यह भी है कि यही घर मेरी जन्मभूमि भी है। मैं अब भी अपने उस घर में होता हूँ तो उसकी बिस्तर में सोना और उसी कमरे में रहना पसंद करता हूँ जहाँ मेरे पिता रहा करते थे। उनकी मृत्यु के पश्चात् मुझे अचानक यह लगने लगा कि मैं 20–30 साल बड़ा हो गया हूँ। मुझे ही सारे घर की जिम्मेदारियाँ सम्भालनी है। मेरी माँ हमेशा मुझे यही कहती हैं कि पापा कहते थे कि मेरे जिन्दा न रहने पर मृदुल ही घर को और तुमको (माँ) को सम्भालेगा। मुझे नहीं लगता कि एक पिता के इस भरोसे और आर्शीवाद से बढ़कर एक पुत्र के लिए कोई गर्व और सम्मान की बात है। किसी भी प्रकार का पुरस्कार इस आर्शीवाद के सामने तुच्छ है और मैं अपने स्व. पिता और ईश्वर से यही प्रार्थना करता हूँ कि मुझे इतनी शक्ति प्रदान करें कि मैं उनकी अपेक्षाओं पर खरा उतर सकूँ।

उन्होंने अपने कार्यकाल में परिवहन, कृषि, गृह, आवास एवं गृह विभाग, राजस्व, प्राविधिक शिक्षा इत्यादि विभागों का कार्यभार देखा तथा समाज के लिए बहुत कार्य किया। PAC Camps बनवाये। पड़रौना एवं महराजगंज जिलों का निर्माण कराया। उन्हें एक बार तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गाँधी के साथ रात्रिभोज करने का भी मौका मिला।

पापा जी की एक आदत ने मुझे बहुत प्रभावित किया। वो रोज शाम को छत में 2–3 घंटे टहलते थे। उस दौरान वो अपने माता पिता को याद करते, अपनी समस्याओं का समाधान करते। अगले दिन के कार्यों की रणनीति बनाते तथा ईश्वर वन्दन करते थे। वह समय को एकदम अकेले बिताते थे और मैं अक्सर उनसे बातें करने के लिए छत पर चला जाता था। हम दोनों घंटों टहलते और बातें करते थे। तो मुझे समझाते थे कि आदमी के अंदर सुहृदयी, आत्मसम्मान, अनुशासन, आत्मविश्वास होना चाहिए और उनका कहना कि **"हारिये न हिम्मत, बिसारिये न राम"** जीवन में

स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव कुछ रिश्तेदारों के साथ

स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव पोते अनिकेत एवं अपने सहयोगियों स्व. अनूप श्रीवास्तव (उप सचिव उ0प्र0 शासन) एवं श्री जवाहर लाल (उप सचिव, उ0प्र0 शासन) के साथ

श्री गंगा सागर सूरी, श्री गिरीश श्रीवास्तव,
स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव एवं श्री अमर

समस्याओं से लड़ने और उनको जीतने का मूल मंत्र है।

नरेन्द्र कुमार जी को शुरू से ही साहित्य में विशेष रूचि थी। वो कहानियाँ लिखते थे जो उस समय की प्रसिद्ध पत्रिकाओं, धर्मयुग, साप्ताहिक कहानियाँ जैसी पत्रिकाओं में प्रकाशित भी हुई। वे बताते थे कि **"एक पैसे से व्यापार"** उनकी प्रथम कहानी थी। उस कहानी के कुछ दृष्टांत इस प्रकार है :–

"एक छोटा सा अबोध बालक था उसके पास जीविकोपार्जन का कोई साधन नहीं था और जब वो थक जाता था तो वो गाँव के लोग उसे खाना दे देते थे पर उसे हमेशा यह लगता था कि जिन्दगी में आत्मनिर्भरता और आत्मसम्मान से बढ़कर कुछ नहीं है। जंगल में लोग लकड़ी काटने जाते थे और गर्मी के कारण वो लोग अत्यधिक थक जाते थे। इस बालक ने कुछ दिनों तक देखा कि लोग जंगल में जाते हैं और इतनी मेहनत करने के बाद लौटते हैं तो बहुत प्यासे रहते हैं। तभी उस बालक के मन में आया कि क्यों न व्यापार किया जाये जिससे अपना पेट तो भर सके। उसने एक पैसे से एक घड़ा खरीदा और उसमें ठंडा पानी भरा और जब गाँव वाले लकड़ी काटकर वापस आते तो वो उनको ठंडा पानी पिलाता था और गाँव वाले कुछ आने उसे दे देते थे। उस अनाथ बालक ने भीख माँगने के बजाय मेहनत से पैसे कमाकर पेट भरना ज्यादा उचित समझा। फिर उस बालक ने पानी के साथ–साथ चने रखना भी शुरू कर दिया। राहगीर व गाँव वाले उसके पास रूकते, पेड़ के नीचे आराम करते, पानी पीते और चने खाकर चले जाते। बदले में उस बालक को जो पैसे मिलते वो उनको जमा करता और एक दिन वह बच्चा बहुत बड़ा आदमी बन जाता है।"

शायद इसी कहानी ने उनको बहुत प्रभावित किया था तभी उनको मेहनत करके पैसा कमाने और खुद्दारी से जीवन व्यतीत करने की लगन थी। उन्हें पैसे की कीमत मालूम थी तभी वे एक–एक पैसे को जोड़ते रहे और जीवन भर अपने कर्त्तव्यों एवं दायित्वों का निर्वहन करते रहे। वह अपनी तुलना उस अनाथ बालक से करते थे जिसने संघर्ष करके अपना जीवन बनाया। पापा जी जब सेवानिवृत्त हुए तब उन्हें थोड़ा सा फन्ड मिला और पेंशन मिलती थी। उस समय बहुत से लोगों ने उनको राय दी कि पैसे को लगाकार कोई व्यापार कर लें या कुछ और करें पर उनका मानना था कि व्यापार पैसे से नहीं दिमाग से होता है।

सेवानिवृत्ति के पश्चात् उन्होंने Tax coordinator नाम का एक संस्था का निर्माण किया जिसमें वह सिर्फ 150 रू में लोगों को आयकर सम्बन्धी सुझाव देते थे तथा घर से ही कागज लेकर लोगों का आयकर रिर्टन भरवाते थे। इस प्रकार से वो अपना समय भी व्यतीत कर लेते थे और धीरे–धीरे उनके पास लगभग 800 Clients भी हो गये थे। उनसे जुड़े कुछ लोगों में शरद, धनंजय, जो investment से सम्बन्धित कार्य करते थे उन्हें पिता जी के माध्यम से बहुत काम मिला। उनके परम मित्रों में जे. पी. श्रीवास्तव जी, जवाहर लाल जी, के.एन. श्रीवास्तव, अनूप श्रीवास्तव, आर.एस. जिर्जर, अश्विनी भार्गव, महेन्द्र कुदेशिया, अजीत कुमार साहू, दीक्षित जी, राजकुमार मित्तल, रस्तोगी जी थे। हमारे कुछ मित्र अविनाश, संदीप, अमित, दीपू इत्यादि उनके

पोते अनिकेत के साथ स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

ज्येष्ठ पुत्री ममता श्रीवास्तव के विवाह कराते हुए
स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव परिवार के सदस्यों
के साथ

बहुत करीब थे और वो घंटों उनसे बात करके उन्हें जीवन जीने के गुण सिखाते थे।

वो अपना काम खुद करना पंसद करते थे और इतना बीमार होने पर भी उन्हें आखिरी दिन तक स्वयं ही कार्य किया। पापा को मेरे ऊपर बहुत विश्वास था और उन्होंने स्वयं कष्ट में रहकर भी हमें सी.एम.एस. जैसे मंहगे स्कूल में पढ़ाया। जब मेरी हाईस्कूल की परीक्षा थी उससे 1 महीने पहले मुझे टाईफाइड का बुखार हो गया और स्कूल वालों में मुझे बोर्ड की परीक्षा में बैठाने से मना कर दिया। फिर पिता जी ने अपने source से मुझे स्कूल से अनुमति दिलवा दी। उन्होंने मेरे लिए जल निगम की कार का इंतजाम भी करवा दिया और मुझे परीक्षा के दौरान ग्लूकोज भी पिलाया जाता था।

जब मेरा हाईस्कूल बोर्ड परीक्षा का परिणाम आना था तो उस समय मैं अपने ननिहाल दिल्ली में था। जिस दिन परिणाम आया उस दिन उन्होंने अखबार में तृतीय श्रेणी में मेरा रोल नम्बर देखना आरम्भ किया। फिर जब उन्हें मेरा नम्बर नहीं मिला तो उन्हें लगा कि मैं फेल हो गया हूँ क्योंकि मेरी तैयारी नहीं थी। फिर जब उन्होंने देखा तो उन्हें मेरा नम्बर प्रथम श्रेणी में मिला। फिर भी उन्हें डर लग रहा था कि सिर्फ 60 प्रतिशत के आस–पास अंक होंगे और स्कूल वाले नाराज होंगे। पर जिस दिन वो मेरी अंक तालिका लेने स्कूल गये तो 81.2 प्रतिशत अंक देखकर आश्चर्य में पड़ गये और मेरे Merits में आने से सिर्फ 13 अंक कम थे। उस दिन से पापा को लगा कि मेरे अन्दर एक सफल व्यक्ति बनने के गुण है और आज मैं जो कुछ भी हूँ उसके पीछे मेरे पापा नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव, मेरे गुरू प्रोफेसर एस.पी. श्रीवास्तव, मेरे अभिभावक समान प्रोफेसर बलराज चौहान एवं प्रो. ए.एन. सिंह का बहुत बड़ा हाथ है।

सन् 1994 में मुझे यह लगा कि मुझे परास्नातक की पढ़ाई करने हेतु विदेश में दाखिला लेने का प्रयास करना चाहिए। मैंने उस दिशा में प्रयास भी किये और मुझे युनाइटेड किंगडम के कुछ विश्वविद्यालयों में दाखिला भी मिल गया जिनमें लंदन की कार्डिफ विश्वविद्यालय प्रमुख है। मुझे छात्रवृत्ति मिलने की भी संभावना थी जिसके लिए मुझे दाखिला लेने के उपरान्त लंदन में एक परीक्षा देनी थी। परास्नातक की पढ़ाई हेतु उस समय लगभग 8 लाख का खर्च था। मैं जानता था कि मेरे पिता के पास इतना पैसा नहीं है परन्तु जब मैंने उनसे पूछा कि मुझे जाना चाहिए कि नहीं तो उन्होंने कहा कि में तुम्हें घर बेचकर पढ़ाई के लिए पैसे दे सकता हूँ परन्तु तुमने यह सोचा है कि तुम्हारे तीन भाई–बहन और भी हैं जिनका भविष्य दाँव पर लग सकता है। यदि पढ़ाई खत्म होने के उपरान्त तुमको अच्छी नौकरी न मिल पाई तो क्या होगा? चूँकि उन्होंने बचपन से ही इस तरह की समस्याएं देखी थीं इसलिए वो आशंकित थे। उसी समय मैंने निर्णय लिया कि मैं अपने भाई–बहनों एवं परिवार के भविष्य की कीमत पर विदेश नहीं जाऊँगा और ईश्वर ने यदि चाहा तो मैं अपने कार्यों द्वारा विदेश यात्रा करूँगा। ईश्वर ने मेरी इच्छा पूरी की और मुझे एक बार विदेश में नौकरी मिली तथा अभी तक 2–3 बार विदेश यात्रा करने का मौका मिला। यह सब उस महान पिता के आर्शीवाद का ही फल है।

घर में पूजा का एक दृश्य

भाई सुरेश कुमार श्रीवास्तव, अनिकेत,
नमिता एवं दादी

सुरेश कुमार श्रीवास्तव, पोता अनिकेत एवं चाची

पिता जी को 2007 में Paralysis का attack पड़ा और उनके बाए अंग की तरफ उसका प्रभाव था जिसकी वजह से उनका बिस्तर तक से उठना बैठना मुश्किल हो गया था परन्तु उनके अन्दर इतनी आत्मशक्ति थी कि उस स्थिति में भी वो निर्भर नहीं रहना चाहते थे। मैंने उनसे कहा कि अब आपको मैं भोपाल ले चलूँगा तो इस डर कि वजह से कि उनको अपना घर छोड़कर भोपाल जाना पड़ेगा उन्होंने अपना खूब ख्याल रखा और एक महीने के अन्दर उनकी तबियत में इतना सुधार हो गया कि वो स्वयं अपना कार्य करने लगे। परन्तु उनकी आँखों की रोशनी चली गई। 2007 से ही उनके जीवन की दिनचर्या बदल गई। उन्हें इतना पढ़ने लिखने का शौक था परन्तु आँखों की रोशनी धुंधली हो जाने पर भी वो अखबार की Headline पढ़ना नहीं भूलते थे। हम लोग जब भी पास में बैठते तो वो अपने बचपन की, अपने संघर्ष की, अपने माता–पिता की बातें बताया करते थे और जीवन के मूल्यों से परिचित कराते। उनकी बातें आत्मसात् करने का मुझे सौभाग्य मिला और अपने जीवन के हर क्षण में मैं उनको और उनकी शिक्षा को याद करता हूँ और उनके बताये हुए रास्ते पर ही चलने का प्रयास करता हूँ और मुझे ऐसा महसूस होता है कि उनकी मृत्यु के पश्चात् उनकी आत्मा मेरे शरीर में निवास करती है और तब मैं अपना हर कार्य उनको समर्पित करके ही करता हूँ।

जून 2009 में पापा जी को फिर एक बार Paralysis का attack पड़ा वो अपने कपड़े उतार कर फेंकने लगे और उनकी आवाज़ चली गई। मैं अपने मित्र निखिल मौर्य एवं राजेश साहनी के साथ Dinner पर गया था और उसी समय घर से फोन आया कि पापा की तबियत बहुत खराब है। जैसे ही मैं घर आया और उनकी स्थिति देखी तो लगा कि अब वो शायद नहीं बचेंगे। हम लोग तुरन्त उनको अवध अस्पताल ले गयें जहाँ डाक्टरों को लगा कि सोडियम पोटेशियम की कमी है और जब उनका CT Scan कराया गया तो Paralytic attack confirm हो गया। मैंने तुरन्त निर्णय लिया कि उनको डा0 अतुल रस्तोगी को दिखाऊँगा और उन्हें निशात अस्पताल में भर्ती करा दिया। डा0 अतुल रस्तोगी जी का इलाज इतना सटीक और अच्छा था कि दो दिन के भीतर ही उनकी आवाज़ भी वापस आ गई और वो ठीक हो गये। जिस दिन वो ठीक हो गये उसी रात को मैं अस्पताल में उनके कमरे के बाहर बैठा था उन्होंने मेरे बड़े भाई मनीष से मुझे अन्दर बुलवाया और डाँटने लगे कि तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई मुझे अस्पताल में भर्ती कराने की। मुझे कुछ नहीं हुआ है और तुरन्त वापस ले चलो। मुझे उस समय तो बहुत बुरा लगा परन्तु जब वह वापस आ गये तो एक दिन मुझे समझाने लगे कि मैं चाहता हूँ कि मेरी मृत्यु मेरे अपने घर में हो और यदि मैं बीमार पड़ जाऊँ तब भी तुम मुझे अस्पताल में भर्ती मत कराना। मैंने तिनका–तिनका करके थोड़ा सा पैसा जोड़ा है जो मेरे परिवार, पोते, पोतियों के भविष्य के लिए है और अगर मुझे अस्पताल में भर्ती करा दिया तो सारा पैसा खत्म हो जायेगा और मेरी इच्छा है कि मैं अपने परिवार और उसकी पीढ़ी के लिए रोटी, कपड़ा और मकान का इंतजाम कर जाऊँ। जो आर्थिक परेशानियाँ उन्हें बचपन से झेलनी पड़ी वो उनके परिवार को न

स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव, मनोरमा श्रीवास्तव,
प्रभा श्रीवास्तव एवं विजय विक्रम श्रीवास्तव (तेज)

इलाहाबाद के परिवार के सदस्यगण

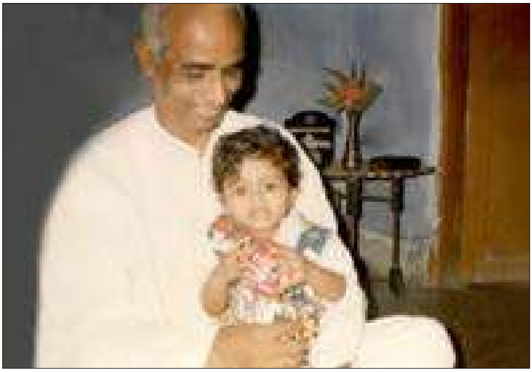

स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव पोते अनिकेत के साथ

झेलनी पड़े इसलिए उन्होंने ऐसा किया। उनका कहना था कि दरिद्रता अभिशाप है और इंसान को इतनी मेहनत करनी चाहिए कि दरिद्रता को दूर करके एक सीधा साधा जीवन व्यतीत कर सके।

5 जुलाई 2009 को हमने उनका 73वाँ जन्मदिन मनाया। यह दिन हमारे लिए अत्यन्त ही महत्वपूर्ण था क्योंकि एक ज्योतिषी ने पापा जी को बताया था कि यदि वह अपने जीवन का 73वाँ वर्ष पार कर लेंगे तो वह लगभग 15 वर्ष का जीवन और जियेंगे। जब जून 2009 को Attack के बाद उनको जीवनदान मिला तो मुझे विश्वास हो गया कि अब पापा जी कुछ समय तक और जिन्दा रहेंगे और उस दिन हमने केक मंगवाया, पापा जी ने अपने सम्पूर्ण जीवन में पहली बार केक काटा और मुझे गले से लगाया। वह क्षण बहुत ही भावुक क्षण थे और हमें तनिक भी एहसास नहीं था कि यह उनके जीवन का अन्तिम जन्मदिन हम लोग मना रहे है।

सितम्बर 2009 में मुझे बैंकाक जाना था तो उस दिन पापा जी ने पूछा कि तुम्हें कुछ पैसे तो नहीं चाहिए। मैंने पापा से कहा कि सब कुछ आपका ही दिया तो है। जब मैं बैंकाक में था उन दिनों कुछ रिश्तेदार आये और उन्होंने पापा जी से गलत तरीके से बात की और धमकाया भी। इस सदमें से उन्हें लगा कि आज मैं लाचार हो गया हूँ तो इन लोगों की इतनी हिम्मत कि मुझसे तेज आवाज़ में बात करे सके। जब मैं बैंकाक से लौटकर आया तो भी उन्होंने मुझे नहीं बताया।

28 सितम्बर 2009 के आसपास उन्होंने मुझे 50,000 रूपये दिये और कहा कि घर बहुत गन्दा हो गया है तुम घर की पुताई करवा दो। 2 अक्टूबर 2009 को मैं करीब 15000 रूपये का पुताई का सामान लेकर आ गया था। उस दिन जब शाम को मैं और पापा जी जब बात करे रहे थे उन्होंने मुझे वह घटना और अपनी एक दो परेशानियाँ बताई। उन्होंने मुझे Financial Planning करने की भी सलाह दी । तब मैंने पापा जी से कहा भी कि अभी क्या जल्दी है फिर कभी साथ में बैठेंगे तब आपसे सीख लूँगा। फिर उस दिन मैं उनकी दवाईया, च्वयनप्राश, इत्यादि लेने चला गया। रात में देर से लौटने पर मेरी पापा से मुलाकात नहीं हो पायी और मैं ऊपर सोने चला गया।

3 अक्टूबर 2009 को सुबह 4:30 बजे के करीब वह उठकर बाथरूम गये और पोते अनिकेत को जगाया कि तुम पढ़ो और उससे कहा कि मेरी तबीयत ठीक नहीं है और चाहे मुझे कुछ भी हो जाये पर तुम Exam देने जरूर जाना। फिर उसके बाद वह बिस्तर पर लेट गये और फिर कभी नहीं उठे। सुबह 6 बजे के करीब वह अपने प्राण त्याग चुके थे। दौड़कर अनिकेत ने मुझे बुलाया और कहा कि बाबा उठ नहीं रहे हैं और मैं जैसे ही नीचे आया तो मुझे आभास हो गया कि उन्होंने प्राण त्याग दिये है। चूंकि वह पहले बीमारी के कारण बेहोश हो जाते थे तो मैंने मोहल्ले के डाक्टरों से कहा कि कृपया एक बार देख लीजिए परन्तु सबने कुछ न कुछ बहाना बना कर घर आने से इन्कार कर दिया। फिर मैंने आफिस से एम्बुलेन्स मंगवाई और उनको पास के एक नर्सिंग होम में ले गया जहाँ डाक्टर ने बता दिया कि उनका देहान्त हो गया

स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव मित्रों एवं मेरे (मृदुल) साथ

चचेरे भाई गिरीश श्रीवास्तव एवं स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव
एवं मित्र श्री डी.पी. दीक्षित

अपने गुरू, अभिभावक और प्रेरणास्रोत
श्री बलराज चौहान के साथ डॉ. मृदुल श्रीवास्तव

है। हम उनके मृत शरीर को घर ले आये और सभी रिश्तेदारों को दिल्ली, इलाहाबाद, झांसी और लखनऊ में सूचित किया। चूँकि हिन्दू धर्म की रीतियों के अनुसार पिता की चिता को ज्येष्ठ पुत्र ही आग देता है तो हमें उनका इंतजार तो करना ही था। मैंने जैसे ही आफिस में सूचना दी वैसे ही बलराज चौहान सर घर आये और मुझे हिम्मत दी। उन्होंने मुझे इतनी अच्छी तरह समझाया और शक्ति दी कि मैं छोटा होते हुए भी पिताजी के अन्तिम संस्कार के इंतजाम को हिम्मत से कर सका।

सभी दोस्तों एवं रिश्तेदारों को सूचित करने के बाद जब मैं अन्तिम संस्कार एवं पूजा पाठ के सामान के लिए पैसे देने लगा तो मुझे उस समय रोना आ गया और तुरन्त मन में ख्याल आया कि मेरे पिता इतना स्वाभिमानी थे कि अपने अन्तिम संस्कार के लिए वो मुझे पैसे दे गये थे। पुताई के लिए जो 50,000 रूपये उन्होंने मुझे दिये थे उसमें से 35,000 तो बचे ही थे और वहीं उनके अन्तिम संस्कार के लिए पर्याप्त थे। अगले दिन 4 अक्टूबर 2009 को जब सभी लोग एकत्र हो गये तो जब हम उनकी अर्थी को लेकर बैकुण्ठ धाम जाने लगे उस समय बहुत बरसात हुई और हम लोग भीगते हुए उनके मृत शरीर को बैकुण्ठ धाम ले गये। ऐसा लग रहा था कि मानों उनकी मृत्यु पर परमात्मा भी आँसुओं से उनका स्वर्ग में स्वागत कर रहे हों। जैसे ही हम लोग उनकी अर्थी को लेकर बैकुण्ठ धाम पहुँचे, बरसात बन्द हो गई और हमने हिन्दू रीति रिवाज से उनका अंतिम संस्कार कर दिया।

अगले दिन हमें उनकी अस्थियाँ लेकर इलाहाबाद संगम जाना था। हम लोग जब संगम पहुँचे, तो मुझे ऐसा लगा कि पापा जी मुझे बता रहे हैं कि मेरा बचपन संगम तट पर बीता और आज मेरी अस्थियाँ उसी संगम में विसर्जित की जा रही है। जब मैंने गंगा जी में उनकी अस्थियाँ विसर्जित कर रहा था उसी समय मैंने प्रण लिया कि मैं अब आगे का जीवन मैं उनके बताये रास्ते पर चलूँगा और जीवन की बड़ी से बड़ी परेशानियों का सामना हिम्मत से करूँगा। मुझे अच्छी तरह याद है कि मैं जब भी उनसे कहता था कि आप चिंता मत किया करिये आपकी तबियत ठीक नहीं रहती आप केवल अपना ध्यान रखा कीजिए। तो वो मुझसे कहते थे कि मैं घर का मुखिया हूँ और मैं सबकी चिन्ता नहीं करूँगा तो और कौन करेगा। आज स्वार्थ की इस दुनिया में कोई अपने बारे में न सोचकर सबके बारे में सोचे तो इससे बड़ा आदर्श क्या होगा ? वह जब भी हमसे नाराज होते तो अत्यन्त ही सम्मानसूचक शब्दों जैसे महानुभाव, महाशय का उपयोग करते थे और हम समझ जाते थे कि पापा जी कुछ नाराज है।

उनकी एक आदत थी कि वो किसी की भी बुराई पीठ पीछे नहीं करते थे। एकदम खरा–खरा बोलना फिर चाहे किसी को अच्छा लगे या बुरा। पहले मुझे यह बुरा लगता था पर आज मुझे लगता है कि दिल का साफ होना और खरा बोलना एक बहुत ही अच्छी आदत है और इससे जो भी लोग आपके साथ जुड़ते हैं। उनकी यह शिक्षा भी मुझे प्रेरणा देती है कि **"नेकी कर दरिया में डाल"**। मैंने भी जीवन में अब एक उसूल बनाया है कि अपनी क्षमतानुसार सभी की मदद करूँगा और एक स्वाभिमान एवं सम्मान के साथ जीवन जीते हुए मृत्यु को प्राप्त करूँगा।

स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव पुत्र मनीष के साथ
पूजा करते हुए

चचेरे भाई गिरीश श्रीवास्तव एवं मित्र अजमत अली
के साथ स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

ज्येष्ठ दामाद मुकेश श्रीवास्तव एवं अन्य मित्रों के साथ
स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

अध्याय–4

परम मित्र अश्विनी भार्गव के संस्मरण

श्री अश्विनी भार्गव अपनी और पिता जी की दोस्ती के बारे में बताने लगे तो उन्होंने बताया कि मेरे पिताजी नरेन्द्र (रामू) 45 कोठा पार्चा, इलाहाबाद में प्रथम तल पर रहते थे। उनके घर के नीचे एक श्री पाठक जी थे और और वो 9th Class में फेल हो गये। अश्विनी जी, पाठक जी के पास अक्सर जाते थे जहाँ पर उनकी मुलाकात मेरे पिता जी से हुई।

बचपन से ही पिताजी 2 ट्यूशन 30 रूपये प्रतिमाह की पढ़ाते थे जिसमें उन्हें सभी विषय पढ़ाने पड़ते थे। उन्हें गणित विषय में अत्यन्त रूचि थी और घर की छत के ऊपर टीन के नीचे वो पढ़ाते थे। उन्होंने ऊपर ही पानी पीने के लिए एक घड़ा रखा हुआ था और वो लोग 1 आने के गुड़ के सेव लेकर आते थे। उसको वो लोग खाते और पढ़ते थे। शुरू से ही पिताजी जुझारू प्रकृति के व्यक्ति थे।

रात के 9:30 बजे पिताजी अपने एक मित्र दिनेश के साथ अश्विनी जी के घर पहुँचते थे और उनसे कहते थे कि पढ़ रहे हो देखते हैं कैसे Exam पास कर पाओगे। वो तीनों मित्र रात में 10 बजे रामबाग, इलाहाबाद के हनुमान मन्दिर में जाते थे और प्रसाद खाने के पश्चाते सामने के स्टेशन के सामने स्थित एक पंजाबी का होटल था जिसमें वो लोग चाय पीते थे। उस समय एक चाय एक आने की मिलती थी और वो लोग 3 आने बारी–बारी से खर्च करते थे और उसके पश्चात् घर आकर 2 बजे रात तक पढ़ाई करते थे।

घर के पास में ही एक ईदगाह था जहाँ वो लोग क्रिकेट खेलते थे। शाम को वो लोग 5 stone क्रिकेट या फुटबाल खेलने के लिए अवश्य मिलते थे। पिताजी बालिंग बहुत अच्छी करते थे। 1960 में अश्विनी भार्गव लखनऊ में गये और 1961 में पिता जी ने लखनऊ आकर सचिवालय सेवा join कर ली। उन्होंने 30 रूपये प्रतिमाह के किराये पर एक कमरा ले लिया। अश्विनी जी और पिताजी उस समय 22 रूपये प्रतिमाह के कूपन खरीदकर मिश्रा भोजनालय में खाना खाते थे।

दिनेश जी एवं मुरारी मोहन राय 1963 में सचिवालय सेवा में चयनित हो गये और वो लोग पिताजी के साथ उसी कमरे में रहने लगे। उसी के पश्चात् पिताजी ने एक Plot 500 रूपये में जेल रोड पर खरीदा उस समय दोनो लोग साइकिल से ही दफ्तर जाते थे और पिताजी की प्रथम Posting गृह विभाग में हुई। दोपहर को 1–1:30 बजे के बीच दोनों लोग साथ में Lunch करते थे तथा चाय पीने के लिए हजरतगंज का एक चक्कर लगाते थे। दोनो लोग हमेशा से ही sharing करके ही पैसा खर्च करते थे। शाम को नरही, हजरतगंज, लखनऊ के एक होटल में अश्वनी भार्गव, पापा जी, दिनेश जी एवं मुरारी मोहन राय सभी लोग साथ में साग खाते थे। पापा जी जब भी अमीनाबाद जाते भार्गव अंकल से जरूर मिलते थे। वह हमेशा से ही काम में बहुत sincere थे।

इलाहाबाद में इतवार को संगम जाकर जलेबी खाते थे। पापा जी अपने सभी शिक्षकों में से जी.के. मजूमदार जो कि CMP Degree College में अंग्रजी पढ़ाते थे की बहुत इज्जत करते थे।

परम मित्र श्री जे.पी. श्रीवास्तव, पोते अनिकेत एवं सबसे प्रिय चचेरे भाई
स्व. अशोक कुमार राय के साथ स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

हमारी दादी, ताई जी एवं किरन ताई जी व अन्य

दादी, पोता एवं दामाद मुकेश श्रीवास्तव

अध्याय–5

जीवन में माँ की महत्ता

अज्ञातवास के समय यक्ष ने युधिष्ठिर से प्रश्न किया था–पृथ्वी से भारी क्या है ? तो युधिष्ठिर ने तुरंत जवाब दिया – पृथ्वी से भारी माँ होती है। यह बिल्कुल सही उत्तर था। कारण, पृथ्वी तो सिर्फ दुनिया भर के भार का वहन करती है, लेकिन मां अपने बच्चों के दुख–दर्द, इच्छाओं–अनिच्छाओं, उनकी भूख–प्यास और उनके हर कार्यकलाप को न सिर्फ वहन करती है, बल्कि उसका निराकरण भी करती है। बच्चे को जरा सी चोट लगती है, तो दर्द मां को होता है। वहीं बच्चा खुश होता है, तो मां भी प्रफुल्लित हो जाती है।

महर्षि दयानंद ने कहा था– 'जिस तरह माता संतानों को प्रेम देती है और उनका हित करना चाहती है, उस तरह और कोई नहीं करता। मां ममतामयी है, जीवनदायिनी है। वह विशाल हृदय व परोपकारी है। 'माता' शब्द में न जाने कैसा माधुर्य है कि वह जिस शब्द में जा मिलता है, उसी में एक अपूर्व सरलता व हृदयाग्राही प्रभाव उत्पन्न हो जाता है। जैसे – धरती माता, भारत माता, गो माता...। मां की सेवा से बेटा कभी उऋण नहीं हो सकता। मां का प्रेम निस्स्वार्थ होता है। पुत्र की सेवा करते हुए मां यह नहीं सोचती कि बड़ा होकर उनके उपकारों का प्रतिफल मिलेगा। मां अपने बच्चे को संस्कारशील बनाने का पूरा यत्न करती है। उसमें स्नेह, वात्सल्य, त्याग, ममता और सेवाभाव अपने चरम पर होते है। वह बच्चे पर सर्वस्व निछावर कर देती है। वह उसे पाने में बड़ी वेदना का सामना करती है, पर प्रसन्नतापूर्वक सहन करती है। उसकी सारी पीड़ाओं की कालिख बच्चे के मुख्य पर एक मुस्कान देखकर धुल जाती है। मां सिर्फ देना जानती है, लेना नहीं।

आज माता–पिता की सेवा लोग जीवित रहते हुए नहीं करते, लेकिन शरीर त्यागने के बाद श्राद्ध करते है। लेकिन वैदिक धर्म कहता है कि जीवित माता–पिता को उनकी आवश्यकताओं के अनुसार श्रद्धा व प्रेम से पूर्ण करना श्राद्ध तथा उन्हें सदा तृप्त रखना ही तर्पण कहलाता है।

माँ का स्थान ईश्वर के बराबर है। क्योंकि ईश्वर ने मानवता के सृजन का उत्तरदायित्व मां को ही दिया है। इतना ही नहीं, माता अबोध शिशु का सम्यक पालन–पोषण कर उसे इस योग्य बनाती है कि वह विश्व संस्कृति के निर्माण में सहभागी बन सके।

'तैत्तिरीय ब्रह्मम' में मातृ देवो भवः कहकर मां की देवता की भांति पूजा करने की

साली श्रीमती सुमित्रा श्रीवास्तव (बिट्टी)
एवं पुत्री ममता श्रीवास्तव

श्री विजय विक्रम श्रीवास्तव

स्व. श्रीमती मनोरमा श्रीवास्तव एवं
बहु सुमन श्रीवास्तव

स्व. श्री राजेन्द्र प्रसाद श्रीवास्तव
(ताऊ जी) किरन ताई जी एवं बन्टू

बात कहीं गई है। इसी प्रकार 'शतपथ ब्राह्मण' में माता को पहला गुरू माना गया है। 'छांदोग्य उपनिषद' में तो माता की महिमा के वर्णन में इतना आगे है कि उसमें कहा गया है कि स्वप्न में भी यदि मातृ–शक्ति के दर्शन हो जाएं, तो मनुष्य को समृद्धि की प्राप्ति होती है।

मां की महिमा शब्दों में व्याख्यायित नहीं हो सकती। हम ईश्वर की वंदना करते है, तो सबसे पहले उसे मातृ–रूप में देखते है– त्वमेव माता च पिता त्वमेव....। जब भी हम कष्ट में होते है, तो मुंह से एक ही शब्द निकलता है– मां। बच्चे का पहला विद्यालय घर होता है और उसकी पहली गुरू मां ही होती है, जो उसके भीतर संस्कारों के बीच डालती है। हमें यह समझ लेना चाहिए कि मां के ऋण से हम कभी उत्ऋण नहीं हो सकते। उचित यह होगा कि हम तन–मन से अपनी मां की सेवा करें।

मुझे अपनी ज़िन्दगी में सिर्फ एक ही सौभाग्य मिल पाया है कि अपनी माँ के अन्तिम क्षणों में मुझे अपनी माँ की सेवा करने का मौका मिला। लगभग डेढ़ महीने का समय मेरे लिए परीक्षाओं से भरा हुआ और अपनी माँ के साथ अधिक से अधिक समय बिताने और हम लोगों का भावनात्मक रूप से जुड़ना मुझे हर पल माँ की याद दिलाता है।

जब छोटा था तब माँ की शैय्या गीली करता था
अब बड़ा हुआ तो माँ की आँखे गीली करता हूँ
माँ पहले जब आँसू आते थे... तब तुम याद आती थी
आज तुम याद आती हो.... तो पलकों से आँसू छलकते है...

जिन बेटों के जन्म पर माँ बाप ने हँसी खुशी से मिठाई बाँटी
वही बेटे जवान होकर आज माँ–बाप को बाँटे...
लड़की घर छोड़े और लड़का मुँह मोड़े...
माँ बाप की करूण आँखों में बिखरे हुए ख्वाबों की माला टूटे

स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

अनुपमा, नीलम एवं ममता श्रीवास्तव

स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव, श्री विनोद कुमार श्रीवास्तव
तथा अन्य रिश्तेदार

चार वर्ष तेरा लाड़ला रखे तेरे प्रेम की आस,
साठ साल के तेरे माँ बाप क्यों न रखे प्रेम की प्यास?
जिस मुन्ने को माँ–बाप बोलना सिखाऐ...
वही मुन्ना बड़ा होकर माँ बाप को चुप कराए।

पत्नी पसंद से मिल सकती है... माँ पुण्य से ही मिलती है,
पसंद से मिलने वाली के लिए,पुण्य से मिलने वाली को मत ठुकराना...
अपने पाँच बेटे जिसे लगे नहीं भारी... वह माँ
बेटों की पाँच थालियों में क्यों अपने लिए ढूंढे दाना।

माँ–बाप की आँखों से आये आँसू गवाह हैं
एक दिन मुझे भी ये सब सहना है
घर की देवी को छोड़, मूर्ख
पत्थर पर चुनरी ओढ़ाने क्यों जाना है...

जीवन की संध्या में आज तू उसके साथ रह ले
जाते हुए साए का तू आज आशीष लेने
उसके अँधेरे पंथ में सूरज बनकर

जीवन की संध्या में आज तू उसके साथ रह ले
जाते हुए साए का तू आज आशीष ले
उसके अँधरे पथ में सूरज बनकर रोशनी कर
चार दिन और जीने चाह उसमें निर्माण कर...

तू ने माँ का दूध पिया है....
उसका फर्ज अदा कर....
उसका कर्ज अदा कर....

स्व. विद्यावती श्रीवास्तव

पत्नी मनोरमा श्रीवास्तव

दादी एवं ममता श्रीवास्तव

पत्नी मनोरमा श्रीवास्तव एवं पुत्री ममता श्रीवास्तव

भगवान का दूसरा रूप है मां
उनके लिए दे देंगे जां
हमको मिलता जीवन उनसे
कदमों में है स्वर्ग बसा
संस्कार वह हमें सिखलाती
अच्छा–बुरा हमें बतलाती
हमारी गलतियों को सुधारती
प्यार वह हम पर बरसाती
तबीयत अगर हो जाए खराब
रात–रात भर जागते रहना

मां बिन जीवन है अधूरा
खाली–खाली सूना–सूना
खाना पहले हमें खिलाती
बाद में वह खुद है खाती
हमारी खुशी में खुश हो जाती
दुख में हमारे आंसू बहाती
कितने खुशनसीब हैं हम
पास हमारे है मां
होते बदनसीब वे कितने
जिनके पास न होती मां

स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव नातिन
अक्षिता एवं भाव्या के साथ

अविनाश श्रीवास्तव एवं मृदुल श्रीवास्तव

नातिन अक्षिता श्रीवास्तव

स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव पोते अनिकेत एवं
नातिन भाव्या के साथ

स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव
पोते अनिकेत के साथ

स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव
पोते आयुष के साथ

अध्याय–6

स्व. श्रीमती मनोरमा श्रीवास्तव : जीवन परिचय (19.11.1941–4.10.2012)

पिताजी के देहान्त के बाद माँ काफी अकेली हो गई थी परन्तु उन्होंने अपनी हिम्मत से हम सभी को हमेशा सम्बल दिया। मुझे कभी भी इस बात का एहसास नहीं होने दिया कि पिता की मृत्यु के उपरान्त मैं अकेला हूं। वो हमेशा मुझे हिम्मत देती और उन्होंने हमेशा मुझ पर अपने अटूट विश्वास को दिखाया। उनके द्वारा कहे हुए यह शब्द कि मेरे पिताजी हमेशा उनसे कहते थे कि "उनकी मृत्यु के पश्चात् मैं अपनी माता का हमेशा ख्याल रखूंगा।" यह माता के मुख से सुनकर कोई भी पुत्र अपने को गौरवान्वित महसूस करेगा तथा माता–पिता का यह अटूट विश्वास कि उनका कोई पुत्र उनके बुढ़ापे की लाठी बनकर सहारा देगा। यह एहसास ही मन को भाव विभोर कर देता है। शनैः शनैः दिन गुजरते गये और मैं, मेरी माता जी स्व. श्रीमती मनोरमा श्रीवास्तव एवं पोता अनिकेत अपने पिता स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव की यादों को अपने हृदय में संजोकर एक–एक दिन बिताने लगे। पिता द्वारा छोड़े गये कार्यों को पूर्ण करना ही एक पुत्र का परम कर्तव्य होता है तथा माता का मुझ पर विश्वास करना तथा उसी विश्वास के तहत मुझे सम्पूर्ण परिवार की जिम्मेदारी सौंप देना, एक तरह से मेरे लिए अग्निपरीक्षा के समान था। मेरी दोनों बहनें अपने–अपने परिवार में सुखी थी एवं मध्यम श्रेणी के सम्पन्न परिवारों में उनकी गिनती की जा सकती है। मेरे अग्रज श्री मनीष श्रीवास्तव एक सज्जन, सरल, भोले भाले एवं माता–पिता की इज्जत करने वाले व्यक्ति है परन्तु उन्होंने संघर्ष कम किये। कहते है 'होइए वही जो राम रचि राखा'। पिताजी के निधन से पूर्व, जो परिवार एक छत के नीचे फिर से एक साथ हो गया था वो बिखर गया तथा फिर समस्या आई कि मैं, मेरी माता जी एवं भतीजा अनिकेत अकेले कैसे रहेंगे और घर किस तरह चलेगा। मुझे अपने आफिस के कुछ लोगों का सहयोग मिला तथा हम तीनों अपनी दुनिया में एक दूसरे का सुख दुःख में हाथ थामे बढ़ते रहे। बहनों ने भी अपने फर्ज पूरे किये और छोटी बहन हर साल की तरह 1 महीने के लिए दुबई से लखनऊ आती रही। वह समय माता जी के लिए स्वर्णिम समय होता था। वो अपने सारे साल भर के काम उसके आने के बाद ही पूरी करती थी तथा उन दिनों उनकी प्रसन्नता का ठिकाना नहीं रहता था। धीरे–धीरे जिन्दगी चलती गई और मां का स्वास्थ्य जितना गिर गया था उसी पर ठहरा हुआ था। वो समय पर दवाईयां लेती तथा हम सबका खूब ख्याल रखती थीं। एक बार उनकी तबियत जुलाई, 2011, सुबह 4 बजे अचानक बहुत खराब हो हो गई तथा उनकी स्थिति मरणासन्न हो गई थी। मैं उनको गोद में लेकर निशात हास्पिटल में भागा। मेरा साथ मेरे पड़ोस में रहने वाली भाभी और उनकी उनकी पुत्री ने दिया। वहाँ पहुँचकर जब उनका शुगर टेस्ट किया गया तब पता चला कि शुगर कम होने की वजह से ही उनकी यह हालत हुई है तथा उनको ग्लूकोज चढ़ाने से वह ठीक हो गई तथा होश में आ गई। उनको कुछ घंटो बाद ही घर भेज दिया गया। फिर घर ठीक से चलने लगा और हम तीनों अपनी दुनिया में खुश थे। मैं मम्मी की दवाइयाँ पूरे महीने की एक साथ ही ले आता

स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव साले विजय विक्रम के साथ

स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव भतीजे
श्री के.एन. सिन्हा (गन्नी) के साथ

ज्येष्ठ पुत्री ममता के तिलकोत्सव में रिश्तेदारों एवं
मित्रों के साथ

था और उनको खुश रखने का मैं और अनिकेत हर सम्भव प्रयास करते थे।

मेरे पिता जी इलाहाबाद के रहने वाले थे और मेरी माँ दिल्ली की थी। पिता जी का शुरूआती जीवन अत्यन्त संघर्षपूर्ण एवं अभावों में बीता तथा माँ एक सम्पन्न परिवार से थीं। परन्तु मेरी माँ ने कभी भी उस अतीत की सम्पन्नता को इस घर में परिलक्षित नहीं होने दिया। यद्यपि मेरी माँ सिर्फ हाईस्कूल पास थीं और पिता जी ने उनको पढ़ाने का भी प्रयास किया परन्तु उनका मन नहीं लगा और उन्होंने इण्टर प्रथम वर्ष की परीक्षा के बाद पढ़ाई छोड़ दी।

मेरे माता पिता का विवाह 2 जुलाई 1965 को इलाहाबाद के मम्फोर्डगंज से हुआ था। अक्टूबर 1965 में माँ भी लखनऊ आ गई थी। विवाह से पूर्व ही मेरे पिता जी ने 25 पैसे प्रतिवर्ग फुट की दर से कैलाशपुरी में जमीन ले ली थी। उस समय चारों तरफ जंगल था और आलमबाग एवं कैलाशपुरी के बीच में सिर्फ कुछ ही मकान थे। जिस समय मेरी माँ घर में रहने आई उस समय घर में सिर्फ दो कमरे थे। हमारे बाबा श्री त्रिभुवन नाथ श्रीवास्तव हमारे कैलाशपुरी वाले घर में सिर्फ एक बार आये थे और वह किसी विवाह समारोह में शिरकत करने लखनऊ आये थे।

कैलाशपुरी वाले घर को मेरे माता पिता ने तिनका–तिनका जोड़कर बनाया। इस घर में मेरा जन्म हुआ। मेरी छोटी बहन नमिता का जन्म हुआ तथा उनके पोते अनिकेत का जन्म हुआ। हम तीनों इसी घर में पले–बड़े हुए इसीलिए इस घर से मेरा भावनात्मक लगाव है और मेरी भी अन्तिम इच्छा यही है कि मैं इस घर को खूब अच्छे से maintain कर सकूँ और अपने जीवन की अन्तिम सांस इसी घर में लूँ जिसमें मेरे माता पिता दोनो ने ली।

कहते हैं कि चाहे जितने बड़े आलीशाान मकान में रह लो सुकून का एहसास तो अपने घर में ही होता है चाहे वो टूटी–फूटी झोपड़ी ही क्यों न हो। जब पिताजी की मृत्यु हुई तो हमारे नीचे का घर खाली खाली एवं सूना हो गया। तब मैं नीचे उनके कमरे में रहने लगा जिससे उनका आर्शीवाद एवं उनके द्वारा छोड़े गये कार्यों को पूरा करने का एहसास मुझे प्रतिपल होता रहे। जब माता जी की मृत्यु हुई तब ऊपर का घर खाली–खाली हो गया। मेरे एक पूज्यनीय अंकल श्री जे.पी. श्रीवास्तव ने एक ऐसी बात बताई कि वो मुझे मृत्यु के क्षण तक याद रहेगी। उन्होंने मुझसे कहा कि पिता की मृत्यु से सिर से आसमान (छत्रछाया) खत्म हो जाती है और माता की मरने से धरती का सम्बल और सहारा खत्म हो जाता है। अनाथ होने पर जीवन बहुत कठिन हो जाता है परन्तु सदैव हिम्मत से माता–पिता के आदर्शों को ध्यान में रखते हुए उनके बताये रास्ते पर चलते रहना चाहिए। पापा मम्मी की शादी का भी अलग ही किस्सा था। ज़िन्दगी का इतना बड़ा निर्णय हमारे पिताजी ने अपने पिता (हमारे बाबा) के ऊपर छोड़ दिया था और उन्होंने यह तक कह दिया था कि यदि आप मेरी शादी किसी काली लड़की से भी कर देंगे तो भी मुझे कोई एतराज नहीं है। शादी के समय हमारे नाना ने रू. 1000/–, एक सन्दूक, सिलाई मशीन, पलंग, 22 तोला सोना एवं एक मरफी रेडियो किया था। मेरे पिताजी कोई भी सामान इलाहाबाद से नहीं लाये और उन्होंने अपनी खून पसीने की कमाई से इस घर को बनाया और हम सभी की परवरिश की।

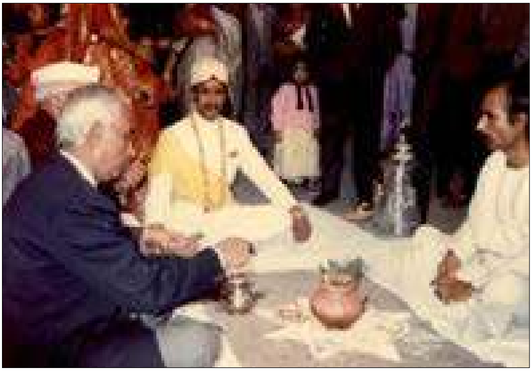

स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव ज्येष्ठ पुत्री ममता श्रीवास्तव का विवाह सम्पन्न कराते हुए

श्रीमती मनोरमा श्रीवास्तव पोते अनिकेत के साथ

मनीष श्रीवास्तव एवं पीयुष श्रीवास्तव

वैसे हमारे खानदान के लोग भी दिल्ली की तरफ से ही आये थे और इसीलिए गाँव की तरफ लोग डंगरहा कायस्थ कहते थे। हमारे पिताजी को साहित्य में अत्यधिक रूचि थी और उन्होंने एक सांध्य दैनिक भी निकाला था जिसका नाम था "पुष्कल"।

मेरी माँ एक बहुत अच्छी गृहणी थीं। वो अकेले ही सारे घर का काम करती और हम सबको संभालती भी थी। वो जब तक बीमार नहीं पड़ीं तब तक हमारे घर को और एक एक सामान को सहेज कर रखना उनका शौक था। अगर हमारे घर में कोई भी एक चीज़ खरीदकर आई तो हमें उसे कभी दोबारा खरीदना नहीं पड़ा। वो हमेशा से ही हर चीज़ का बहुत ध्यान रखती थी। बचपन में मम्मी हमें डांटती भी थीं और कभी–कभी गलती करने पर मारती भी थीं। माता पिता की डाँट या मार में भी अच्छाई छुपी होती है और शायद यही कारण है कि जब हम ज़िन्दगी में कुछ मुकाम हासिल कर लेते है और वापस मुड़कर अतीत में झांकने की कोशिश करते हैं तो हमें उनके न रहने पर उनका मुस्कुराता चेहरा दिखाई पड़ता है जैसे वो कह रहे हो कि बेटा जिस समय हम तुम्हें सही रास्ते पर लाने के लिए तुम्हें डांट या मार रहे थे उस समय तुमकों बहुत बुरा लगा हो। पर सौभाग्यशाली हैं वो लोग जिनको माता पिता का आर्शीवाद एवं छत्रछाया जीवनपर्यन्त मिलता रहता है।

मेरी माँ बहुत टोकती थी कभी–कभी हम झल्ला भी जाते थे पर अब उन्होंने ऐसा मौन धारण कर लिया कि हम उनकी आवाज सुनने को ही तरस रहे हैं। पिताजी की मृत्यु के उपरान्त कई क्षण ऐसे आये कि मैं और मम्मी उनकी बातें करते–करते रोने लगते थे और वो मुझे गले से लगा लेती थी। हमने मम्मी का Mother's day मनाया और वो उस दिन बहुत खुश थीं। मम्मी अक्सर बगल में रहने वाली भाभी और कोमल को बुला लेती थी और उनसे खूब सारी बातें करती थी और उनसे खूब सारी बातें करती थीं। विधि का विधान ऐसा रहा कि मेरी माँ की मृत्यु के समय मैं और अनिकेत दोनों ही घर पर नहीं थे परन्तु बगल वाली भाभी एवं कोमल उनके पास थे। तो पूरा–पूरा दिन बिस्तर और एक सोफे में बैठकर बिता देती थी। बीमारी की वजह से उन्होंने साड़ी पहनना 10–12 साल पहले ही छोड़ दिया था और वो सिर्फ मैक्सी पहनती थीं। माँ क्या होती है, इसका एहसास उनके रहने के बाद होता है। कोई भी दिन ऐसा नहीं जाता था कि वो अगर मुझे रात के 10 बज जायें और फोन करके न पूछें कि तुम कहाँ हो घर कब आओगे उनकी मृत्यु के बाद मेरे कान यह सुनने को तरस गये कि बेटा घर कब आओगे।

जो भी लोग मेरी इस पुस्तक को पढ़े उनसे मैं यह निवेदन करना चाहुँगा कि माता पिता से बढ़कर इस संसार में कुछ नहीं है। उनके चरणों में ही स्वर्ग है और उनके आर्शीवाद में ही प्रगति एवं संतुष्टि। दुनिया में हर रिश्ता मिल सकता है पति, पत्नी, बच्चे, मित्र वगैरह पर माँ पिता नहीं जो बच्चे में लाख दुर्गुण होने के बाद भी हमेशा उसकी भलाई के लिए प्रार्थना करते हैं, अपना पेट काटकर बच्चों को पालते है और निस्वार्थ भावना से त्याग करते हैं। कोई भी माता पिता कभी अपने बच्चों से उम्मीद नहीं रखते कि बच्चे उनके लिए कुछ करें अपितु वो ही अपना सर्वस्व निछावर करते रहते हैं। अतः समय रहते ही अपने माता पिता की खूब सेवा कर लेनी चाहिए नहीं तो जीवन में एक मोड़ ऐसा जरूर आता है जब माता–पिता की कमी खलती है और संसार के सभी रिश्तों से दुःख पाने के बाद में मन करता है कि माता–पिता के आगोश में हमेशा के लिए सो जायें।

ज्येष्ठ पुत्री ममता श्रीवास्तव की विदाई

मनीष, स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव, एवं मृदुल श्रीवास्तव

श्रीमती एच.एम. श्रीवास्तव एवं श्रीमती मनोरमा श्रीवास्तव

आज भले ही मैं कुछ मामलों में unlucky हूँ परन्तु हर पल मेरी आत्मा को एक संतुष्टि का एहसास रहता है कि मैंने उनके अन्तिम क्षणों तक उनकी सेवा की और उनके मरने के बाद भी मैं जब भी उनको बुलाऊँगा वो आकर मुझे संभालेंगे।

मम्मी को समोसे बहुत पंसद थे उनका और अनिकेत का routine था कि वो रोज शाम को चाय समोसा खाती थीं। कभी कभी बगल के घर से भाभी और कोमल आ जाती थीं तो हम सब घर में ही खाना बनाते थे। मैं रोज शाम को घर आकर मम्मी के पास बैठता था उनसे उनके हाल पूछता था और हम लोग खाना खाकर सो जाते थे।

मैं मम्मी से कभी–कभी मज़ाक करता था कि तुम क्यों नहीं प्रधानमंत्री बनीं तुम्हारा और इंदिरा गाँधी का जन्म एक ही 19 नवम्बर को हुआ और विडम्बना देखिए कि मम्मी और इंदिरा गांधी की मृत्यु भी एक ही माह अक्टूबर में हुई तथा तारीख भी लगभग समान मम्मी की मृत्यु 4 अक्टूबर को तथा इंदिरा गांधी की मृत्यु 31 अक्टूबर (3+1=4) को हुई।

पिताजी की मृत्यु के बाद वो काफी अकेली हो गई थीं उसका प्रभाव उनके स्वास्थ्य पर भी पड़ा। वह दिन पर दिन दुर्बल होती जा रही थीं। हमारे जीवन में 19 अगस्त 2012 का दिन बड़ी मुश्किलें लेकर आया वो घर में ही गिर पड़ी जिससे उनके बायें पैर की फीमर की हड्डी टूट गई। उनको बहुत दर्द था फिर मैं उनको गोदी में अकेले उठाकर अपनी कार में बैठाया और Dr. O.P. Singh अंकल की क्लीनिक में ले गया। वहाँ पहुँचकर जब अंकल ने देखा तो मुझसे कहा कि मम्मी का Digital X-ray सरकार डायग्नोस्टिक, महानगर से करवा लो, मैं फिर मम्मी को उसी हालत में गोदी में उठाकर सरकार डायग्नोस्टिक ले गया और X-ray करवाया। X-ray से confirm हो गया था कि हड्डी टूटी है परन्तु जो अलग नहीं हुई थी। अंकल ने कहा कि मम्मी को घर में रखो एवं संभलकर रहें, हो सकता है कि दवाईयों से अपने आप हड्डी जुड़ जाये और आपरेशन न करना पड़े क्योंकि मम्मी बहुत बीमार एवं दुर्बल हैं। आपरेशन झेलना मुश्किल होगा। फिर हम मम्मी को घर ले आये और उनकी सेवा करते रहे। मेरा पहले अगस्त में दुबई जाने का plan था और मम्मी के गिर जाने के कारण मैने programme cancel कर दिया। परन्तु नमिता और प्रभात ने मेरा वीज़ा भेज दिया था और उसे cancel करने में समस्या थी। अतः यह निश्चय हुआ कि मैं सिर्फ 3–4 दिन के लिए दुबई जाऊँगा और जल्दी से वापस आ जाऊँगा। मुझे 29 अगस्त, 2012 को दुबई जाना था और 3 सितम्बर 2012 को वापस आ जाना था। मैं जब दुबई में था तभी मम्मी 31 अगस्त 2012 को फिर गिर पड़ी और उनकी ह्डडी अलग हो गईं। हम बहुत परेशान थे कि क्या किया जाये। 4 सितम्बर, 2012 से पहले पहुंच भी नहीं सकते थे। मम्मी को कितना दर्द हो रहा होगा। उसकी कल्पना मात्र से ही सिरहन होने लगती है। लेकिन मेरी माँ बहुत हिम्मती थी वो बेचारी सारा दर्द खुद ही झेलती रहीं। फिर मैं जब 4 सितम्बर 2012 को लौटकर आया तो मैंने मम्मी का Sugar & Blood Test करवाया क्योंकि डाक्टरों को Jaundice का डर भी लग रहा था। Test में सब normal था फिर 5 सितम्बर को मैंने आफिस से Ambulance मंगाई और उनका X-ray करवाने कृष्णा X-ray टेढ़ी पुलिया ले गया वहाँ पता लगा कि हड्डी अलग हो गई है तो मुझे लगा कि चलो किसी डाक्टर से राय ले लें तो मैं SKD Hospital कृष्णा नगर में आ गया। वहाँ तुरन्त ही उन लोगों ने

होली के अवसर पर परिवार के सदस्य

स्व. सूरज प्रसाद श्रीवास्तव एवं
श्रीमती सुचित्रा श्रीवास्तव (बिट्टी) मौसी

नानी प्रभा श्रीवास्तव, दादी एवं
श्री विजय विक्रम श्रीवास्तव (मामा)

मम्मी को Admit कर लिया और सारे Test करवाने लगे। फिर उन्होंने मम्मी का ECHO करवाने Mahi Diagnostic भेज दिया। ECHO की Report ठीक नहीं आई थी। डाक्टर आशीष सिंह ने मुझे बुलाया और कहा कि कल Operation करेंगे और आप 20,000 रूपये जमा करवा दीजिए और Operation में बहुत ही high risk है क्योंकि हार्ट केवल 44 प्रतिशत काम कर रहा है। मैं फिर अपनी बुआ जो एक Senior Doctor भी है उनसे consult किया तो उन्होंने कहा कि यदि Operation में Death तक का खतरा है तो जान पहचान वाले Doctor से करवाओ और जिनका case समझा हो। उन्होंने कहा कि तुम Dr. O.P. Singh से क्यों नहीं ऑपरेशन करवा लेते। मैं बहुत घबरा गया था और सारी रात में बुआ से बात करता रहा और रोता रहा। फिर सुबह 6–9–2012 को मैंने Doctor से कहा कि मैं Second Option लूंगा। आप मुझे मम्मी से related सारी reports दे दीजिए। Doctors ने मुझसे कहा कि आपको Pathology report की जरूरत होगी Orthopedic की नहीं। मैंने कहा कि मैं सारी रिपोर्ट लूंगा। Operation की बात आते ही Doctors ने मुझे Blood arrange करने हेतु कहा।

उसके बाद मैं, निखिल के साथ Shekhar Hospital पहुंचा। वहाँ मेरा Cousin अविनाश जो एक अच्छा वकील होने के साथ ही साथ अच्छा इंसान भी है, वो वहाँ था। चूंकि अविनाश Shekhar Hospital का Counsel भी है इसलिए मैंने सिर्फ अपना Blood दिया और एक unit blood हमें ऐसे ही मिल गया। 6 सितम्बर की सुबह मैं बुआ जी को लेकर डा. अखिल मेहरोत्रा जो कि एक Heart Specialist हैं उनको रिपोर्ट दिखाई। उन्होंने कहा कि ECHO ठीक नहीं है एक बजे मम्मी को लेकर उनके प्रकाश Diagnostic Center में आ जाना। वो फिर से ECHO करेंगे। मम्मी को मैं डिस्चार्ज करवा कर प्रकाश Diagnostic Center ले गया जहाँ ECHO करने पर report में आया कि उनका Heart लगभग 56% काम कर रहा है। फिर मैं मम्मी को लेकर Dr. O.P. Singh जी के Clinic में आ गया। एक आशा बंधी कि मम्मी शायद ठीक हो जाये। परन्तु मम्मी की हालत देखने के बाद O.P. Singh Uncle बोले कि यहाँ Operation करना ठीक नहीं रहेगा तुम Medical College में Operation करवा लो क्योंकि वहां ICU की Facilities भी रहेगी। फिर मैंने अंकल से request किया कि आप Medical College में किसी से कह देंगे तो हमारे लिए सुविधा हो जायेगी। अंकल ने डा. संतोष कुमार को Phone करके कह दिया कि तुम Operation कर दो। अगले दिन 9–9–2012 हम मम्मी को लेकर Medical College गये और फिर थोड़ी सी भागदौड़ के बाद हमें एक प्राइवेट वार्ड मिल गया और मम्मी के सारे Test दोबारा शुरू हो गये। हमने लारी में दोबारा ECHO कराया, Chest का X-ray दोबारा हुआ और सभी Blood Test हुए। सारी रिपोर्ट दिनांक 11–9–2012 तक प्राप्त हो गई और सभी Department से clear instruction नहीं मिले कि Operation कराया जा सकता है। मैंने सभी घर वालों और रिश्तेदारों को inform कर दिया और 11–9–2012 की रात में Doctors ने फिर कहा कि 2 unit Blood का इंतजाम कर लीजिए। मैंने और निखिल ने एक–एक unit Blood दिया। मैंने एक हफ्ते में दो बार Blood दिया। मुझे मम्मी ने कसम दी थी कि तुम Blood नहीं दोगे। पर मुझे अन्दर से हमेशा लगा कि अगर मेरी माँ को कोई भी जरूरत हो तो वो मेरा अपना कर्तव्य है और मुझे सबसे पहले करना चाहिए। 12–9–2012 को सुबह मम्मी का

स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव, मनीष श्रीवास्तव एवं
श्री के.एन. सिन्हा (गन्नी)

स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव मित्र आशा भार्गव एवं
उनके पति के साथ

शिक्षा विभाग के निदेशक शरदुेन्द्रू, गिरीश श्रीवास्तव
(सब रजिस्ट्रार) एवं स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

Operation start हुआ और डा. संतोष कुमार ने Operation किया। मुझे बीच–बीच में कई सामान ले जाने हेतु Doctors list दे रहे थे। Operation से पहले मम्मी थोड़ा घबराई हुई थीं। उनका मन नहीं था कि आपरेशन हो और हमें भी बहुत डर लग रहा था क्योंकि आपरेशन काफी risk लेकर किया जा रहा था। मम्मी जी का आपरेशन हो गया और वो ठीक–ठाक प्राइवेट वार्ड में आ गईं। सब ठीक चल रहा था हम बहुत खुश थे कि अब बस recover हो जाये तो मम्मी फिर से चलने लगेंगी और हम लोग मम्मी की सेवा करते रहे। उसी बीच मेरे कई आफिस के तथा घर के मित्रगण मम्मी को देखने आये। अविनाश, निखिल, कविता, अजय, ऋषि कुमार जी, राजेश साहनी, के.ए. पाण्डेय, मनीष बाजपेई, श्याम जी, गन्नी भाईसाहब, वाली भाभी, लकी, नीलम दीदी, अनुराधा दीदी, ममता, मुकेश जीजा जी, दिनेश, लगभग रोज मम्मी को देखने आते थे। संजय मेहरा और उसके कर्मचारी, नान बाबू, महावीर, कुलदीप, जयप्रकाश हमारे एवं मम्मी के खाने पीने का बहुत ध्यान रखते थे। मुझे पल–पल यह एहसास रहता था कि मम्मी किसी तरह ठीक हो जायें क्योंकि मेरे लिए माँ के सिवा कोई सहारा नहीं था और पापा जी भी तो मम्मी की पूरी जिम्मेदारी मेरे ऊपर छोड़ गये थे।

17 सितम्बर 2012 की रात को मम्मी की तबीयत अचानक खराब हो गई फिर उनको किसी तरह मेडिकल कालेज के ट्रामा सेन्टर में भर्ती कराया। उस समय रात काटना मुश्किल हो गया था। आस–पास के सभी मरीज कराह रहे थे और मम्मी की तबीयत भी काफी खराब थी। एक एक पल एहसास हो रहा था कि मां ठीक हो पायेगी कि नहीं। 18 सितम्बर की सुबह डाक्टरों ने बताया कि उनकी रिपोर्ट ठीक नहीं है और उनको ICU में shift करके Ventilator पर रखना पड़ेगा। उस समय तक नीलम दीदी भी आ गई थी। घर के लोगों में सिर्फ मैं, ममता और अनिकेत थे। मुझे मम्मी को ICU में shift करते हुए इस बात का एहसास होने लगा कि अब शायद मम्मी कभी वापस नहीं आयेंगी क्योंकि Ventilator पर जाने के बाद शायद ही कोई वापस आया हो। जब मम्मी को ICU में shift किया गया तो उनको ICU में मिलाकर 5 मरीज थे। सभी इतने critical थे कि ICU के अन्दर जाने में ही डर लगता था। पहली रात को ही मम्मी के बगल के बिस्तर में पड़े मरीज का देहान्त हो गया और बाकी सब मरीज भी तड़पते रहते थे। ICU में डाक्टर रोज Chest का X-ray और Blood test करते थे। मम्मी वैसे ही बेचारी बहुत कमजोर थीं और जब उनके शरीर से खून निकालते थे और इंजेक्शन लगाते थे तो उनको कितना कष्ट होता होगा। मम्मी ने बहुत हिम्मत रखी और हर दर्द का सामना किया। उनकी वजह से हम लोगों की हिम्मत बंधी हुई थी। तीसरे दिन ही मम्मी ने कहा कि उन्हें घर ले चलो और उस दिन मैंने सोचा कि हम लोग आपरेशन कराने आये थे। मम्मी होश में भी हैं और बाकी care घर पर भी की जा सकती है। मम्मी की भी इच्छा थी कि जो कुछ भी हो वो घर में ही हो। मेरे माता–पिता के त्याग की निशानी है यह घर। इसलिए हम उनको घर ले आये। उस समय मामा, वीना मौसी और सक्सेना अंकल भी घर में थे।

हम लोगों को लगा कि अब मम्मी धीर–धीरे ठीक हो जायेगी और मैं, मम्मी और अनिकेत अपनी दुनिया में खुश रहेंगे। मम्मी के लिए कविता की मदद से एक संजू डेनियल नाम की सेविका का भी इंतजाम हो गया था। मैंने भी आफिस join कर लिया

राजेश्वरी बुआ परिवार के अन्य सदस्यों के साथ

बहन डा. श्रीमती विनोद कुमारी श्रीवास्तव

स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव का परिवार एवं अन्य

और सब ठीक लगने लगा था। मम्मी भी घर आकर खुश थी। मैं मम्मी से कहता था कि खूब खाने–पीने का ध्यान रखा करो और जल्दी ही सारी दवाईयाँ बन्द हो जायेंगी। मम्मी को हम लोग अपने हाथ से खाना खिलाते, उनको दवाई देते और उनके पास बैठकर बात करते। फिर एक दिन अचानक शाम को उनकी तबीयत बिगड़ गई और मैं तुरन्त उनको निशात हास्पिटल लेकर गया। वहाँ जब checkup कराया तो पता लगा कि sugar level कम हो जाने के कारण ऐसा हुआ था। फिर हम लोग मम्मी को घर ले आये। भगवान की कृपा से सब ठीक चलने लगा। बीच में नीलम दीदी और विनोद बुआ दोनों डाक्टरों से राय लेता रहता था। दीदी कह रही थी कि वो एक दो दिन में घर आयेंगी। फिर अचानक 4 अक्टूबर 2012 को शाम 6 बजे उनकी तबीयत खराब होनी शुरू हो गई। उस समय मैं देवाँ, बाराबंकी से लौट रहा था। अनिकेत अपने स्कूल की कापी लेने बाहर गया था। मम्मी के पास कोमल, कल्पना जी, दीक्षित भाई साहब, राकेश जी के घर के लोग और attendent थी। मुझे रास्ते में लौटते समय फोन आया कि मम्मी की तबीयत बहुत खराब हो गई और बात करते–करते उनके मुंह से खून आ गया और आधे घंटे के अन्छर उनकी तबीयत इतनी खराब हो गई और उन्होंने प्राण त्याग दिये। मरने से एक दिन पहले मम्मी ने मुझे बहुत प्यार किया था और कह रही थी कि उनको मेरी बहुत चिंता रहती है और उन्होंने कहा था कि यदि उनको कुछ हो जाता है तो भी अनिकेत का ख्याल रखना और उसको अपने साथ ही रखना। उन्होंने मुझे अपने से चिपकाकर खूब प्यार भी किया था। मम्मी से मैंने कहा कि मम्मी मुझे छोड़कर कभी मत जाना नहीं तो मैं एकदम अकेला हो जाऊंगा। लेकिन उन्होंने मेरी नहीं सुनी और मुझे छोड़कर चली गई। फिर भी हम लोग एक आस लगाये थे कि शायद थोड़ी सांस बाकी हो। अविनाश मेरे साथ ही था और हम लोग मम्मी को निशात हास्पिटल ले गये जहाँ डाक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया वैसे जब मैं मम्मी को उठाकर और गाड़ी में उनके सर को गोद में रखकर ले जा रहा था उसी समय मुझे एहसास हो गया था कि मम्मी ने प्राण घर में त्याग दिये थे।

मैंने उसके तुरन्त बाद अपनी दुबई वाली बहन को सूचना दी और सभी रिश्तेदारों को बताया, ममता, गन्नी भाई साहब वाली भाभी, किरन ताई जी, कविता, अजय, लकी, निखिल, दीपू, अविनाश सभी आ गये थे। दिल्ली से भी मामा–मामी, विनोद मौसा जी, वीना मौसी, बिन्दा, धर्मेश दादा सभी आ गये। आफिस के भी सभी लोग बलराज सर और सहयोगीगण भी घर आ गये। 5 तारीख की सुबह–सुबह प्रभात, अक्षिता और नमिता आ गये और मनीष का भी परिवार सुबह पहुँच गया। लाल चाचा भी तुरन्त ही इलाहाबाद से चल दिये। दिल्ली के लोग भी 11.30 बजे तक पहुँच गये और 5–10–2012 को हम लोगों ने भैसाकुण्ड, गोमती नगर में जाकर माँ का अन्तिम संस्कार किया। इत्तफाक कहिये कि माँ को जलाने के लिए कोई प्लेटफार्म खाली नहीं था और लोगों ने उन्हें नीचे की तरफ जलाने की हिदायत दी। लेकिन तभी पता चला कि प्लेटफार्म नं. 14 खाली है उसमें मम्मी को जलाया जा सकता है। पापा का अंतिम संस्कार प्लेटफार्म नं. 12 में (बगल में) 4–10–2012 को हुआ था। मम्मी के अंतिम संस्कार के बाद परिवार के लोगों ने कहा कि आर्य समाज रीति से क्रिया कर्म कर दो। वैसे मुझे माँ से इतना प्यार था और लगभग डेढ़ महीने से तो एक एक पल मैंने माँ के साथ गुजारे और प्रार्थना की कि मम्मी

स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव
श्री विजय विक्रम श्रीवास्तव (तेज) के साथ

नमिता श्रीवास्तव, दादी, अनिकेत एवं मनीष श्रीवास्तव

ज्येष्ठ पुत्र मनीष श्रीवास्तव

के अन्तिम संस्कार क अवसर मुझे दिया जाये। वैसे भी पापा मुझे मम्मी की हर तरह की जिम्मेदारी देकर गये थे तो भला कैसे मैं उनको उनके मरने के बाद ठीक से क्रिया कर्म किये बिना छोड़ सकता था। 13 दिन का क्रिया कर्म करने के पीछे एक तर्क यह भी था कि पिताजी की मौत के बाद मम्मी ने कहा था कि बेटा पापा का सारा काम विधि विधान से ठीक से करना। इसीलिए मैंने सोचा कि माँ का भी सारा क्रिया कर्म से सम्बन्धित कार्य पूर्ण विधि विधान से हो। हमने माँ की अस्थियाँ भी इलाहाबाद में गंगा नदी में संगम पर बहाई जहाँ पिताजी की बहाई थीं, उस समय मिथिलेश बुआ, अनीता चाची, विन्दा, मनीष, दीपू, अनिकेत और मैं इलाहाबाद गये थे। चूंकि 17–10–2012 से नवरात्र शुरू होने थे इसलिए हम लोगों ने 16–10–2012 को ही तेरहवीं रखी और इन सब के बीच में माँ की आत्मा हमें छोड़कर चली गई।

अब सिर्फ उनका प्यार, आर्शीवाद एवं यादें ही बाकी है तथा मैंने अपने परिवार के लोगों से सिर्फ यही अनुरोध किया है कि जिस त्याग और समर्पण से हमारे माता–पिता ने हमें इस स्थिति में पहुंचाय है उसका सम्मान करना हमारा परम कर्तव्य है और उनके सपनों को साकार करने का सारा जिम्मा हमारा है। साथ ही साथ हम सभी को यह प्रण भी लेना पड़ेगा कि जिस सामाजिक–आर्थिक स्थिति में हमारे माता–पिता हमें छोड़ कर गये हैं तो हमारा यह कर्तव्य बनता है कि यदि हम उस स्थिति से ऊपर न जा सके तो कम से कम उससे नीचे भी न जायें। शायद हम सब को उसी स्थिति में ही देखकर उन दोनों की आत्मा को शान्ति मिल सके। अपने अश्रुपूरित भावनाओं के साथ माता पिता को श्रद्धांजलि देने के प्रयास में मैं हमेशा तत्पर रहूंगा।

ओशो की यह बात कितनी सत्य है कि तपस्या सिर्फ घर छोड़ने और हिमालय में बैठकर पूजा करने से नहीं होती। तपस्य तो समाज के बीच रहकर अपने कर्तव्यों का निर्वहन करते हुए समस्याओं से जूझते हुए अपने को संसाररूपी मायाजाल से बाहर ले जाकर स्वयं को पहचानने से ही पूर्ण होती है। शरीर नश्वर हैं और एक न एक दिन हम सभी को प्राण त्यागने है तो क्यों ने कुछ ऐसा करके मरा जाये जिससे समाज और परिवार दोनों लाभान्वित हों।

माँ–पिताजी जो शायद आज हमारी अवाज़ न सुन पा रहे हों उनसे यही कहना चाहता हूं कि आपने मुझे बहुत हिम्मत दी है और आज आप भले ही इस संसार में न हों हमारे दिल में, हमारे दिमाग में और हमारी भावनाओं में आप हर पल हर लम्हा जीवित रहेंगे।

मेरी दुनिया है माँ के आँचल में,
सुख की छाँव है वो दुःख के जंगल में।।

बहन डा0 विनोद कुमारी श्रीवास्तव

श्रीमती बीना श्रीवास्तव एवं श्रीमती मनोरमा श्रीवास्तव

पुत्र मनीष श्रीवास्तव

भाजें–(पीयूष श्रीवास्तव एवं विनय श्रीवास्तव)

मेरे पिताजी एवं मेरी माता जी की मृत्यु में काफी समानता थी उसे मैं निम्न तालिका के माध्यम से कहना चाहूँगाः—

	पिताजी	माताजी
नाम	स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव	स्व. श्रीमती मनोरमा श्रीवास्तव
जन्मतिथि	5—7—1937	19—11—1941
मृत्युतिथि	3—10—2009	4—10—2012
मृत्यु का समय	5:45 (सुबह)	6:45 (शाम)
	केवल 3 वर्ष का और कुछ घंटों का ही अंतर मेरी माँ एवं पिताजी की मृत्यु में रहा। एक ही माह एवं लगभग एक ही दिन दोनों की मृत्यु होना मात्र संयोग है या कुछ दैवीय इच्छा।	
वर्षों का अन्तर	3 वर्ष जन्म में	4 वर्ष मृत्यु में
बीमारियाँ	Paralytic attack 2007 फिर कई बार फिर से बेहोश होना एवं Attack पड़ना। High Blood Pressure	Paralytic attack 1998 High Blood Pressure & Sugar
मृत्यु का स्थान	कैलाशपुरी में माँ—पिताजी के स्वयं के द्वारा बनाये गये घर में ही दोनों की मृत्यु हुई और दोनों की परम इच्छा भी यही थी कि उनकी मृत्यु उनके द्वारा बनाये गये घर में हो।	
मृत्यु से पहले	मेरे माता पिता दोनों ही मृत्यु से कुछ दिन पहले अस्पताल में भर्ती हुए। जिस समय यह लग रहा था कि शायद वो अस्पताल से कभी वापस नहीं आयेंगे तब वो दोनों ही ठीक होकर घर वापस आये तथा मृत्यु के समय लगभग आधे घंटे के अन्दर ही दोनों ने शान्ति से मृत्यु को अपने गले लगा लिया।	
अस्थि विसर्जन	चूंकि पिताजी इलाहाबाद में ही रहकर पढ़े व बड़े हुए और वे अपने छात्र जीवन में रोज संगम के तट पर जाते थे अतः मुझे लगा कि मुझे माता एवं पिता दोनों की ही अस्थियों को संगम में विसर्जित करना चाहिए।	

बहन डा0 विनोद कुमारी श्रीवास्तव

बहन मिथिलेश श्रीवास्तव

परम मित्र शीमू

मनीष श्रीवास्तव अपने मित्र के साथ

	पिताजी	माताजी
अन्तिम क्रिया हेतु धन का इंतजाम	मुझे इस बात का हमेशा से ही गर्व है कि मेरे माता–पिता दोनों ही स्वभिमानी और आत्म–विश्वास के साथ जीने वाले व्यक्तित्व थे। उन्होंने अपना जीवन चाहे कितना भी कष्ट सहकर व्यतीत किया हो परन्तु उन्होंने किसी के आगे कभी भी हाथ नहीं फैलाया तथा अपनी मृत्यु के उपरान्त भी अपने अन्तिम संस्कार हेतु वो मुझे पैसे दे गये। कभी–कभी ऐसा लगता है कि पापा–मम्मी दोनों ने ही मुझे बहाने से इसी कार्य हेतु पैसे दिये थे और कहा था कि उनका अंतिम संस्कार ठीक से पूरे रीति रिवाज के साथ हो। दिनांक 1–10–2009 को पापा जी ने मुझे 50,000 रूपये दिये थे और कहा कि घर काफी गंदा हो गया है अतः तुम अपनी देख–रेख में घर की पुताई करवा दो। दिनांक 2–10–2009 को मैं लगभग 10,000 रूपये का सामान ले आया तथा रूपये 40,000 मेरे पास शेष थे। दिनांक 3–10–2009 की सुबह पिताजी की मृत्यु हो गई और सौभाग्यवश उनकी अन्तिम क्रिया में उनके द्वारा दिया गया धन ही लगा। माँ को मैं हर महीने पेंशन निकाल के देता था तथा मम्मी उससे अपने हिसाब से खर्च चलाती थीं, लगभग एक महीने की बीमारी के दौरान मैंने सारा खर्च उठाया परन्तु पता नहीं कौन सी ऐसी दैवीय प्रेरणा थी कि दिनांक 3–10–2012 को माँ ने मुझे पैसे निकालने को कहा। मैं जब शाम को 15000 रूपये निकाल कर लाया तो मम्मी ने मुझसे कहा कि अब तुम ही घर को चलाते हो अतः मेरे पर्स में 500–600 रूपये रख दो और बाकी पैसे खर्च हेतु तुम अपने पास रखो। सिर्फ एक दिन बाद ही मेरे माँ भी 4–10–2012 को मुझे छोड़कर चली गई और उनकी अन्तिम क्रिया में उनके द्वारा पैसा ही लगा। यह कोई संयोग मात्र नहीं है ऐसा लगता है कि मेरे माता –पिता का उनके बनाये घर में मृत्यु को प्राप्त करना, अपने पैसे में अन्तिम संस्कार की क्रिया होना उनके दृढ़ निश्चय एवं इच्छा मृत्यु के वरदान का द्योतक है।	
दाह संस्कार	पिताजी का दाह संस्कार ज्येष्ठ पुत्र मनीष द्वारा दिनांक 4–10–2009 को बैकुण्ठ धाम, गोमती नगर में किया गया।	माता जी का दाह संस्कार कनिष्ठ पुत्र मृदुल द्वारा दिनांक 5–10–2012 को बैकुण्ठ धाम, गोमती नगर में किया गया।

मनीष श्रीवास्तव

सुमन श्रीवास्तव

अनिकेत

अंकिता

आयुष

अध्याय–7

परिवारिक वृक्ष

पिता स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव के पक्ष से

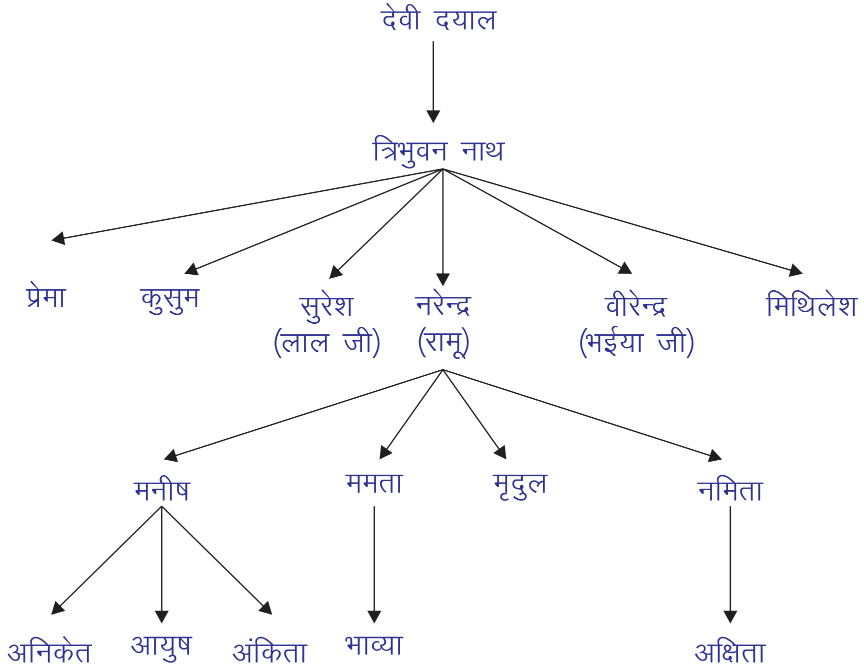

अपने 73वें (अन्तिम जन्मदिन) 5 जुलाई, 2009 के दिन स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

परिवारिक वृक्ष

माँ स्व. मनोरमा श्रीवास्तव के पक्ष से

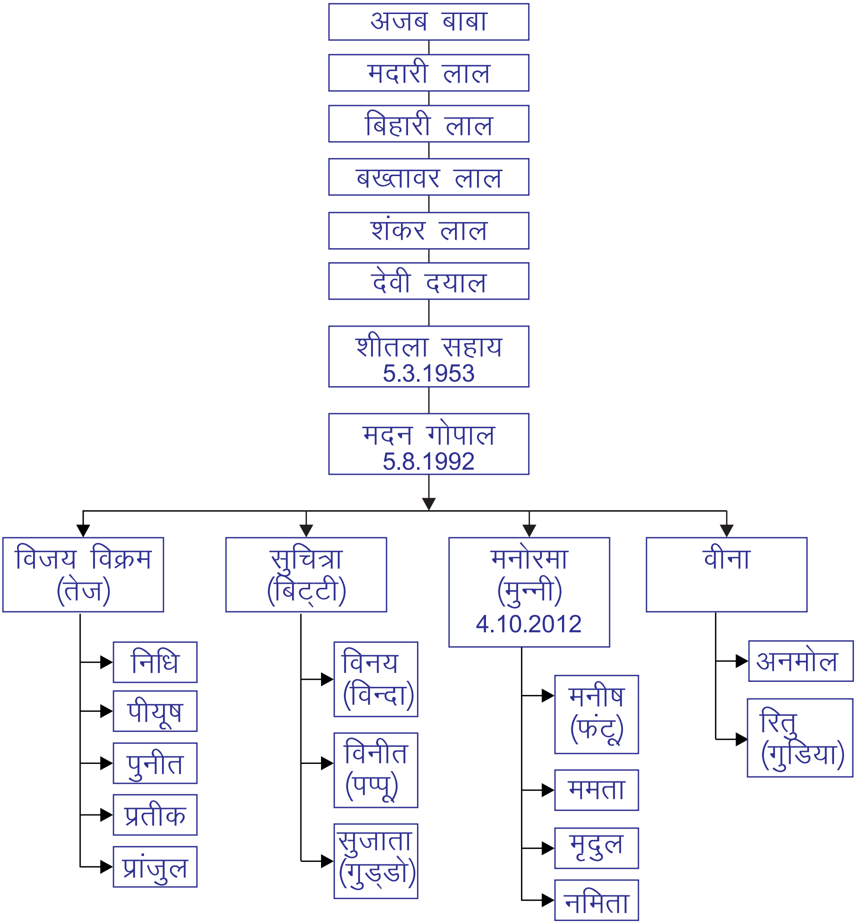

अपने 73वें (अन्तिम जन्मदिन) 5 जुलाई, 2009 के दिन स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

Late Narendra Kumar Srivastava

Career Journey

Name	:	**Narendra Kumar Srivastava**
Address	:	568/9, Kailashpuri, P.O.- Alambagh, Lucknow-226005
Phone	:	0522-451006
Date of Birth	:	31st July, 1937
Date of Retirement	:	31st July 1995
Education	:	B.Sc. (P.C.M.) 1960 from University of Allahabad.
Experiences	:	Above 40 years Service, Under Govt. of U.P. Details of Position held are noted below:

अपने 73वें (अन्तिम जन्मदिन) 5 जुलाई, 2009 के दिन स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

S. No.	Name of the offices	Name of the Post held	Period	Brief resume of work and performance
1.	U.P. Civil Secretariat, Lucknow	Joint Secretary to The Govt of U.P. Revenue Deptt. & Ex officio Dy. Custodian of Enemy Property in U.P. & Director, U.P. Police Housing Corporation Deputy Secretary, The Govt. of U.P. (i) Revenue Deptt.	29.06.93 to 31.07.95 21.07.92 to 28.06.93	Besides routine matters controlled and supervised establishment of about 150 persons of the revenue department of Secretariat: Supervised proposal Kisan Bahi Yojana, Reorganisation of Lekhpal, Halkas, Creation of New Districts and Tahesil administered, property under Govt. estate relief and rehabilitative and enemy property, Budget and other policy matters of the Governance, Constructive activities of the revenue department costing over 05 crore of every year
		(ii) Housing Deptt.	04.09.89 to 20.07.92	Master plans of towns housing scheme of the U.P. Housing Board/ Development Authorities, Land Acquisition, Cases, Land use establishment, cases under RBO Act.
		Under Secretary, The Govt. of U.P. (i) Housing Deptt. (ii) Technical Education was associated with establishment	 21.07.89 to 03.09.89 04.11.86 to 20.07.89	Processed matters relating to the Technical Education in Uttar Pradesh namely Rorkee University and other Engineering Colleges, Sanctioned grant and approved R&D Schemes and established Bundelkhand Institute of Engineering and Technology, Jhansi and Institute of Engineering of Lucknow

दादी परिवार के अन्य सदस्यों के साथ

श्रीमती मनोरमा श्रीवास्तव एवं स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

2	Section Officer	(i). Agriculture Deptt.	24.02.75 to 28.02.78	Processed Schemes relating to production of cereals, all seat, vegetables and fruits. Separate Directorate horticulture and fruit utilization established a number of Potato farms established in growing areas, District Horticulture offices were setup. Besides strengthening of agriculture University Pant Nagar to more Agriculture University of Faizabad and Kanpur were established, administrated matters relating to U.P. Agro also.
		(ii) Transport Deptt.	22.07.80 to 20.07.86	Processed proposal covering the entire organisation of U.P.S.R.T.C. and Transport organisation. Inter-State Transport acquaintance and matter relating to implementations of Motor Vehicle Act/ Rules/ Passenger Tax and U.P. Goods Act.
		(iii) Revenue Deptt.	21.07.86 to 03.11.86	Supervise matters relating to Gram Sabha, Wards distribution of Land among landless and problems relation to possession.
	Tarai Anusuchit Janjati Vikas Nigam Ltd. Lucknow	Administrative Officer (On Deputation basis)	01.03.78 to 21.07.80	Established office Tarai Scratch, Toured Tribal areas, Formulated and implemented various Socio-economic schemes and complied and obligations under the Company Law.

स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव अपने परम मित्र
श्री जे.पी. श्रीवास्तव के साथ

स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव, पोते अनिकेत अपने
परम मित्र श्री जे.पी. श्रीवास्तव के साथ

स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव अपने रिश्तेदारों के साथ

	U.P. Civil Secretariat	Upper Division Assistant, Home Deptt. (Police) (Selected on his basis of Competitive Examination Conducted by U.P. Public Service Commission in 1961 and stood 13th in order of merit	10.07.62 to 23.02.75	Processed matter under Police Act Police Regulations and office manual for superintendents, processed sanctioned of construction schemes relating to police station/ Out post Police/ PAC Lines, Staff Quarters etc. Huge construction activity was started and land was acquired for the purpose
	Examiner, Local Fund Audit, U.P. Allahabad	Assistant Auditor (Selected on the basis of Competitive Exam conducted by U.P.P.S.C. stood 2nd in order of merit	02.05.60 to 19.04.61 & 01.09.61 to 09.07.62	Audited Account to Nagar Palika Hardoi and Town, District Board and Education Institutions of District Hardoi, Saharanpur and Bareilly
	U.P. Universities Enquiry Commission, Allahabad	Assistant Auditor (on deputation)	20.04.61 to 31.08.61	Associated with the Examination of Financial Position of Lucknow and Gorakhpur Universities and Sankrit Vishvidhalaya, Varanasi. Assisted in the draft of reports and recommendations.
	Collectrate Allahabad	Clerk	26.05.55 to 30.04.60	was posted in general office and in the court of SDO, Sirathoo, Allahabad took extensive touring of villages to assist in the inspection of progress of various development scheme by the S.D.O. Also assisted in inspection of Department of Tehsil and Police stations falling under the juridiction of sub division. Processed Criminal and revenue cases and handled correspondence.

After retirements, He was engaged in the Socio-economic development of Tehsil Bindki district Fatehpur and Tahsil Malihabad District Lucknow. Have and aptitude for Rural Development works.

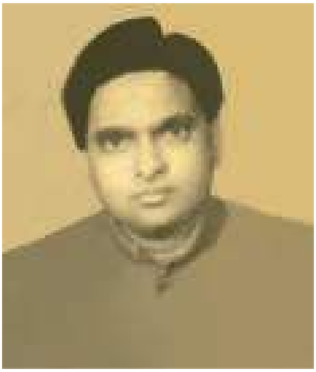

परम मित्र अश्विनी भार्गव

ननकऊ मामा

ननकऊ मामा अपने परिवार के साथ

ननकऊ मामा

अध्याय–9

स्व0 नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव फाउन्डेशन के उद्देश्य एवं नियमावली

स्मृति पत्र

संस्था का नाम	:	स्व0 नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव फाउन्डेशन
संस्था का पूरा पता	:	568/9 कैलाशपुरी, आलमबाग, लखनऊ – 226 005
संस्था का कार्यक्षेत्र	:	सम्पूर्ण भारत

संस्था के उद्देश्य :

1. समाज में महिलाओं के उत्थान, उनके सशक्तीकरण, उद्यमिता विकास को बढ़ावा देने के लिये प्रयास करना।
2. बच्चों की शिक्षा एवं पुष्टाहार इत्यादि के बारे में जानकारी प्रदान करना।
3. शिक्षा के व्यापक प्रचार एवं प्रसार द्वारा समाज के सभी वर्गों को शिक्षा के महत्व के बारे में बताना।
4. भारतीय ग्रामीण एवं शहरी परिप्रेक्ष्य में पीने योग्य जल के प्रबन्ध एवं महत्ता का विवेचन करना।
5. चिकित्सा क्षेत्र में सर्वसुलभ, सर्वग्राह्य, गुणवत्तायुक्त, चिकित्सा सुविधाओं का उपयोग कराने का प्रयास करना।
6. ग्रामीण स्तर के सुधार हेतु, पर्यावरण तथा भूमि विकास कार्यक्रमों को चलाना जिससे समाज को स्वामित्व प्रदान किया जा सके।
7. विभिन्न क्षेत्रों में प्रशिक्षण कार्यक्रमों, गोष्ठियों, सेमिनार इत्यादि का आयोजन करना।
8. समाज के गरीब वर्गों के उत्थान एवं विकास हेतु प्रयास करना।
9. भारत के जनजीवन, लोकाचार और लोक व्यवहार में निहित एकत्व का विभिन्न सन्दर्भों एवं परिप्रेक्ष्यों में विवेचन एवं समर्थन।
10. भारतीय संस्कृति के मूल तत्वों पर आधारित प्राचीन जीवन पद्धति और आज की जीवन पद्धति का समाज शास्त्रीय अध्ययन एवं विश्लेषण।

मृदुल श्रीवास्तव माँ मनोरमा श्रीवास्तव के साथ

श्रीमती मनोरमा श्रीवास्तव एवं श्रीमती प्रभा श्रीवास्तव

स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव,
दामाद मुकेश श्रीवास्तव एवं अन्य

11. भारत की प्राचीन सभ्यता के मूल तत्वों का आज की सापेक्षता में विवेचन।

12. शिक्षा के पत्राचार माध्यम से लोगों की अधिक से अधिक भागीदारी बढ़ाना।

13. मानवाधिकार क्षेत्र में जागरूक भूमिका निभाना।

14. समाज में अपराध कम करने हेतु व्यापक कदम उठाना।

15. पर्यावरण संरक्षण एवं एच0 आई0 वी0 के क्षेत्र मे कार्य करना।

16. (क) शोध

- शोध इकाई की स्थापना करना।
- शोध पत्रिका की निःशुल्क प्रकाशन।
- शोध पूरक सेमिनार और कार्यशालाओं का आयोजन।

(ख) साहित्य

- अनुवाद पद्धति द्वारा लोगों तक ज्ञान पहुँचाना।
- गोष्ठियों का आयोजन।
- शोध पत्रों का निःशुल्क प्रकाशन।
- समान प्रवृत्तियों का विश्लेषण।

(ग) कला

- चित्र प्रदर्शनी का आयोजन।
- गोष्ठियों का आयोजन तथा नवीनतम प्रकार के कला माध्यम से शिक्षा का प्रचार एवं प्रसार।

(घ) प्रकाशन

- विभिन्न विषयों पर पढ़े गये शोध पत्रों का निःशुल्क प्रकाशन।
- शोध संस्थान की वार्षिक पत्रिका का निःशुल्क प्रकाशन।

(ङ) व्याख्यान माला – सम्बन्धित विषय पर व्याख्यान माला का आयोजन।

(ट) दृश्य माध्यम – वीडियो कैसेट तैयार करके बहुत से विषयों पर दृश्य, वाच्य और श्रव्य माध्यम द्वारा विषय का विवेचन, विश्लेषण।

17. इन सभी उपरोक्त उद्देश्यों की पूर्ति हेतु लगन के साथ कार्य करना।

18. संस्था के प्रबन्धकारिणी समिति के पदाधिकारियों एवं सदस्यों के नाम, पते, पद तथा व्यवसाय जिनकी संस्था के इस स्मृति–पत्र तथा नियमों के अनुसार संस्था का कार्यभार सौंपा गया।

पत्नी श्रीमती मनोरमा श्रीवास्तव एवं
बहन डा. विनोद कुमारी श्रीवास्तव

छोटे दामाद प्रभात, अन्य भाईयों एवं रिश्तेदारों के साथ

बहन गीता श्रीवास्तव

क्र0 सं0	नाम/पिता/पति का नाम	पता	पद	व्यवसाय
1	डा0 (श्रीमती) विनोद कुमारी श्रीवास्तव पुत्री स्व0 श्री श्याम बिहारी सिंह	11/191, इन्दिरा नगर लखनऊ	अध्यक्ष	चिकित्सक
2	श्रीमती कविता रश्मि, पत्नी श्री अजय कुमार सिंह	डी–2/394 सेक्टर– डी, एल डी ए कालोनी कानपुर रोड, लखनऊ	उपाध्यक्ष	गृहणी
3	डा0 मृदुल श्रीवास्तव, पुत्र स्व0 श्री एन0 के0 श्रीवास्तव	568/9 कैलाशपुरी, आलमबाग, लखनऊ	सचिव	नौकरी
4	श्रीमती अनीता सिंह श्रीवास्तव, पुत्री श्री सर्वजीत सिहं	58 अ, रानोपाली, अयोध्या, फैजाबाद	कोषाध्यक्ष	समाज सेवा
5	श्री निखिल मौर्य, पुत्र श्री एम0 के0 मौर्य	3, बिहारी पार्क जजेस लेन सरस्वती पुरम, रायबरेली रोड, लखनऊ	सदस्य	बिजनेस
6	श्री देश दीपक सिंह, पुत्र श्री सन्तराम	568/283, कैलाशपुरी, आलमबाग, लखनऊ	सदस्य	वकील
7	श्री मिथलेश मिश्रा, पुत्र श्री डी0 एन0 मिश्रा	568/139 ख गीतापल्ली आलमबाग, लखनऊ	सदस्य	नौकरी

हम निम्न हस्ताक्षरकर्ता उपरोक्त स्मृति पत्र एवं नियमावली के अनसार सोसाइटी रजिस्ट्रेशन एक्ट 1860 की धारा 21 के अन्तर्गत पंजीकृत कराना चाहते हैं।

सुश्री आद्या श्रीवास्तव

मृदुल श्रीवास्तव मौसी वीना श्रीवास्तव के साथ

श्रीमती मनोरमा श्रीवास्तव

स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

स्व0 नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव फॉउन्डेशन

समाज सेवा तथा शिक्षण कार्य के प्रचार प्रसार एवं संवर्धन हेतु संस्थान

नियमावली

1.	संस्था का नाम	–	स्व0 नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव फॉउन्डेशन
2.	संस्था का पंजीकृत पता	–	568/9, कैलाशपुरी, आलमबाग, लखनऊ।
3.	संस्था का कार्यक्षेत्र	–	सम्पूर्ण भारतवर्ष
4.	संस्था के उद्देश्य	–	स्मृति पत्र
5.	**सदस्यता**		–

(1) **संस्थापक सदस्य** – संस्था को गठित करने में जिन व्यक्तियों ने सहयोग किया है तथा जिनके नाम स्मृति पत्र में अंकित है वे संस्था के संस्थापक सदस्य होंगे। इनके लिये सदस्यता शुल्क रु0 2001/– होगा। इनकी सदस्यता आजीवन होगी।

(2) **आजीवन सदस्य** – जो व्यक्ति इस संस्था के उद्देश्य में आस्था एवं विश्वास रखते हों तथा नियमावली के पालन हेतु वचनबद्ध हों, अध्यक्ष/सचिव के नाम प्रार्थना–पत्र देकर सदस्यता हेतु आवेदन देने के प्श्चात अनुमोदन प्राप्त होने पर उसी वर्ग का सदस्य बनाया जा सकेगा जिस वर्ग के लिये अनुमोदन किया गया हो।

(3) **सामान्य सदस्य** – जो व्यक्ति संस्था को रु0 11/– (रुपये ग्यारह मात्र) सलाना देंगे वे संस्था के सामान्य सदस्य होंगे परन्तु प्रतिबन्ध यह होगा कि सचिव का प्रस्ताव और अध्यक्ष का अनुमोदन आवश्यक होगा।

(4) **सम्मानित सदस्य** – शोध, साहित्य, कला, संस्कृति, दर्शन, स्थापत्य इत्यादि के क्षेत्र में विशेष योगदान करने वाले व्यक्तियों को सम्मानित सदस्य के रूप में सचिव के प्रस्ताव पर अध्यक्ष द्वारा नामित किया जा सकेगा। यह सदस्य सदस्यता शुल्क से मुक्त रहेंगे तथा इनको मत देने का अधिकारी नहीं होगा।

(5) **अनुदाता सदस्य** – संस्थान को अनुदान स्वरूप रु0 2,000/– (रुपये दो हजार मात्र) या इससे अधिक धनराशि देने वाला व्यक्ति संस्था का अनुदाता सदस्य अध्यक्ष द्वारा नामित किया जा सकेगा। ऐसे विशिष्ट जन संस्था के आयोजनों में माननीय अतिथि के रूप में आमंत्रित किये जायेंगे परन्तु उनको मत देने का अधिकार नहीं होगा।

श्री अश्विनी कुमार भार्गव अपनी पत्नी के साथ

स्व. श्रीमती सरोजनी श्रीवास्तव
(माता–मुकेश श्रीवास्तव)

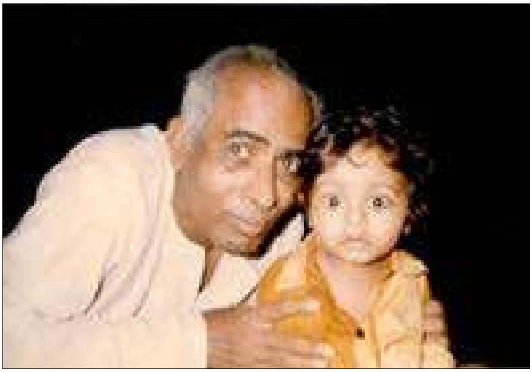

नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव अपने प्रिय पोते
अनिकेत के साथ

(6) **निगमित सदस्य** – समान उद्देश्यों की किसी भी संस्था को अध्यक्ष संस्था का निगमित सदस्य नामित कर सकेगा। ऐसी संस्था को रु0 250/– (रुपये दो सौ पचास मात्र) वार्षिक शुल्क देना होगा। ऐसी संस्था का विधिवत प्रतिनिधि बैठकों में पर्यवेक्षक के रूप में आमंत्रित किया जायेगा, परन्तु उसको मत देने का अधिकार नहीं होगा।

6. **सदस्यता की समाप्ति** – निम्न कारणों से किसी सदस्य की सदस्यता समाप्त हो जायेगी।

- पागल हो जाने पर।
- मृत्यु हो जाने पर।
- संस्था विरोधी कार्य करने पर।
- न्यायालय द्वारा दण्डित होने पर।
- त्यागपत्र देने पर।
- सदस्यता शुल्क न देने पर।

7. **संस्था के अंग**

- साधारण सभा
- प्रबन्धकारिणी समिति

साधारण सभा

गठन – साधारण सभा का गठन मताधिकार वाले सभी प्रकार के सदस्यों को मिलाकर किया जायेगा।

बैठकें – साधारण सभा की सामान्य बैठक वर्ष में एक बार होगी। विशेष परिस्थितियों में आपातकालीन बैठक कभी भी बुलायी जा सकती है।

सूचना अवधि – सामान्य बैठक की सूचना कम से कम 30 दिन पूर्व तथा विशेष आकस्मिक बैठक की सूचना 10 दिन पूर्व दी जायेगी।

गणपूर्ति – साधारण सभा की सामान्य बैठकों में कोरम कुल संख्या के 1/3 सदस्यों की उपस्थिति मान्य होगी।

वार्षिक अधिवेशन की तिथि – साधारण सभा का वार्षिक अधिवेशन वर्ष में एक बार होगा, जिसकी तिथि प्रबन्धकारिणी समिति द्वारा तय की जायेगी।

साधारण सभा के कर्तव्य एवं अधिकार

- प्रबन्धकारिणी समिति का चुनाव कराना।
- संस्था का वार्षिक बजट पास कराना।

स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव एवं स्व. अशोक श्रीवास्तव

स्व. श्रीमती सरोजनी श्रीवास्तव, श्रीमती के.एन. सिन्हा एवं रिचा सिन्हा

श्रीमती किरन श्रीवास्तव, श्रीमती मिथिलेश मिश्रा

- संस्था की वार्षिक रिपोर्ट तैयार कराना।
- संस्था के संविधान में संशोधन करना।
- संस्था के उन्नति एवं विकास में रचनात्मक सहयोग प्रदान करना।

प्रबन्धकारिणी समिति –

गठन – प्रबन्धकारिणी समिति का गठन साधारण सभा द्वारा चुनाव पद्धति से किया जायेगा। प्रबन्धकारिणी समिति में निम्न पदाधिकारी एवं सदस्य होंगे।

- अध्यक्ष – एक
- उपाध्यक्ष – एक
- सचिव/निदेशक – एक
- सदस्य सचिव – एक
- कोषाध्यक्ष – एक
- सचिव (प्रचार एवं प्रकाशन) – एक
- सदस्य – एक

प्रबन्धकारिणी समिति के सदस्यों की कुल संख्या 7 होगी। भविष्य में संख्या बढ़ने की संभावना है।

बैठकें – प्रबन्धकारिणी समिति की सामान्य बैठक वर्ष में 3 बार प्रत्येक चार माह में एक बार होगी। आवश्यकता पड़ने पर विशेष बैठक कभी भी बुलायी जा सकती है।

गणपूर्ति – प्रबन्धकारिणी समिति की बैठकों का कोरम कुल सदस्यों की संख्या के 1/3 सदस्यों की उपस्थिति में मान्य होगा। स्थगित बैठक के लिये पुनः कोरम की आवश्यकता नहीं होगी।

सूचना अवधि – सामान्य बैठकों की सूचना 20 दिना पूर्व तथा विशेष बैठक की सूचना 10 दिन पूर्व दी जायेगी।

रिक्त स्थानों की पूर्ति – प्रबन्धकारिणी समिति में आकस्मिक रूप से हुये रिक्त पद पर नियुक्ति सचिव के प्रस्ताव पर अध्यक्ष द्वारा साधारण सभा के सदस्यों से की जायेगी।

कार्यकाल – प्रथम प्रबनधकारिणी समिति का कार्यकाल 7 वर्ष होगा। तत्पश्चात् प्रबन्धकारिणी समिति का कार्यकाल 3 वर्ष होगा।

अधिकार एवं कर्तव्य – संस्था का समस्त प्रबन्ध प्रबन्धकारिणी समिति द्वारा किया जायेगा।

श्रीमती ममता श्रीवास्तव, श्रीमती सुमन श्रीवास्तव,
रचना, अंकिता एवं श्रीमती मनोरमा श्रीवास्तव

डा. विनोद कुमारी श्रीवास्तव, मृदुल श्रीवास्तव, अनिकेत श्रीवास्तव,
श्रीमती अशोक चन्द्र राय, श्रीमती नमिता सक्सेना

मुकेश श्रीवास्तव, श्रीमती आशा भार्गव,
श्री मनीष श्रीवास्तव एवं स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

पदाधिकारियों के कर्तव्य एवं अधिकार –

1. अध्यक्ष

- अध्यक्ष संस्था का प्रमुख होगा।
- अध्यक्ष संस्था की साधारण सभा एवं प्रबन्धकारिणी समिति की बैठकों की अध्यक्षता करेगा।
- अध्यक्ष संस्था के कार्यक्रमों के प्रभारी कार्यान्वयन के लिये सचिव के परामर्श से उपसमितियों का गठन करेगा। उद्देश्य प्राप्ति एवं सुचारू रूप से कार्य संचालन के लिये उपाध्यक्षों में अध्यक्ष द्वारा नामित कोई एक उपाध्यक्ष किसी एक उप समिति का अध्यक्ष होगा और वह संस्था के अध्यक्ष के मार्गदर्शन में अपनी उपसमिति के लिये निर्धारित संगठन संचालन एवं कार्यपालन करेगा।
- मत विभाजन के अवसर पर समान मत होने पर अपना निर्णायक मत देगा।
- अध्यक्ष देश के विभिन्न प्रदेशों, राज्यों एवं केन्द्रशासित प्रदेशों के लिये सचिव के परामर्श से संस्था के संयोजक मनोनीत करेगा। यह संयोजक अपने अध्यक्ष द्वारा निर्धारित स्वरूप के अनुसार प्रदेशों की समिति गठित करके अध्यक्ष का अनुमोदन प्राप्त करेगा।
- अध्यक्ष शोध, इतिहास, साहित्य, कला, संस्कृति दर्शन इत्यादि के क्षेत्र में सुविख्यात व्यक्तियों को सम्मानित सदस्य के रूप में नामित करेगा।
- अपने पद पर आजीवन कार्य करेगा।
- संस्था के अन्य पदाधिकारियों के कर्तव्य, अधिकार एवं कार्यक्षेत्र का निर्धारण आवश्यकतानुसार सचिव के प्रस्ताव पर करेगा।

2. उपाध्यक्ष

- उपाध्यक्ष अध्यक्ष द्वारा स्वीकृत एवं प्रदत्त अधिकारों का प्रयोग करेंगे।

3. सचिव / निदेशक

- सचिव संस्था का मुख्य अधिशासी अधिकारी होगा। यह साधारण सभा, प्रबन्धकारिणी समिति एवं अध्यक्ष द्वारा निर्धारित संस्था की नीतियों एवं कार्यक्रमों के कार्यान्वयन के लिये पूर्णतया उत्तरदायी होगा।
- वह संस्था की प्रादेशिक एवं अन्य शाखाओं के साथ समन्वित सम्बन्ध सुनिश्चित करेगा और इस सम्बन्ध में वांछित वित्तीय एवं प्रशासनिक अधिकारों का प्रयोग करेगा।

श्री मनीष श्रीवास्तव, श्री विजय विक्रम श्रीवास्तव (तेज),
स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव, मृदुल एवं श्री के. एन. सिन्हा (गन्नी)

श्री अजीत कुमार, श्री मिथिलेश मिश्रा एवं श्री बबलू

स्व. श्री राजबहादुर सिंह, सुश्री कविता रश्मि, मृदुल,
मनीष एवं स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

- संस्था के वार्षिक अधिवेशन में वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत करेगा।
- अध्यक्ष के अनुमोदन से समस्त बैठकों की तारीख तय करेगा, बैठक बुलायेगा, कार्यवाही आदि लिखेगा तथा संस्था के अभिलेखों को अपनी सुरक्षा में रखेगा।
- सदस्य बनने वाले व्यक्तियों के सदस्यता फार्म पर विचार करने के पश्चात् उसे अनुमोदन हेतु प्रबन्ध समिति की स्वीकृति के लिये प्रस्तुत करेगा।
- संस्था विरोधी कार्य करने वाले व्यक्तियों के विरुद्ध निष्कासन की कार्यवाही करेगा तथा अध्यक्ष की आज्ञा से उसके अनुमोदन हेतु प्रबन्ध समिति के सम्मुख रखेगा।
- सरकारी, अर्द्धसरकारी, कार्यालयों, विभागों प्रतिष्ठान आदि से अनुदान हेतु सम्पर्क करेगा।
- सदस्यता शुल्क, दान, अनुदान, ऋण आदि संस्था की ओर से प्राप्त करेगा।
- कर्मचारियों की नियुक्ति, पदोन्नति, निष्कासन अनुशासन तथा अन्य प्रशासनिक अधिकारों का प्रयोग करेगा।
- संस्था की ओर से समस्त दस्तावेजों, बैनामों आदि पर हस्ताक्षर करेगा तथा चल–अचल सम्पत्ति प्राप्त करेगा।
- समिति द्वारा लिये गये निर्णयों का कार्यान्वयन सुनिश्चित करेगा।
- संस्था की ओर से तथा संस्था के विरुद्ध किये गये मुकदमों की पैरवी करेगा। यथावश्यकता वह इस प्रयोजन के लिये किसी सचिव को नामित कर सकेगा।
- अपने पद पर आजीवन कार्य करेगा।

4. सचिव (प्रचार एवं प्रकाशन)

संस्था के उद्देश्यों, कार्यक्रमों एवं उपलब्धियों का विभिन्न प्रचार माध्यमों से प्रचार एवं प्रसार के अतिरिक्त ऐसे अधिकारों का प्रयोग एवं कर्तव्यों का निर्वाहन करेगा जो अध्यक्ष एवं सचिव द्वारा निर्दिष्ट होंगे। संस्था के सम्पूर्ण साहित्य के नियोजन, प्रकाशन, मुद्रण एवं प्रसारण की व्यवस्था करेगा।

श्री मिथिलेश मिश्रा एवं श्री मधुकर विश्वकर्मा

मृदुल श्रीवास्तव, स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव अपने मित्रों एवं रिश्तेदारों के साथ

नमिता, श्री. आर.के. सक्सेना, चाचा स्व. अशोक चन्द्र राय, अनिकेत एवं मृदुल

5. कोषाध्यक्ष

- सचिव/निदेशक के साथ संयुक्त हस्ताक्षर से खाते का संचालन करेगा।
- कोषाध्यक्ष संस्था के कोष एवं हिसाब–किताब के लिये पूरी तरह जिम्मेदार होगा।
- कोषाध्यक्ष संस्था की बैलेन्सशीट तैयार करवायेगा और यथा नियम उसका ऑडिट करवाकर प्रबन्धकारिणी समिति एवं साधारण सभा के समक्ष प्रस्तुत करेगा।
- अध्यक्ष एवं सचिव के मार्गदर्शन में आगामी वर्ष का बजट प्रबन्धकारिणी के अनुमोदन के लिये प्रस्तुत करेगा।

8. **संस्था का कोष** – संस्था का कोष किसी मान्यता प्राप्त बैंक में रखा जायेगा जिसका संचालन सचिव/निदेशक एवं कोषाध्यक्ष के हस्ताक्षर से होगा।

9. **संस्था के नियमों का संशोधन** – संस्था के नियमों, उद्देश्यों में परिवर्तन साधारण सभा की बैठक में कुल सदस्यों के बहुमत द्वारा किया जा सकेगा।

10. **अदालती कार्यवाही का संचालन** – संस्था सम्बन्धी अदालती कार्यवाही का संचालन सचिव/निदेशक अथवा उसके द्वारा नामित व्यक्ति द्वारा किया जायेगा। संस्था से सम्बन्धित वाद लखनऊ में ही दायर किये जा सकेंगे।

11. **संस्था के अभिलेख** – संस्था के निम्न अभिलेखों का रख–रखाव करेगी :

- कार्यवाही रजिस्टर
- एजेण्डा रजिस्टर
- स्टॉफ रजिस्टर
- कैशबुक रजिस्टर
- सदस्यता रजिस्टर

12. **संस्था का विघटन** – यदि किन्हीं अपरिहार्य कारणों से संस्था विघटित हो जाती है तो विघटित सम्पत्ति के निस्तारण की कार्यवाही सोसाइटीज रजिस्ट्रेशन एक्ट की धारा–13 व 14 के अन्तर्गत की जायेगी।

स्थान – लखनऊ

दिनाँक

(सत्य प्रतिलिपि)

डॉ. मृदुल श्रीवास्तव श्री एम.एस. रामानुजम के साथ

प्रो. ए.एन. सिंह एवं डॉ. मृदुल श्रीवास्तव

बुन्देलखण्ड विज्ञान एवं प्रोद्योगिकी संस्थान, के उद्घाटन के अवसर पर पुत्री नमिता मंत्री महोदय का अभिनन्दन करते हुए

N.K. Srivastava

Joint Secretary (Retd.)
Government of Uttar Pradesh
Revenue Department &
[illegible] Tax Coordination

Ph. [illegible]

[illegible], [illegible], [illegible]
Lucknow [illegible]

Dt. July 31, 2006

Dear Mridul,

Hope you are doing sincerely well. We had a telephonic talks few days ago. I was busy with my my income tax work. Hence a little delay in despatch of this letter. But it was good also, as we received another letter from a US University. Your [illegible] is enclosed.

I had a talk with Avinash yesterday and had requested him to take early suitable action for the renewal of the registration of the NGO. Let us see when he finds it convenient to do the needful.

At home everything is fine. Your Mother is well. Aniket is busy in his studies and games. Nothing new. Everybody observes his/her routine in his/her style. Take care for yourself.

With love.

Your father
[illegible]
(N.K. Srivastava)

Dr. Mridul Srivastava
Lecturer,
National Law Institute University
Bhopal.

स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

स्व. श्रीमती मनोरमा श्रीवास्तव ज्येष्ठ पुत्री ममता के विवाह में अन्य पारिवारिक सदस्यों के साथ

स्व. श्रीमती मनोरमा श्रीवास्तव ज्येष्ठ पुत्री ममता के विवाह में अन्य पारिवारिक सदस्यों के साथ

गीता बुआ की सुपुत्री बेबी की शादी में स्व. मनोरमा श्रीवास्तव

संख्या- 98/1/99-1[illegible]

प्रेषक,

डा० नरेन्द्र कुमार [illegible],
मुख्य सचिव,
उत्तर प्रदेश शासन।

सेवा में,

[illegible]
[illegible] जिलाधिकारी,
उत्तर प्रदेश।

[illegible] अनुभाग   लखनऊ: दिनांक 30 [illegible], 199[illegible]

विषय :- [illegible] के विभिन्न [illegible] में [illegible] की [illegible] के [illegible] का [illegible] लिखित रूप में अभिलेख [illegible] उपलब्ध कराया जाना [illegible]।

महोदय,

उपर्युक्त विषय में मुझे यह कहने का निर्देश हुआ है कि [illegible] के विभिन्न [illegible] में [illegible] की [illegible] का [illegible] अभिलेख [illegible] उपलब्ध हो [illegible] है। [illegible] के [illegible] में [illegible] Suspense Account में [illegible] है। अतः [illegible] है कि [illegible] में [illegible] की [illegible] अभिलेख को [illegible] जाये। [illegible] अभिलेख को [illegible] का विवरण [illegible] में [illegible] है, तो [illegible] की [illegible] करने की व्यवस्था करें।

संलग्नक :- यथोपरि।

भवदीय,
[illegible]
नरेन्द्र कुमार [illegible]
मुख्य सचिव।

संख्या [illegible] दिनांक यथोपरि

प्रतिलिपि [illegible] अभिलेख, [illegible], [illegible] रोड, बम्बई-400038 को सूचनार्थ प्रेषित।

आज्ञा से,
[illegible]
नरेन्द्र कुमार [illegible]
मुख्य सचिव।

ज्येष्ठ बहु सुमन एवं पुत्री ममता के साथ
स्व. श्रीमती मनोरमा श्रीवास्तव

स्व. श्रीमती मनोरमा श्रीवास्तव, बहन बीना, दामाद मुकेश,
भतीजियों गुड़िया एवं निधि, पुत्री नमिता, भतीजे पप्पू के साथ में

स्व. श्रीमती मनोरमा श्रीवास्तव बहु सुमन के साथ

संख्या- 3176/86-16-प्रा०शि०-1-407/79

प्रेषक,

नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव,
संयुक्त सचिव,
उत्तर प्रदेश शासन ।

सेवा में,

(1) प्रधानाचार्य,
मोतीलाल नेहरू रीजनल इंजीनियरिंग कालेज, इलाहाबाद ।
(2) प्रधानाचार्य,
मदन मोहन मालवीय इंजीनियरिंग कालेज, गोरखपुर ।
(3) प्रधानाचार्य,
राजकीय वास्तुकला महाविद्यालय, लखनऊ ।
(4) प्रधानाचार्य,
राजकीय केन्द्रीय वस्त्र संस्थान, कानपुर ।
(5) प्रधानाचार्य,
बुन्देलखण्ड इंजीनियरिंग कालेज, झाँसी ।
(6) निदेशक,
कमला नेहरू इन्स्टीट्यूट आफ टेक्नालाजी, सुल्तानपुर ।
(7) निदेशक,
एच०बी०टी०आई०, कानपुर ।
(8) निदेशक,
आई०ई०टी०, लखनऊ ।
(9) रजिस्ट्रार,
दयालबाग एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट, दयालबाग आगरा ।
(10) डीन,
पन्त कालेज आफ टेक्नालाजी, पन्त नगर, नैनीताल ।
(11) कुलसचिव,
रुड़की विश्वविद्यालय, रुड़की ।

प्राविधिक शिक्षा अनुभाग-1 — लखनऊ: दिनांक 21 फरवरी, 1987

विषय:- वर्कशाप सुपरिन्टेन्डेन्ट के पद में की गयी सेवा की गणना-रीडर के पद पर व्यक्तिगत प्रोन्नति किये जाने हेतु ।

महोदय,

उपर्युक्त विषयक/आपके/पत्र/संख्या-/1278/दिनांक की ओर आपका ध्यान आकृष्ट करते हुये मुझे यह कहने का निदेश हुआ है कि कृपया निम्न की बिन्दुओं पर सूचना शासन को तुरन्त भिजवाने का कष्ट करें:-

(1) यू०जी०सी० वेतनमान लागू करने की तिथि अर्थात् 1-1-1973 के पूर्व वर्कशाप सुपरिन्टेन्डेन्ट लेक्चरर के किसी पद थे ?
(2) लेक्चरर व वर्कशाप सुपरिन्टेन्डेन्टों के वेतनमान क्या थे ?

भवदीय,

स्व. श्रीमती मनोरमा श्रीवास्तव पुत्र मृदुल,
पुत्री नमिता के साथ

स्व. श्रीमती मनोरमा श्रीवास्तव बहन बीना एवं
भाभी प्रभा के साथ

स्व. श्रीमती मनोरमा श्रीवास्तव एवं
श्रीमती प्रभा श्रीवास्तव (मामी)

संख्या:- 1135/89-18-प्रा०शि०-1-558/82

प्रेषक,

नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव,
अनुसचिव,
उत्तर प्रदेश शासन।

सेवा में,

प्रधानाचार्य,
बुन्देलखण्ड इंजीनियरिंग कालेज,
झाँसी।

प्राविधिक शिक्षा अनुभाग-1 लखनऊ: दिनांक 25 मार्च, 1989

विषय:- वित्तीय वर्ष-1988-89 में आयोजनागत पक्ष हेतु सहायक अनुदान।

महोदय,

उपर्युक्त विषय पर आपके पत्र संख्या- 201/लेखा/आय०/89/109, दिनांक 22 जनवरी, 1989 के संदर्भ में मुझे यह कहने का निदेश हुआ है कि राज्यपाल महोदय ने वर्तमान वित्तीय वर्ष 1988-89 में बुन्देलखण्ड इंजीनियरिंग कालेज, झाँसी को आयोजनागत की निम्नलिखित मदों पर व्यय हेतु रु० 46,66,000 (रुपये छियालिस लाख छियासठ हजार मात्र) के अनुदान की स्वीकृति इस शर्त के साथ प्रदान कर दी है कि इस अनुदान को अन्यत्र किसी भी दूसरे अथवा अस्वीकृत मद पर व्यय नहीं किया जायेगा तथा इससे सम्बन्धित लेखे को भारत के नियंत्रक महालेखापरीक्षक के निरीक्षण एवं परीक्षण के लिये खुला रखा जायेगा। साथ ही इस अनुदान पर वह नियम भी लागू होंगे जो वित्तीय हस्तपुस्तिका खण्ड-5 भाग-1 के पैरा 16 व में दिये गये हैं। इसके अतिरिक्त समय समय पर जारी होने वाले शासनादेशों का भी पालन करना होगा।

मद	पूर्व अनुमोदित आवंटन	स्वीकृति
भवन निर्माण (शासनादेश सं०-5027/88-18-प्रा०शि०-1-558/82, दिनांक 2-12-1988 में स्वीकृति प्रदान।)	215.32 लाख	46,66,000
		योग:- 46,66,000

2- वर्तमान वित्तीय वर्ष 1988-89 में रु० 46,66,000 (रुपये छियालिस लाख छियासठ हजार मात्र) का उक्त व्यय लेखा शीर्षक "2203-तकनीकी शिक्षा-112-इंजीनियरी/तकनीकी महाविद्यालय और संस्थायें-09(1)-बुन्देलखण्ड इंजीनियरिंग कालेज, झाँसी की स्थापना-(14) सहायक अनुदान/अंशदान/राज सहायता के नामे डाला जायेगा।

स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव अपनी बहन स्व. निर्मल एवं भांजी सरिता के साथ

स्व. नरेन्द्र श्रीवास्तव एवं स्व. श्रीमती मनोरमा श्रीवास्तव के कैलाशपुरी निवास स्थान के पास के मन्दिर का परिदृश्य

कैलाशपुरी स्थित दु:ख हरन मन्दिर जिसे स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव ने बनवाया था उसका परिदृश्य

संख्या 7403 पत्रावली संख्या 1-162739 दिनांक 19-10-2010

सोसाइटी – रजिस्ट्रीकरण
का
प्रमाण – पत्र
(अधिनियम संख्या 21, 1860 के अधीन)

संख्या 1880-2010-2011

एतद्द्वारा प्रमाणित किया जाता है कि स्व0 नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

फाउन्डेशन

568 / 9, कैलाशपुरी आलमबाग, लखनऊ।

को आज उत्तर प्रदेश में अपनी प्रवृत्ति के संबंध में यथासंशोधित सोसाइटी रजिस्ट्रेशन अधिनियम , 1860 ई0 के अधीन सम्यक् रूप से रजिस्ट्रीकृत किया गया है।

यह प्रमाण–पत्र 17/10/2015 तक विधिमान्य होगा।

आज दिनांक 18/10/2010 को मेरे हस्ताक्षर से दिया गया।

सोसाइटी के रजिस्ट्रार,
उत्तर प्रदेश ।

स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव, श्री आर.के. सक्सेना के साथ

पोता अनिकेत श्रीवास्तव

प्रांजुल और मृदुल श्रीवास्तव

अध्याय–10

स्व. एन.के. श्रीवास्तव फाउण्डेशन की भविष्य की योजनाएँ वर्ष 2012

- ❖ शिक्षा के क्षेत्र में विकास का प्रयास करना।
- ❖ सामाजिक उत्थान से सम्बन्धित शोध कार्य
- ❖ स्वास्थ्य सम्बन्धी हेल्थ कैम्प लगवाना।

स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव एवं मृदुल श्रीवास्तव

मृदुल श्रीवास्तव एवं स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव, श्रीमती मनोरमा श्रीवास्तव,
नमिता, ममता एवं मृदुल

माता एवं पिता की जीवन यात्रा चित्रों के माध्यम से

स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव एवं स्व. मनोरमा श्रीवास्तव, पुत्री नमिता एवं एवं दामाद प्रभात को आर्शीवाद देतु हुए (वर्ष 2000)

स्व. मनोरमा श्रीवास्तव पुत्री नमिता के विवाहोत्सव में अन्य परिवारजनों के साथ

प्रभा श्रीवास्तव, बिट्टी मौसी, रचना, प्रभात, नमिता, अनमोल, आशा चाची एवं अन्य

स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव पूजा करते हुए

दामाद प्रभात सक्सेना की सगाई के अवसर पर
भाई बहन

श्री विनोद श्रीवास्तव, श्री विजय विक्रम,
स्व. श्री अशोक चन्द्र राय, विन्दा, श्री आर.के. सक्सेना

दामाद रवि एवं श्री आर.के. सक्सेना के साथ
स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

कनिष्ठ पुत्री नमिता के विवाह का अवसर

स्व. अशोक चन्द्र राय (चाचा) एवं श्री आर.के. सक्सेना

स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव, प्रेम मामा, श्री विनोद कुमार श्रीवास्तव, श्री विजय विक्रम श्रीवास्तव, स्व. श्री अशोक चन्द्र राय

स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव, दामाद प्रभात सक्सेना एवं उनकी बहन रचना सक्सेना के साथ

स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव प्रभात की स्व. माँ के चरण स्पर्श करते हुए

प्रभात की सगाई के अवसर पर परिवार के सदस्य

स्व. श्रीमती मनोरमा श्रीवास्तव परिवार के सदस्यों के साथ

स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव, श्री विजय विक्रम के साथ

प्रभात सक्सेना के बड़े भाई, प्रभात, मुकेश, मृदुल,
अनमोल, प्रांजुल एवं प्रतीक

नमिता की सगाई के अवसर पर परिवारजन

बिट्टी मौसी, स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव एवं
प्रभात सक्सेना

प्रांजुल, प्रतीक एवं मृदुल, प्रभात को उठाये हुए

नमिता की सगाई के अवसर पर अन्य परिवारजन

स्व. मनोरमा श्रीवास्तव नमिता की सगाई के अवसर पर
अन्य परिवारजनों के साथ

स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव एवं स्व. मनोरमा श्रीवास्तव
पुत्री नमिता एवं दामाद प्रभात को आर्शीवाद देते हुए

नमिता की सगाई के अवसर पर अन्य परिवारजन

नमिता की सगाई के अवसर पर अन्य परिवारजन

श्री आर के सक्सेना, श्री विनोद कुमार श्रीवास्तव एवं स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

स्व. मनोरमा श्रीवास्तव पुत्री नमिता की सगाई के अवसर पर

नातिन अक्षिता सक्सेना

स्व. मनोरमा श्रीवास्तव नमिता की सगाई के अवसर
पर अन्य परिवारजनों के साथ

प्रभात सक्सेना, अनमोल श्रीवास्तव, नमिता सक्सेना
एवं अक्षिता सक्सेना

प्रभात सक्सेना एवं नमिता सक्सेना पुत्री अक्षिता के साथ

श्रीमती वीना श्रीवास्तव, प्रभात सक्सेना, श्री विनोद कुमार श्रीवास्तव नमिता सक्सेना एवं अक्षिता सक्सेना

नातिन अक्षिता सक्सेना

नातिन अक्षिता सक्सेना

श्री विनोद कुमार श्रीवास्तव, स्व. श्री सूरज प्रसाद
श्रीवास्तव एवं स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

श्रीमती वीना श्रीवास्तव, श्रीमती सुचित्रा श्रीवास्तव एवं
स्व. मनोरमा श्रीवास्तव

ज्येष्ठ पुत्री ममता के विवाहोत्सव में अन्य परिवारजनों
के साथ स्व. मनोरमा श्रीवास्तव

स्व. मनोरमा श्रीवास्तव एवं श्रीमती प्रभा श्रीवास्तव

मुकेश श्रीवास्तव एवं ममता श्रीवास्तव

सुमन श्रीवास्तव एवं मनीष श्रीवास्तव

श्री विनीत श्रीवास्तव के साथ निधि श्रीवास्तव,
सुजाता श्रीवास्तव एवं ममता श्रीवास्तव

मनीष श्रीवास्तव के विवाहोत्सव का परिदृश्य

स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव, श्री विनोद कुमार श्रीवास्तव
एवं श्री पुनीत श्रीवास्तव

स्व. मनोरमा श्रीवास्तव, ममता एवं
श्रीमती प्रभा श्रीवास्तव

पीयुष, प्रांजुल, अनमोल, विजय, निधि, मुकेश, ममता,
रितु, प्रतीक एवं मृदुल

ममता श्रीवास्तव के विवाहोत्सव के समय परिवारजन

ममता के विवाह के अवसर पर परिवारजन

प्रांजुल, ममता, श्रीमती निवेदिता श्रीवास्तव एवं पप्पू दादा

श्रीमती प्रभा श्रीवास्तव, श्रीमती सुचित्रा श्रीवास्तव एवं
स्व. श्रीमती मनोरमा श्रीवास्तव

स्व. मदन गोपाल श्रीवास्तव अन्य के साथ

स्व. मदन गोपाल श्रीवास्तव (नाना) एवं स्व. श्रीमती विद्यावती श्रीवास्तव अन्य परिवारजनों के साथ

विवाहोत्सव में परिवारजन एवं स्व. मनोरमा श्रीवास्तव

स्व. मनोरमा श्रीवास्तव अन्य परिवारजनों के साथ

नमिता, प्रांजुल, प्रतीक, श्रीमती सुमन श्रीवास्तव एवं मनीष श्रीवास्तव

नमिता, रितु, सुमन, प्रतीक, अनमोल, प्रांजुल एवं श्री विनोद कुमार श्रीवास्तव

स्व. मदन गोपाल श्रीवास्तव एवं स्व. विद्यावती श्रीवास्तव
अन्य परिवारजनों के साथ

प्रांजुल, मनीष, अनमोल एवं पीयूष श्रीवास्तव

स्व. मदन गोपाल श्रीवास्तव (नाना)
स्व. विद्यावती श्रीवास्तव (नानी)

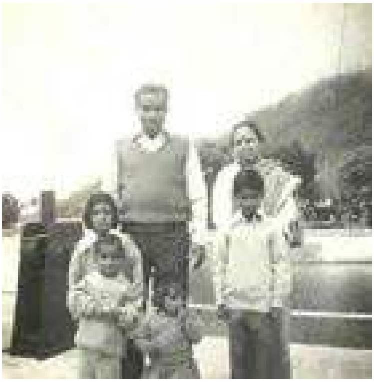

स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव, ममता, मृदुल, नमिता, मनीष एवं स्व. श्रीमती मनोरमा श्रीवास्तव नैनीताल में

स्व. श्रीमती मनोरमा श्रीवास्तव (यह फोटो इनकी शादी हेतु भेजी गई थी)

स्व. सूरज प्रसाद श्रीवास्तव एवं श्रीमती सुचित्रा श्रीवास्तव

श्रीमती सुचित्रा श्रीवास्तव

स्व. श्रीमती मनोरमा श्रीवास्तव

श्रीमती प्रभा श्रीवास्तव (मामी), श्रीमती सुचित्रा श्रीवास्तव (मौसी)
स्व. श्रीमती मनोरमा श्रीवास्तव (माँ)

ममता, डा. श्रीमती विनोद श्रीवास्तव (बुआ),
स्व. मनोरमा श्रीवास्तव, नमिता एवं भाव्या

अक्षिता, ममता, भाव्या, डा. श्रीमती विनोद श्रीवास्तव (बुआ),
स्व. मनोरमा श्रीवास्तव

अनिकेत श्रीवास्तव

श्रीमती नमिता सक्सेना, श्रीमती सुमन श्रीवास्तव एवं आयुष

श्रीमती नमिता सक्सेना एवं अक्षिता सक्सेना

मनीष, अनिकेत, अक्षिता, आयुष एवं अंकिता

अनिकेत एवं श्रीमती नमिता सक्सेना

श्रीमती सुमन श्रीवास्तव एवं श्रीमती नमिता सक्सेना,
अंकिता एवं अक्षिता

भाव्या, स्व. श्रीमती मनोरमा श्रीवास्तव एवं अक्षिता

अनिकेत एवं स्व. श्रीमती मनोरमा श्रीवास्तव

नमिता, मृदुल एवं दावा लामा

मृदुल श्रीवास्तव एवं स्व. श्रीमती मनोरमा श्रीवास्तव

स्व. मदन गोपाल श्रीवास्तव एवं स्व. श्रीमती विद्यावती श्रीवास्तव

स्व. श्रीमती मनोरमा श्रीवास्तव

भाव्या एवं स्व. श्रीमती मनोरमा श्रीवास्तव

मनीष, स्व. श्रीमती मनोरमा श्रीवास्तव
आयुष एवं अंकिता

स्व. श्रीमती मनोरमा श्रीवास्तव एवं श्रीमती कल्पना दीक्षित

नम्रता, कल्पना, सुमन,
ममता, आयुष एवं भाव्या

मुकेश श्रीवास्तव एवं डा. मृदुल श्रीवास्तव

श्री विजय विक्रम, श्री मुकेश, श्री सुरेश श्रीवास्तव एवं
लकी सिन्हा

स्व. श्रीमती मनोरमा श्रीवास्तव की मृत्यु के चौथे दिन
पूजा (10–10–2012)

घर में पूजा के दिन परिवारजन (10–10–2012)

घर में पूजा के दिन परिवारजन (10–10–2012)

स्व. श्रीमती मनोरमा श्रीवास्तव एवं अक्षिता

स्व. श्रीमती मनोरमा श्रीवास्तव

स्व. श्रीमती मनोरमा श्रीवास्तव

स्व. श्रीमती मनोरमा श्रीवास्तव एवं भाव्या

मृदुल एवं स्व. श्रीमती मनोरमा श्रीवास्तव

अक्षिता एवं स्व. श्रीमती मनोरमा श्रीवास्तव

स्व. श्रीमती मनोरमा श्रीवास्तव, कोमल एवं
श्रीमती कल्पना दीक्षित मदर्स डे के दिन (2012)

स्व. श्रीमती मनोरमा श्रीवास्तव, एवं श्रीमती कल्पना दीक्षित
मदर्स डे के दिन केक काटते हुए (2012)

अनिकेत दादी को केक खिलाते हुए

स्व. श्रीमती मनोरमा श्रीवास्तव एवं श्रीमती कल्पना दीक्षित

स्व. श्रीमती मनोरमा श्रीवास्तव

स्व. श्रीमती मनोरमा श्रीवास्तव की अन्तिम फोटो
(19–9–2012)

अजय, कविता एवं आशीष (16–10–2012)

गीता दीदी, मनोज जीजा जी एवं मुकेश जीजा जी (16–10–2012)

मृदुल एवं तेज मामा

अक्षिता, स्व. श्रीमती मनोरमा श्रीवास्तव एवं भाव्या

सोमू मामा एवं मनीष

बिन्दा, अनिकेत, दीपू, चाची एवं मनीष

संगम इलाहाबाद में माँ के अस्थि विसर्जन हेतु पूजा (6–10–2012)

मृदुल

मनीष श्रीवास्तव एवं सुमन श्रीवास्तव

दैनिक जागरण

वीथिका

लखनऊ, 1 अप्रैल 2012

पिता की यादों में पुत्र का भावनात्मक विचरण

हर व्यक्ति किसी को देखकर ही कुछ सीखता है। जरूरी नहीं कि वही नाम हो, जिन्हें दुनिया जानती हो। ऐसे हमारे घर में भी होते हैं माता-पिता, भाई-बहन, रिश्तेदार...। जीवन का एक अनमोल हिस्सा हम इनके साथ बिताते हैं। औरों के लिए साधारण, पर हमारे लिए विलक्षण प्रतिभाओं वाले हमारे ही बीच के लोग हमारी जिंदगी संवारते हैं। डॉ. मृदुल श्रीवास्तव की जिंदगी पर गहरा असर डाला उनके पिता नरेंद्र श्रीवास्तव ने। पिता की यादें, उनकी सिखाई आदि को लोगों के साथ बांटने का प्रयास है डॉ. मृदुल श्रीवास्तव की पुस्तक 'संस्मरण अतीत के पन्नों से'।

किताब पुत्र द्वारा पिता को दी जाने वाली श्रद्धांजलि है। अतीत के गलियारों में विचरते हुए मृदुल ने पिता के जीवन पर व्यापक प्रकाश डाला है। अपने जीवन में उनकी भूमिका और उनकी सिखाएं...। पिता के जीवन संघर्ष की एक लंबी दास्तान है और निश्चित रूप से स्व. नरेंद्र श्रीवास्तव का उनसे जूझने और पारिवारिक दायित्वों का बड़ी खूबसूरती से निर्वाह करना निश्चित रूप से किसी को भी जीवन में लड़ने के लिए प्रेरित कर सकता है। किताब की सबसे खास बात उसका वर्णन है। यह एक पुत्र का अपने पिता के लिए वर्णन है, पर यह कहानी हर परिवार की हो सकती है। शुरुआत स्व. श्रीवास्तव के अंतिम वाक्यों से होती है, जिसमें वह कहते हैं कि आत्मसम्मान, स्वतंत्रता और कर्तव्यनिष्ठता के साथ जीना उनका स्वभाव बन चुका है। जहां आदर नहीं होता, उसको त्याग सकते हैं चाहे वह कितना भी निकटतम क्यों न हो। यूं तो लेखक के लिए बेहद अपनी है, पर इसका सरोकार हर पुत्र के लिए है। लेखक भी कहते हैं- 'हमने हमेशा उनसे उम्मीदें ही की और कभी उनकी मजबूरियों को नहीं समझा।' यह बात हर पुत्र को लगती है, जब वह पिता की अवस्था या उनको समझने वाली अवस्था में पहुंच जाता है। यादों की इस पोथी में भावनाओं का बड़ा ही खूबसूरत प्रयोग है।

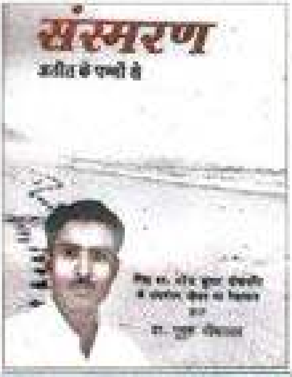

पुस्तक का नाम : संस्मरण अतीत के पन्नों से

लेखक : डॉ. मृदुल श्रीवास्तव

विधा : संस्मरण

प्रकाशक : स्व. नरेंद्र कुमार श्रीवास्तव फाउंडेशन

स्व. श्रीमती मनोरमा श्रीवास्तव

army printing press
www.armyprintingpress.com
Lucknow (0522) 2481164